डाक पंजीयन संख्या/643/2016-2018/2016
RNI-MPHIN/2015/62199

नई सोच, नई पहल

पुष्पांजली टुडे

राष्ट्रीय मासिक पत्रिका

वर्ष : 08 अंक : 03 मार्च 2022 मूल्य: ₹ 30 पृष्ठ : 44

यूपी में फिर भाजपा राजयोगी

रूस है कि मानता नहीं...

पंजीयन क्र. 22550/18

पुष्पांजली

जनकल्याण फाउंडेशन

नीति आयोग, एम.एस.एम.ई (उद्योग आधार) 12A& 80G

होली

की हार्दिक शुभकामनाएं

समाजसेवा के क्षेत्र में समर्पण भाव से कार्य कर रही पुष्पांजली जनकल्याण फाउंडेशन

(आप भी जुड़े हमारे साथ)

94256-65944

जनसेवा ही ईश्वर सेवा है

कार्यालयः जी. एस. प्लाजा, गोले का मंदिर ग्वालियर मध्य प्रदेश हेल्पलाईनः 0751-4050784, 8269307478
Email-pushpanjalijkfoundation@gmail.com

इस जीत के बड़े मायने.....

बीजेपी ने यूपी, उत्तराखंड, गोवा और मणिपुर के विधानसभा चुनाव में जीत से बीजेपी ने कई नए रिकॉर्ड बनाए हैं, जबकि आम आदमी पार्टी ने नया इतिहास रच दिया है। यूपी में साढ़े तीन दशक बाद किसी पार्टी की सरकार रिपीट हुई है। आजादी के बाद ये पहली बार होगा कि अपनी पार्टी को सत्ता में वापसी कराने वाले योगी आदित्यनाथ लगातार दूसरी बार सीएम बनेंगे। वहीं आम आदमी पार्टी ऐसी पहली क्षेत्रीय पार्टी बन गई है, जो एक राज्य से आगे बढ़कर दूसरे राज्य यानी दिल्ली से आगे बढ़कर पंजाब में सरकार बनाएगी। वहीं केंद्र की सियासत में भी इस चुनाव के नतीजों का असर दिखेगा।

खुद भाजपा के उम्मीदवार यह स्वीकार करते हैं कि 2014 के बाद पार्टी की चुनावी राजनीति में बड़ा बदलाव आया है। इसी साल गुजरात में तीन बार मुख्यमंत्री रहने के बाद मोदी ने अपने सिपहसालार अमित शाह के साथ अहमदाबाद से दिल्ली का रुख किया था। आरएसएस में सधे और मंझे मोदी व शाह की जोड़ी ने पार्टी को नए तेवर और तौर-तरीके सिखाए। उन्होंने परंपरागत मीडिया को दरकिनार किया, टेक्नोलॉजी का रुख किया और स्मार्टफोन के जरिए लोगों से सीधे जुड़े। वहीं आम कार्यकर्ता से भी सीधा संवाद स्थापित करना शुरू किया। अब जबकि भाजपा के शब्दकोश में इलेक्शन विनिंग मशीन शब्द जुड़ चुका है, पार्टी नेता भी मानते हैं कि यह मोदी और शाह की ही देन है। इस जोड़ी ने तय किया कि पार्टी और चुनाव से संबंधित सभी प्रक्रिया को कड़ाई के साथ पूरा किया जाए। एक वरिष्ठ नेता ने बताया कि शाह का पंचायत से पार्लियामेंट के फॉर्मूले से अब सभी परिचित हो चुके हैं। इसका मतलब है कि सभी चुनाव जीत की मंशा से लड़े जाने चाहिए। वह कहते हैं कि जहां तक राज्य के चुनावों की बात है तो अमित के मुताबिक इसे सिर्फ उसी राज्य से जोड़कर नहीं देखना चाहिए, बल्कि क्षेत्र और देश के चुनाव पर पड़ने वाले इसके असर के साथ देखना चाहिए। हालांकि भाजपा के आलोचक इसे एकतरफा और तानाशाही ढंग से पार्टी को चलाने के रूप में देखते हैं। लेकिन असल में यह एक जहाज को पूरी तरह से कमांड में लेकर चलना है। यही वजह है कि अमित शाह के पार्टी अध्यक्ष रहते बूथ और गांव के स्तर पर जिस तरह से मैनेजमेंट किया जा रहा है, वह दूसरी पार्टियों के लिए मिसाल बन चुका है। इसका नतीजा है कि आज दूसरे दल भी जमीनी स्तर पर अपने दलों के स्ट्रक्चर में बदलाव करने की तरफ देख रहे हैं।

भाजपा ने 2019 के आम चुनाव में बंपर जीत हासिल की थी, लेकिन अगले ही साल कोरोना ने दस्तक दी और फिर किसान आंदोलन की शुरुआत हो गई। इसके अलावा विपक्ष की ओर से देश में महंगाई और बेरोजगारी को भी बड़ा मुद्दा बनाया गया था। एक तरफ पश्चिम यूपी में किसान आंदोलन को मुद्दा बताया जा रहा था तो वहीं उत्तराखंड में तीन मुख्यमंत्री बनाए जाने की भी चर्चा थी। लेकिन ये सभी मुद्दे नहीं चल पाए और अंत में रिजल्ट आया तो 5 राज्यों में से 4 में भाजपा जीत की ओर बढ़ चली है। खासतौर पर उत्तर प्रदेश की जीत अहम है, जहां 35 सालों बाद कोई पार्टी सत्ता में वापसी कर रही है। उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड समेत सभी राज्यों में भाजपा की ओर से मुफ्त राशन और मकान दिए जाने की बात कही जा रही थी। पीएम आवास योजना, राशन स्कीम और उज्वला जैसी तमाम योजनाओं का भाजपा ने जमकर प्रचार किया था। सीएम योगी आदित्यनाथ तो लगभग हर सभा में बताते थे कि राज्य में 15 करोड़ लोगों को मुफ्त राशन दिया जा रहा है। लेकिन यह स्कीम केंद्र सरकार की ही रही है। ऐसे में माना जा रहा है कि केंद्र सरकार की कल्याणकारी योजनाओं ने काम किया है और उसका असर नतीजे के तौर पर दिख रहा है।

इस साल के आखिर में हिमाचल प्रदेश की 68 और गुजरात की 182 सीटों पर चुनाव होंगे। यूपी, उत्तराखंड, गोवा और मणिपुर विधानसभा चुनाव में जीत से बीजेपी को इन राज्यों में आक्रामक प्रचार का मौका मिलेगा। 2023 में कर्नाटक की 225, राजस्थान की 200, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, मेघालय, त्रिपुरा, नगालैंड और तेलंगाना में चुनाव होंगे, जिसका सीधा लाभ भाजपा को मिलने की उम्मीद जताई जा रही है। बीजेपी के रणनीतिकारों को पता है कि लोगों में तमाम मुद्दों पर नाराजगी है, लेकिन उनके पास मजबूत विकल्प न होने से बीजेपी के लिए राह आसान है।

भरत सिंह चौहान
संपादक

> **इस साल के आखिर में हिमाचल प्रदेश की 68 और गुजरात की 182 सीटों पर चुनाव होंगे। यूपी, उत्तराखंड, गोवा और मणिपुर विधानसभा चुनाव में जीत से बीजेपी को इन राज्यों में आक्रामक प्रचार का मौका मिलेगा। 2023 में कर्नाटक की 225, राजस्थान की 200, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, मेघालय, त्रिपुरा, नगालैंड और तेलंगाना में चुनाव होंगे, जिसका सीधा लाभ भाजपा को मिलने की उम्मीद जताई जा रही है। बीजेपी के रणनीतिकारों को पता है कि लोगों में तमाम मुद्दों पर नाराजगी है, लेकिन उनके पास मजबूत विकल्प न होने से बीजेपी के लिए राह आसान है।**

पुष्पांजली टुडे

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका

वर्ष 08, अंक 03, मार्च 2022

मूल्य 30 रु, पृष्ठ 44

संरक्षक	**बहादुर सिंह चौहान**
संपादक	**भरत सिंह चौहान**
प्रबंध संपादक	शैलेश सिंह कुशवाह
उप प्रबंध संपादक	राजानल शर्मा
उपसंपादक	अर्पित गुप्ता
	पुष्पेन्द्र तोमर (मप्र)
	संदीप प्रधान (मप्र)
	प्रदीप नागेन्द्र सिकरवार
	विपिन तोमर
कानूनी सलाहकार	एड. आर. के. जोशी
एडिटिंग	इमरान गौरी
राष्ट्रीय मीडिया प्रभारी	आर एस रजक

रश्मि चौहान, न्यूज ऐंकर

ब्यूरो प्रमुख

पंकज त्रिपाठी	**मध्य प्रदेश**
अश्विनी अवस्थी	**छतीसगढ़**
नरेन्द्र शर्मा	**हरियाणा**
केशव प्रसाद शर्मा	**चंबल संभाग**
ए. के. झा	**बिहार**
अमित कुमार	**जम्मू-कश्मीर (यूटी)**
अमन राय	**बर्दवान पश्चिम बंगाल**
नारायण लाल	**बेंगलुरु**
दीपक रलहन	**पंजाब**
नैनाराम सिरवी	**पाली, राजस्थान**
अनिल कुशवाह	शिवपुरी
रीतेश कटरे	बालाघाट
सुरजीत राजावत	ग्वालियर
नीतेश शर्मा	ग्वालियर
विनोद पाठक	श्योपुर
प्रेमकिशोर शर्मा	आगरा मंडल
छोटे सिंह भदौरिया	मालनपुर
सोनू कुमार माथुर	एटा, (उत्तर प्रदेश)
प्रवेन्द्र सिंह	आगरा (उत्तर प्रदेश)
हरिनिवास दुबे	मथुरा (उत्तर प्रदेश)
रूपसिंह	इटावा, (उत्तर प्रदेश)
किरण राठौर	औरैया, (उत्तर प्रदेश)
मोहन मांझी	गोहद
अमित शर्मा	ग्वालियर
गौरीशंकर कुशवाह	पन्ना

कार्यालय

जी. एस. प्लाजा, गोले का मंदिर ग्वालियर मध्य प्रदेश

हेल्पलाईनः 0751-4050784, 8269307478

www.pushpanjalitoday.com, Email-pushpanjalitoday@gmail.com

पुष्पांजली टुडे टीम

सादिक मिर्ज़ा	ऑल इंडिया रिर्पोटर
संतोश सिंह भदौरिया	मध्य प्रदेश
गौरव शर्मा	चम्बल संभाग
महेन्द्र शर्मा	चम्बल संभाग
सुनील सिंह तोमर	अम्बाह
अरविंद जैन	गोरमी
हरिओम परिहार	खनियाधाना
हरिओम चतुर्वेदी	ग्वालियर संभाग
अरिमर्दन सिंह भदौरिया	भिण्ड, क्राइम रिर्पोटर
शिवकांत ओझा	रौन
आदित्य सिकरवार	पोरसा
वासुदेव मिश्रा	ग्वालियर
अमित पाठक	ललितपुर उप्र
चेतना कारले	खरगोन
मुन्ना खान	खरगोन
उमाकांत शर्मा	भिण्ड
विवेक पाण्डेय	भिण्ड
बृजपाल सिंह गुर्जर	मेहगांव
अजय खंगार	टीकमगढ़
भरत राजपूत	अहमदाबाद

इस अंक में

रूस यूक्रेन.... 08

शहीद दिवस 18

नारी शक्ति.... 14

कश्मीर फाइल्स.... 10

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक भरत सिंह चौहान। कंचन प्रिंटिंग प्रेस निम्बालकर का बाड़ा, तेजी की बजरिया नियर पी.एंड.एन. बैंक नया बाजार लश्कर ग्वालियर म.प्र. से मुद्रित तथा दीपू इलेक्ट्रोनिक्स हनुमान मंदिर के पास, गोवर्धन कॉलोनी भिण्ड रोड, गोला का मंदिर जिला ग्वालियर म.प्र. से प्रकाशित। संपादक भरत सिंह चौहान। (समाचारों के चयन के लिए पीआरबी एक्ट के तहत जिम्मेदार) दूरभाष 8269307478

यूपी, उत्तराखंड,गोवा, और मणिपुर में भी भगवा परचम, पंजाब में आप की झाड़ू से सब साफ

मोदी लहर बरकरार

सोशल इंजीनियरिंग से लेकर मुफ्त बिजली और पेंशन...वादों पर भारी पड़ी योगी-मोदी की जोड़ी

यूपी, उत्तराखंड, गोवा और मणिपुर के विधानसभा चुनाव में जीत से बीजेपी ने कई नए रिकॉर्ड बनाए हैं, जबकि आम आदमी पार्टी ने नया इतिहास रच दिया है। यूपी में साढ़े तीन दशक बाद किसी पार्टी की सरकार रिपीट हुई है। आजादी के बाद ये पहली बार होगा कि अपनी पार्टी को सत्ता में वापसी कराने वाले योगी आदित्यनाथ लगातार दूसरी बार सीएम बनेंगे। वहीं आम आदमी पार्टी ऐसी पहली क्षेत्रीय पार्टी बन गई है, जो एक राज्य से आगे बढ़कर दूसरे राज्य यानी दिल्ली से आगे बढ़कर पंजाब में सरकार बनाई। वहीं केंद्र की सियासत में भी इस चुनाव के नतीजों का असर दिखेगा। विधानसभा चुनाव की अधिसूचना के पहले से ही कई मुद्दों पर प्रदेश की भाजपा सरकार को घेरने की विपक्ष की चालें धरी की धरी रह गईं। जनता ने केंद्र व प्रदेश सरकार की योजनाएं, कानून-व्यवस्था के साथ पीएम मोदी और सीएम योगी की बातों पर भरोसा जताने का काम किया है। भाजपा पर जताए गए इस भरोसे में मुफ्त बिजली, पुरानी पेंशन बहाली, जातीय जनगणना, मुफ्त शिक्षा जैसी अहम घोषणाएं भी विपक्ष के काम नहीं आईं।

भारत के पांच राज्यों में हुए विधानसभा चुनावों के आये नतीजों के सियासी मायने स्पष्ट हैं। कुछेक अर्थों में ये भारतीय जनता पार्टी यानी बीजेपी और आम आदमी पार्टी यानी आप के लिए बेहद खास हैं। क्योंकि बीजेपी जहाँ चार राज्यों में अपनी सरकार बचाने में सफल रही है। वहीं दिल्ली प्रदेश में सत्तारूढ़ आप ने दिल्ली के बाद पंजाब जैसे बड़े राज्य को भी कांग्रेस से छीनकर अपने पास कर लिया है, वो भी दो तिहाई स्पष्ट बहुमत से। उधर, उत्तरप्रदेश, उत्तराखंड, गोवा और मणिपुर में बीजेपी को स्पष्ट बहुमत प्राप्त हो गया है। वहीं, मणिपुर में बिहार में सत्तारूढ़ जनता दल यू ने भी अच्छा प्रदर्शन किया है।

पांच राज्यों के चुनावी नतीजे में कई संदेश छिपे हैं। इनमें यूपी, उत्तराखंड, गोवा और मणिपुर में बीजेपी सत्ता में वापसी की है, जबकि पंजाब में आम आदमी पार्टी (आप) ने ऐतिहासिक जीत दर्ज की है। इन नतीजों का पहला संदेश तो यही है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की लोकप्रियता और बीजेपी की चुनावी मशीनरी

का कोई मुकाबला नहीं है। दूसरा, 2014 लोकसभा चुनाव से मोदी के नेतृत्व में देश की राजनीति में बदलाव का जो सिलसिला शुरू हुआ, वह अभी तक जारी है। बीजेपी हिंदी पट्टी की पार्टी नहीं रही। वह मणिपुर से लेकर गोवा तक में अपना प्रभुत्व बार-बार

स्थापित कर रही है। तीसरा, इस जीत में शीर्ष स्तर पर दमदार नेतृत्व के साथ केंद्र, राज्य स्तर पर कल्याणकारी योजनाओं, विकास के दावे, हिंदुत्व और ध्रुवीकरण बीजेपी के औजार साबित हुए हैं। चौथा, बीजेपी की वैचारिकी के सामने विपक्ष एक मजबूत आइडिया नहीं रख पाया है। यानी बीजेपी जिस तरह से देश की राजनीति बदल रही है, उसका विपक्ष के पास कोई जवाब नहीं है। पांचवां, पार्टी के पास व्यापक सामाजिक समर्थन और जनाधार है। खासतौर पर महिलाओं और पिछड़ी जातियों से उसे व्यापक समर्थन मिल रहा है। वह सिर्फ अगड़ी जातियों या ब्राह्मण-बनिया की पार्टी नहीं है। छठा, ममता बनर्जी, के चंद्रशेखर राव, एम के स्टालिन और कांग्रेस 2024 लोकसभा चुनाव से पहले विपक्षी दलों की जिस गोलबंदी के अभियान में लगे थे, अब वह कमजोर पड़ सकता है। सातवां, यूपी में बहुमत के साथ सत्ता में वापसी से योगी आदित्यनाथ का कद पार्टी में बढ़ेगा। यह बात इसलिए दिलचस्प है क्योंकि चुनाव से कुछ समय पहले उन्हें मुख्यमंत्री पद से हटाए जाने की चर्चा ने काफी जोर पकड़ा था। एक वर्ग उन्हें पहले से राष्ट्रीय राजनीति में मोदी का उत्तराधिकारी मानता आया है। इस जीत के बाद यह बात भी जोर पकड़ेगी। आठवां, आम आदमी पार्टी के दिल्ली में गवर्नेंस मॉडल को पंजाब के लोगों ने मंजूर किया है और पार्टी को उसे राज्य में लागू करने का मौका दिया है।

पांच राज्यों के नतीजे यह भी बताते हैं कि बीजेपी के चुनावी आइडिया के बरक्स कम से कम पंजाब में लोगों ने आप के आइडिया को मंजूर किया, जिसमें शिक्षा, स्वास्थ्य, बिजली और पानी जैसी बुनियादी चीजें समाज के हर वर्ग तक पहुंचाने पर जोर है। इससे राष्ट्रीय राजनीति में आप का कद बढ़ेगा और वह गुजरात और हिमाचल प्रदेश में होने वाले आगामी चुनावों में भी अधिक ताकत के साथ उतरेगी। नौवां, लोग बार-बार कांग्रेस को नकार रहे हैं। क्या वाकई गांधी परिवार को अब पार्टी नेतृत्व छोड़ देना चाहिए? आने वाले दिनों में यह बात भी फिर से जोर पकड़ सकती है। यह भी लगता है कि कांग्रेस और अखिलेश यादव जैसे नेता अपनी पार्टी की पुरानी छवि से पीछा नहीं छुड़ा पा रहे। आखिरी बड़ा संदेश इन नतीजों का यह है कि 2024 लोकसभा चुनाव में फिलहाल बीजेपी का पलड़ा भारी लग रहा है। यानी मोदी तीसरी बार देश के प्रधानमंत्री बन सकते हैं।

यूपी विधानसभा चुनाव के मद्देनजर पिछले छह महीने से भाजपा की पूरी मशीनरी चुनावों में जुटी रही। पीएम नरेंद्र मोदी समेत अमित शाह, जेपी नड्डा, राजनाथ सिंह समेत पार्टी के सभी प्रमुख नेताओं को मैदान में उतारा गया। भाजपा की जन विश्वास यात्रा ने पूरे प्रदेश में भाजपा के पक्ष में माहौल बनाया। पीएम मोदी और योगी सरकार ने राजनीति में परिवारवाद और गुंडागर्दी को मुख्य मुद्दा बनाया गया। सपा ने ऐसे में जिन दागी चेहरों को टिकट दिए, उन्होंने भी कानून-व्यवस्था के मुद्दे पर बीजेपी का साथ दिया। यूपी में एआईएमआईएम, जदयू, पीस पार्टी, वीआईपी व अन्य पार्टियों को भी निराशा हाथ लगी है, जबकि सपा की सहयोगी रालोद ने अपने प्रदर्शन में सपा की तरह ही अपेक्षित सुधार किया है, जिससे उसकी राजनीतिक पूछ निकट भविष्य में बढ़ेगी। वहीं, इन चुनावों ने यूपी की प्रमुख विपक्षी पार्टी समाजवादी पार्टी यानी सपा और यूपी में कभी सत्तारूढ़ रही बहुजन समाज पार्टी यानी बीएसपी और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस समेत विभिन्न छोटे-मोटे दलों को भी कुछ सीख देने की कोशिश की है, यदि इन पार्टियों का नेतृत्व इसे समझने की कोशिश करें तो। दो टूक कहा जाए तो इन पार्टियों को अपनी घिसी पिटी सियासी रणनीति में आमूलचूल बदलाव लाना होगा, अन्यथा बीजेपी से बची राजनैतिक जगह को आप भर देगी और गैर भाजपा विपक्ष दिल्ली-पंजाब की तरह हाथ मलता रह जायेगा।

देखा जाए तो आम चुनाव 2024 के पहले यूपी समेत पांच विधानसभा चुनाव 2022 को सेमीफाइनल करार देने वाले लोगों के लिए भी इसमें बहुत बड़ा सन्देश छिपा हुआ है। वाकई उत्तरप्रदेश और पंजाब जैसे दो बड़े राज्यों और उत्तराखंड, गोवा और मणिपुर जैसे 3 छोटे राज्यों से आये चुनाव परिणामों ने एक बार फिर से यह बात स्थापित करने की कोशिश की है कि भारतीय राजनीति की परंपरागत चुनावी धारा बदल रही है और उसकी जगह एक नई आधुनिक धारा ले रही है, जो जातिवाद, क्षेत्रवाद, सम्प्रदायवाद, परिवारवाद, पूंजीवाद, बाहुबल, तुष्टिकरण जैसे पुराने राजनैतिक दांवपेंच से इतर सुशासन, विकासवाद, हिंदुत्व और संतुलित समीकरण को साधकर मूल्यों व वसूलों की राजनीति

दिग्गज नेताओं को मिली शिकस्त

पंजाब में कांग्रेस नेता नवजोत सिंह सिद्धू, उप्र में सपा नेता स्वामी प्रसाद मौर्य तथा उत्तराखंड में कांग्रेस नेता हरीश रावत की पराजय बहुत कुछ चुगली कर रही है कि आखिर इन तपे तपाये नेताओं की शिकस्त के मायने क्या हैं? शायद यह कि हिंदुस्तान को उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और असम के मुख्यमंत्री हेमंत बिस्वा जैसे स्पष्ट और पारदर्शी सनातनी नेता की जरुरत है, जो केंद्रीय स्तर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृह मंत्री अमित शाह के नक्शेकदम पर चलकर देश को एक नई राजनैतिक दिशा देने को ततपर हैं। जिस तरह से दिल्ली, महाराष्ट्र, केरल, पश्चिम बंगाल के बाद अब पंजाब में बीजेपी को उम्मीदों के अनुरूप सफलता नहीं मिली है, उसके परिप्रेक्ष्य में यूपी, उत्तराखंड, मणिपुर व गोवा की ताजा राजनीतिक सफलता उसका उत्साह बढ़ाने को काफी है।

को बढ़ावा देने तथा सबको समान अवसर, सत्तागत सहूलियत व जनसुविधाएं देने की कोशिशों पर आधारित है। आप इसे हिंदुत्व की परिधि में सर्व समावेशी राजनीति को तरजीह भी समझ सकते हैं। यही वजह है कि कुछेक

अपवादों को छोड़कर बीजेपी लगातार आगे बढ़ रही है और सात-आठ साल पहले गठित आम आदमी पार्टी, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस जैसी सवा सौ साल पुरानी पार्टी की जगह धीरे धीरे ले रही है। क्योंकि समाजवादी सियासत करने वाले क्षेत्रीय दल भी कांग्रेसी सियासी लकीरों की नकल करने के कारण भारतीय राजनीति में लगातार अपनी प्रासंगिकता खोते चले जा रहे हैं। वैसे तो भाजपा विरोधी दलों ने कोरोना महामारी के बाद भूख, गरीबी, महंगाई, बेरोजगारी, पेट्रोल-गैस की बढ़ती कीमतों, महंगी शिक्षा, बढ़ते अस्पताल बिल, पानी, भ्रष्टाचार, किसानी-मजदूरी, पुरानी पेंशन प्रणाली और मुफ्तखोरी की बौछार करके मुद्दों को गरमाने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी। परन्तु ताजा चुनाव परिणाम ने साबित कर दिया कि 5 राज्यों में जातिवादी, परिवारवादी, भ्रष्टाचारी तथा छद्म सेक्युलरवादी दलों को मतदाताओं ने खारिज कर दिया है और हिंदूवादी ताकतों के हाथों में सत्ता सौंप दी है, अपवाद स्वरूप पंजाब को छोड़कर, जहाँ आप की राजनीति कई मामलों में बीजेपी की नकल ही करार दी जाती है।

उत्तराखंड में सफल रहे प्रयोग

इसी प्रकार उत्तराखंड में तीन-तीन मुख्यमंत्री बदलने के बावजूद भाजपा को स्पष्ट बहुमत मिलना यह जाहिर करता है कि पार्टी रणनीतिकारों के राजनीतिक प्रयोग सफल रहे हैं। यह जीत इसलिए महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि राजनेता व मीडिया यहां पर कांग्रेस की सत्ता में वापसी के संकेत दे रहे थे। लेकिन मतदाताओं के सकारात्मक मिजाज ने इन अटकलों की हवा निकाल दी। यहां बीएसपी को 2 सीट मिलना महत्वपूर्ण है, जो कभी यूपी में बीजेपी की सहयोगी पार्टी रही है।

गोवा में भी लहराया भगवा

वहीं, गोवा में भी पूर्व मुख्यमंत्री मनोहर पर्रिकर को खोने के बाद और उनके पुत्र के पार्टी छोड़ने के बाद भी बीजेपी को वहां बहुमत मिलना यह साबित करता है कि बीजेपी का सियासी अंदाज लोगों को पसंद है। यह बात इसलिए कि यहां भी मीडिया कांग्रेस या आप के मजबूत होने और सत्ता में आने के संकेत दे रही थी, जो पूरी तरह से सच नहीं निकली। यहां कांग्रेस, एमजीपी के अलावा अन्य को भी सीटें मिली हैं, जिनमें से कुछ बीजेपी के स्वाभाविक मददगार साबित होंगे।

वहीं मणिपुर में भी बीजेपी को बहुमत मिला है, जबकि कांग्रेस, एनपीएफ, एनपीपी और अन्य की मजबूत स्थिति यह दर्शाती है कि यहां भी भाजपा का भविष्य उज्ज्वल है

और कई दल रणनीतिक रूप से उसके लिए मददगार साबित होंगे। यहां पर एनडीए की सहयोगी जदयू ने भी अच्छा प्रदर्शन करके भाजपा को चौंका दिया है।

जहाँ तक पंजाब की बात है तो वहां कांग्रेस का अंतर्कलह उसे ले डूबा और बीजेपी की पुरानी सहयोगी पार्टी अकाली दल बादल द्वारा बीजेपी का साथ छोड़ना उसकी सत्ता में फिर से वापसी पर विराम लगा दिया। इसकी भरपाई के लिए बीजेपी ने कांग्रेस के पूर्व मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिंदर सिंह की नई पार्टी से अंतिम समय में समझौता तो कर लिया, लेकिन उससे चुनावी सफलता में तब्दील नहीं किया जा सका। इन्हीं बातों का फायदा वहां पर सियासी फील्डिंग कर रही आप को मिला और जनता ने उसकी रणनीति पर भरोसा जताकर दो तिहाई बहुमत दे दिया। हालांकि, इस बात की अटकलें लगाई जा रही हैं कि आप के पीछे खालिस्तानी ताकतें खड़ी हैं! जो कि कांग्रेस और बीजेपी की सियासी मुश्किलें भविष्य में बढ़ाएंगी ही।

योगी ने बनाए रिकार्ड

सच कहा जाए तो उत्तर प्रदेश में 1985 की कांग्रेस सरकार के बाद बीजेपी की योगी सरकार ही ऐसी सरकार है जो फिर से सत्ता में अपनी वापसी कर रही है। लगभग 37 साल बाद बन रहे इस रिकॉर्ड के पीछे कई प्रमुख कारण हैं। राजनीतिक विश्लेषकों की मानें तो सीएम योगी आदित्यनाथ सत्ता में फिर से अपनी वापसी के लिए आत्मविश्वास से लबरेज रहे। क्योंकि उन्होंने सुशासन और विकास के अलावा जनता की हर छोटी बड़ी तकलीफ को समझकर उसे ईमानदारी पूर्वक दूर करने की कोशिश की और अपने अधिकारियों के ऊपर भी सतत निगरानी रखे। उन्होंने केंद्र सरकार की योजनाओं, यथा-प्रधानमंत्री आवास, राशन, आयुष्मान भारत, किसान सम्मान निधि, पीएम स्वनिधि योजना, उज्जवला योजना, बिजली कनेक्शन, मुद्रा लोन समेत व्यापारियों, महिलाओं और समाज के अन्य वर्गों के लिए लागू की गई योजनाओं को ईमानदारी पूर्वक लागू करवाया। वहीं, कोरोना जैसी वैश्विक महामारी से निपटने के लिए सरकार की ओर से सबको कोरोना की मुफ्त वैक्सीन व समुचित इलाज के प्रयत्न भी प्रमुख कारण है, जिसे लोगों ने महसूस किया। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ द्वारा कानून व्यवस्था का सफल क्रियान्वयन और बाहुबलियों-भ्रष्टाचारियों के खिलाफ बुल्डोजर चलवाने का मुद्दा भी प्रमुख रहा है, क्योंकि जनता ऐसी ही सख्ती चाहती है। वहीं, भाजपा ने अपनी युगान्तकारी नीतियों से सभी सामाजिक वर्गों के बीच संपर्क का सघन अभियान चलाया। उसने महिलाओं, युवाओं के साथ ही सभी सामाजिक वर्गों व जातियों के बीच अपनी पैठ और गहरी की, जिसका सकारात्मक नतीजा यह हुआ कि भाजपा को सभी वर्गों का वोट मिला। अंत अंत तक सब लोग बीजेपी के पक्ष में जुटे रहे, पन्ना प्रमुखों ने घर-घर बीजेपी के पक्ष में माहौल बनाया। जिलों में विधानसभा स्तर तक बनी चुनाव संचालन समितियों के माध्यम से भाजपा ने हर बूथ स्तर तक की निगरानी सुनिश्चित की। जबकि मीडिया का एक वर्ग और विपक्ष सत्ता विरोधी कयासों को तूल देते हुए आत्ममुग्ध रहा।

भाजपा के कांग्रेस मुक्त भारत नारे को तेजी से वास्तविकता में बदल रहे केजरीवाल

आम आदमी पार्टी जिस तेजी के साथ राष्ट्रीय फलक पर छा रही है उससे कयास लगाये जाने लगे हैं कि यह पार्टी जल्द ही कांग्रेस की जगह ले लेगी। दिल्ली में कांग्रेस के 15 साल के शासन का अंत करके अरविंद केजरीवाल जिस मजबूती के साथ मुख्यमंत्री पद की कुर्सी संभाले हुए हैं उससे कांग्रेस के लिए दिल्ली के दरवाजे पूरी तरह बंद नजर आ रहे हैं। यही नहीं आम आदमी पार्टी ने पंजाब में भी कांग्रेस का सफाया कर दिया है। इससे पहले गुजरात के सूरत नगर निगम चुनावों में भी कांग्रेस का सफाया करके आम आदमी पार्टी मुख्य विपक्षी पार्टी बन गयी थी। इसी तरह वह राज्य जहां-जहां कांग्रेस कमजोर है, वहां आम आदमी पार्टी तेजी से बढ़त हासिल करती जा रही है। इसलिए सवाल उठता है कि भाजपा ने जो कांग्रेस मुक्त भारत का नारा दिया था, क्या उसे वास्तविकता में बदलने के लिए अरविंद केजरीवाल असली मेहनत कर रहे हैं? भाजपा ने कांग्रेस को केंद्र और राज्यों की सत्ता से बाहर कर विपक्षी खेमे में भेज दिया लेकिन केजरीवाल कांग्रेस को विपक्षी खेमे से भी आउट करने में जुट गये हैं। देखा जाये तो आप ने अपने अब तक के सियासी सफर में एक बड़ा मुकाम हासिल किया है और राष्ट्रीय राजनीति में एक विकल्प के रूप में उभरी है। 'आप' ने पंजाब में 92 सीट पर जीत हासिल कर निकटतम प्रतिद्वंद्वी कांग्रेस को बहुत पीछे छोड़ दिया। केजरवाल की पार्टी अब 117 सदस्यीय पंजाब विधानसभा में तीन चौथाई बहुमत के साथ राज्य में सरकार बनाएगी। आप ने 40 सदस्यीय गोवा में भी दो सीट हासिल कर तटीय राज्य में कुछ पकड़ बनायी है, लेकिन यह उत्तराखंड और उत्तर प्रदेश में खाता खोलने में नाकाम रही। हम आपको बता दें कि आप ने पंजाब, गोवा, उत्तराखंड और उत्तर प्रदेश की सभी विधानसभा सीट पर चुनाव लड़ा था, ताकि वह अपना विस्तार करके राष्ट्रीय राजनीति में एक बड़ी ताकत बन सके। पंजाब में जीत से उत्साहित पार्टी का लक्ष्य अब गुजरात और हिमाचल प्रदेश में अपना विस्तार करने पर है। इन दोनों राज्यों में इस साल के अंत में विधानसभा चुनाव होने हैं, जिसमें आप भी मैदान में उतरेगी। आप के सूत्रों ने बताया कि गुजरात को ध्यान में रखते हुए पार्टी की योजना पंजाब का विजय पताका इस भाजपा शासित राज्य में पहुंचाने की है।

केजरीवाल और अन्य नेताओं ने वर्ष 2012 में 'आप' का गठन किया था। इसने दिल्ली विधानसभा में 70 में से 28 सीट जीतकर चुनावी राजनीति में अपनी शुरुआत की। वर्ष 2013 में मुख्यमंत्री केजरीवाल के नेतृत्व में दिल्ली में आप की सरकार बनी और कांग्रेस ने बाहर से समर्थन दिया था। दिल्ली विधानसभा में संख्या बल में कमी के कारण जन लोकपाल विधेयक पारित करने में विफल रहने पर केजरीवाल ने फरवरी, 2014 में पूर्ण जनादेश हासिल करने के लिए मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा दे दिया। दिल्ली विधानसभा का दोबारा चुनाव लड़ने से पहले आप ने वर्ष 2014 का लोकसभा चुनाव लड़ा और पंजाब में चार सीट हासिल की। इसके बद पार्टी ने वर्ष 2015 के दिल्ली विधानसभा चुनाव में 70 में से 67 सीट पर जीत दर्ज की। 'आप' ने वर्ष 2020 के दिल्ली विधानसभा चुनाव में 70 में से 62 सीट जीतकर एक बार फिर कीर्तिमान स्थापित किया। बहरहाल, अब आम आदमी पार्टी का जो सफर शुरू हुआ है उसमें लोगों का अनुमान है कि यह कांग्रेस की जगह लेकर भाजपा से मुकाबला करेगी। देखना होगा कि आप का यह सफर कितना आसान रहता है।

राज्यसभा

कांग्रेस पर मंडरा रहा नेता विपक्ष का दर्जा खोने का खतरा

पांच राज्यों में विधानसभा चुनावों में कांग्रेस के बेहद खराब प्रदर्शन से राज्यसभा में उसकी स्थिति कमजोर होगी और पार्टी पर अब संसद के ऊपरी सदन में नेता विपक्ष का दर्जा खोने का खतरा मंडरा रहा है। इस साल उच्च सदन के लिए द्विवार्षिक चुनाव होने के बाद कांग्रेस की संख्या ऐतिहासिक रूप से कम हो जाएगी और उसके सांसदों की संख्या नेता विपक्ष के दर्जे को बनाए रखने के लिए जरूरी न्यूनतम संख्या के करीब ही होगी। अगर पार्टी इस साल के अंत में गुजरात चुनाव और अगले साल कर्नाटक विधानसभा चुनाव में अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाई तो राज्यसभा के अगले द्विवार्षिक चुनावों में वह नेता विपक्ष का दर्जा खो देगी। वर्तमान में कांग्रेस के ऊपरी सदन में 34 सदस्य हैं और इस साल उसके कम से कम सात सीटें हारने की संभावना है। मानदंडों के अनुसार, एक पार्टी के पास सदन की कुल सदस्यता का कम से कम 10 प्रतिशत होना चाहिए। ऐसा होने पर ही किसी पार्टी को अपने नेता के लिए विपक्ष के नेता का दर्जा प्राप्त होता है। कांग्रेस को लोकसभा में विपक्ष के नेता का दर्जा प्राप्त नहीं है क्योंकि सदन में उसकी वर्तमान संख्या सदन की सदस्यता के 10 प्रतिशत से कम है। चुनाव आयोग ने इस महीने की शुरुआत में राज्यसभा में 13 रिक्त पदों को भरने के लिए 31 मार्च को चुनाव कराने की घोषणा की थी। इनमें से पांच सीटें पंजाब से जबकि बाकी आठ सीटें हिमाचल प्रदेश, असम, केरल, नागालैंड और त्रिपुरा से हैं पंजाब से अगले महीने सेवानिवृत्त होने वाले सदस्यों में कांग्रेस के दो सदस्य शामिल हैं। आम आदमी पार्टी नई पंजाब विधानसभा में तीन-चौथाई बहुमत के साथ अपनी संख्या में काफी बढ़ोतरी करेगी और राज्य की सात सीटों में से कम से कम छह सीटें जीतने की स्थिति में होगी, जिसके लिए इस साल राज्यसभा चुनाव होने हैं।

अखिलेश यादव कहां चूक गए पुरानी छवि से उबर नहीं पाए

उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव के आए नतीजों से एक बात तो साफ हो गई है कि यूपी में एक बार फिर योगी का सिक्का चला है। उनके नेतृत्व में भाजपा 3 दशकों का रिकॉर्ड तोड़ते हुए लगातार दूसरी बार सरकार बनाने जा रही है। बेरोजगारी, महंगाई और छुट्टा जानवरों की समस्याओं को उठाने और 300 यूनिट मुफ्त बिजली जैसे लुभावने वादों के बावजूद अखिलेश यादव जनता का भरोसा जीतने में सफल नहीं हो पाए। हालांकि, सपा के लिए सुकून की बात यह है कि 2017 के मुकाबले उसका प्रदर्शन जरूर सुधरा है।आइए जानते हैं उन 5 कमियों के बारे में, जिसके चलते इतनी मेहनत के बाद भी सपा सत्ता नहीं पहुंच सकी। सपा को गुंडों की पार्टी कहकर भाजपा इस बार भी लगातार अखिलेश यादव पर हमला करती रही। हालांकि अखिलेश यादव ने नई सपा का नारा देकर पार्टी की उस पुरानी छवि को तोड़ने का प्रयास किया। मगर लोगों को इस बात पर भरोसा नहीं हुआ। इसके अलावा सपा ने जेल में बंद कुछ नेताओं, दागी और बाहुबली लोगों को चुनाव में उतार दिया। यह भी आम जनता में गलत संदेश दे गया। इसके अलावा सपा की मुस्लिम परस्त छवि भी उसके हार का एक कारण बनी। हालांकि चुनाव प्रचार के दौरान अखिलेश यादव ने काशी में विश्वनाथ मंदिर से लेकर मथुरा में बांके बिहारी के दर्शन कर इमेज बदलने की कोशिश की। मगर, आम जनता की नजर में वह हिंदूवादी नहीं बन पाए। उधर, सस्ती बिजली, संविदा कर्मचारियों को नियमित करने का वादा, शिक्षा मित्रों को फिर से सहायक अध्यापक बनाने और पुरानी पेंशन लागू करने जैसी चुनावी घोषणाएं भी फेल हो गईं। यही नहीं, चुनावी दौर में सपा नेताओं के आए विवादित वीडियो भी अखिलेश के खिलाफ चले गए। अखिलेश ने जितना माहौल बनाया था, वह सब पीछे हो गए।

उत्तर प्रदेश ने प्रियंका की लीडरशिप को नकारा

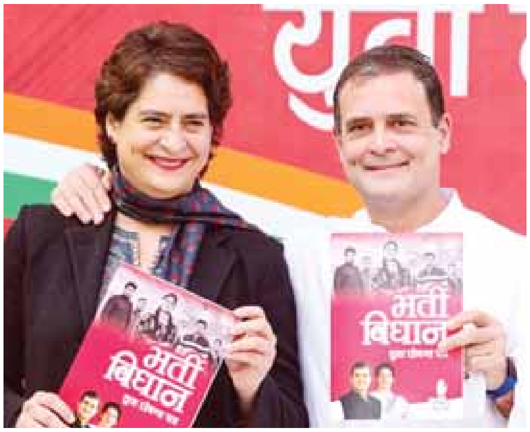

2022 यूपी विधानसभा चुनाव में कांग्रेस ने 30 साल बाद प्रियंका की अगुवाई में सभी 403 सीटों पर प्रत्याशी उतारे। लड़की हूं,लड़ सकती हूं के नारे के साथ प्रियंका ने 40प्रश महिलाओं को टिकट दिए। हालांकि, नतीजों में कांग्रेस का प्रदर्शन पिछले विधानसभा चुनाव से भी खराब रहा । पार्टी 403 सीटों में केवल 2 सीटों पर ही कामयाबी पा सकी।नतीजों से यह साफ हो गया है कि सूबे की जनता ने प्रियंका की लीडरशिप को नकार दिया है। इससे उनका राजनीतिक डेब्यू सुपरफ्लॉप साबित हुआ है। बीते 17 साल से कांग्रेस की राजनीति का बड़ा चेहरा रहीं प्रियंका 2019 में राष्ट्रीय महासचिव बनाई गईं। सबको लगने लगा था कि वो ही कांग्रेस के डूबते हुए जहाज को किनारे तक ले जाएंगी। लेकिन 2022 के चुनाव ने सभी उम्मीदों पर पानी फेर दिया। यूपी में 2017 के विधानसभा चुनाव में राहुल गांधी पूरे दमखम के साथ मैदान में उतरे थे। अंत में स्थिति ऐसी हो गई थी कि मात्र 7 सीटों पर जीत हासिल हुई थी। हालांकि, कांग्रेस ने यह चुनाव अखिलेश यादव की अगुवाई वाली समाजवादी पार्टी के साथ गठबंधन में लड़ी थी। तब राहुल और अखिलेश की जोड़ी खूब चर्चा में थी। इस बार के यूपी चुनाव में प्रियंका गांधी ने शुरू से मोहड़ा संभाला था। चुनाव घोषणा पत्र के रूप में कांग्रेस ने युवाओं के लिए युवा विधान और महिलाओं के लिए शक्ति विधान घोषणा पत्र जारी किया था, जो काम नहीं आया। इसके साथ-साथ किसान कर्ज माफी, बिजली बिल हाफ, सरकारी नौकरी के वादे को भी जनता ने नकार दिया है।

रूस-यूक्रेन युद्ध:तीसरे विश्व युद्ध के संकेत

रूस और यक्रेन के बीच बढ़ते युद्ध की विश्व पर पड़ती-बढ़ती आंच से बहुत कुछ तपने लगा है। युद्ध का निरंतर खतरनाक होते जाना न केवल दुखद, बल्कि मानवता के लिए शर्मनाक भी है। बड़ी शक्तियों के बीच प्रत्यक्ष-परोक्ष संघर्ष का जो सिलसिला चल निकला है, पूरी दुनिया को इसकी कीमत चुकानी पड़ेगी। रूस के खिलाफ सैन्य कार्रवाई से बच रहा नया अमेरिका प्रतिबंधों से नकेल कसता चला जा रहा है। अब रूस को गहराई से नुकसान पहुंचाने के लिए अमेरिका ने वहां से तेल-गैस आयात को रोक दिया है। अगर अमेरिका तेल-गैस को रूस की अर्थव्यवस्था की मुख्य धमनी मानता है, तो फिर क्या वह यह कदम पहले नहीं उठा सकता था? ऐसे जरूरी प्रतिबंध के लिए अमेरिका को भला 12 दिन क्यों इंतजार करना पड़ा? क्या अमेरिका रूसी तेल-गैस पर निर्भर हो गया था या युद्ध रोकने से ज्यादा उसे तेल-गैस की चाहत थी? खैर, जब अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन ने साफ कह दिया है कि वह रूसी तेल, गैस और ऊर्जा के सभी आयातों पर प्रतिबंध लगा रहे हैं, तो यकीन मानिए, रूस इस युद्ध को और तीखा कर देगा, ताकि जल्दी से जल्दी अपने मकसद तक पहुंच सके।

दुनिया में आज हालात ऐसे बन गये हैं कि ताकतवर देशों के हुक्मरानों ने अगर अपना युद्ध के लिए उकसाने वाला रवैया और युद्ध को बढ़ावा देने वाला अपना रवैया तत्काल ही नहीं त्यागा तो भविष्य में स्थित बेहद भयावह हो सकती है। रूस-यूक्रेन युद्ध के चलते दुनिया पर हर पल तीसरे विश्वयुद्ध होने के घातक बादल मंडराने लगें हैं। इस जंग के चलते दो धड़ों में विभाजित दुनिया एक बार फिर से एक बहुत बड़े युद्ध के मुहाने पर अचानक से आकर खड़ी हो गयी है। दुनिया में आज हालात ऐसे बन गये हैं कि ताकतवर देशों के हुक्मरानों ने अगर अपना युद्ध के लिए उकसाने वाला रवैया और युद्ध को बढ़ावा देने वाला अपना रवैया तत्काल ही नहीं त्यागा तो भविष्य में स्थित बेहद भयावह हो सकती है।

आज समय की मांग है कि दुनिया में अपनी चौधराहट चलाने वाले चंद ताकतवर देश रूस-यूक्रेन के युद्ध को जल्द से जल्द रोकने के लिए बातचीत के माध्यम से धरातल पर तत्काल प्रभावी सकारात्मक कदम उठाएं। क्योंकि रूस-यूक्रेन का युद्ध लंबा समय तक चलने कि स्थिति में भविष्य में इस युद्ध का दायरा रूस-यूक्रेन के साथ-साथ अन्य देशों की भागीदारी होने के चलते बढ़ने की बहुत प्रबल संभावना है, जिसकी वजह से युद्ध के चलते भविष्य में दुनिया भर में बहुत बड़े पैमाने पर जान-माल के नुकसान होने की संभावना बन सकती है,

इसलिए इस ज्वलंत मसले से जुड़े हुए सभी पक्षों को समय रहते यह समझना ही होगा कि युद्ध किसी भी समस्या का समाधान नहीं है, बल्कि समस्या का समाधान बैठकर आपसी बातचीत से ही संभव है।

वैसे भी रूस-यूक्रेन के आपसी विवाद का अगर निष्पक्ष रूप से आंकलन करें तो कुछ माह पूर्व से लड़ने पर अमादा बैठे रूस-यूक्रेन के बीच हालात को बिगाड़ने में बहुत सारे देशों की अपने क्षणिक स्वार्थ के चलते बेहद महत्वपूर्ण नकारात्मक भूमिका रही है, उन चंद देशों के बडबोले हुक्मरानों ने पल-पल रूस-यूक्रेन के तनाव को युद्ध की आग के रूप में भड़काने के लिए उसमें अपने बेहद तल्ख जहरीले उकसाने वाले बयानों का घी व कपूर डालकर उसको माचिस की जलती तिल्ली दिखाने का कार्य बखूबी किया है। आज के समय में यह कहना बिल्कुल भी अनुचित नहीं है कि जिस तरह से रूस-यूक्रेन के हुक्मरानों की एक जिद्द ने एक-दूसरे के देशों

रूस-यूक्रेन विवाद की वजह कैसे बना NATO?

की जनता के ऊपर युद्ध थोपा है, उसको दुनिया के चौधरी बनने वाले चंद पश्चिमी देशों, नाटो व अमेरिका ने जमकर भड़का कर युद्ध में तब्दील करने का कार्य किया है। आज की परिस्थितियों में दुनिया के शांतिप्रिय देशों के लिए सबसे बड़ी चिंता की बात यह है कि रूस-यूक्रेन के युद्ध को रोकने के लिए यह चंद देश अब भी धरातल पर सकारात्मक पहल नहीं कर रहे हैं, बल्कि उसके विपरीत यह देश अब भी हथियार देने की बात करके युद्ध की आग

को ओर तेजी से भड़काने का कार्य कर रहे हैं। हालांकि इस तरह के हालात से अब यह स्पष्ट हो गया है चंद देशों के हुक्मरानों का लक्ष्य युद्ध भड़का कर अपने देशों के निर्मित हथियारों की तिजारत करके अपनी तिजोरी भरने का ही रहता है। वैसे भी देखा जाये तो कहीं ना कहीं इन चंद देशों के बडबोले हुक्मरानों की युद्ध में हर तरह की मदद करने के आश्वासन के झांसे में आकर रूस-यूक्रेन का युद्ध शुरू हुआ है और अब दुनिया के इन चंद ताकतवर देशों के हुक्मरान अपने आलीशान महलों में बैठकर पल-पल दर्दनाक मौत मरती दोनों देशों की जनता व मानवता की हत्या का तमाशा देख रहे हैं। अफसोस की बात यह है कि रूस-यूक्रेन ने आपसी बातचीत व कूटनीति का यह रास्ता छोड़ दिया गया है और युद्ध का रास्ता पकड़ लिया है, लेकिन उन्हें समय रहते ही यह समझना होगा कि इंसानी ज़िंदगी की कीमत पर कभी भी किसी भी समस्या का कोई हल नहीं निकाला जा सकता है, समस्या के निदान के लिए जंग के रास्ते को त्यागकर बातचीत व कूटनीति के

अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारत की कुशल रणनीति

आज हर जगह केवल रूस–यूक्रेन संकट की चर्चा है और साथ ही पूरी दुनिया की निगाहें इस संकट पर भारत की भूमिका पर हैं। भारत सरकार ने अभी तक इस प्रकरण पर बहुत ही संतुलित व तटस्थ भूमिका का निर्वाहन किया है। संयुक्त राष्ट्र महासभा सहित जिन मंचों पर रूस के खिलाफ निंदा प्रस्ताव या अन्य जितने भी प्रस्ताव पास हुए हैं उन सभी में मतदान के दौरान भारत अनुपस्थित ही रहा है। यह पंक्तियाँ लिखे जाने तक भारत के रूख से रूस और अमेरिका सहित विश्व के सभी देश खुश हैं। यह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कुशल नेतृत्व और विदेश के बड़े नेताओं के साथ उनकही मैत्री का ही परिणाम है कि जंग के खतरनाक दौर में भी रूस के राष्ट्रपति ब्लादिमीर पुतिन जहां उनसे फोन पर बात कर रहे हैं और भरतीय छात्रों की सकुशल वापसी के लिए सुरक्षित मार्ग दे रहे हैं वहीं दूसरी ओर यूक्रेन भी भारत की ओर देख रहा है और नरेंद्र मोदी से मदद की अपील कर रहा है ताकि युद्ध को रोका जा सके, यूक्रेन के पड़ोसी देश भारतीय छात्रों की वापसी में सहयोग कर रहे हैं। आज भारत ने जो तटस्थ नीति अपनायी है जहां उसकी जहाँ पूरे विश्व में प्रशंसा हो रही है वहीं मोदी विरोधी मीडिया इस बात पर भी अपना नकारात्मक प्रवचन चला रहा है। पश्चिमी जगत के मीडिया की नकल करने वाला मीडिया का एक वर्ग यह भी कह रहा है कि भारत को इस युद्ध में रूस के निंदा प्रस्ताव में रूसी कार्यवाही के विरोध में अपना मत देना चाहिए था, आखिर क्यों? भारत ने अंतरराष्ट्रीय मंचों पर अपनी जो भूमिका निभायी है उसके कारण भारत के दो धुर विरोधी चीन और पाकिस्तान भी हैरान हो रहे हैं तथा वहां के टीवी चैनलों पर बड़ी बहसें हो रही हैं कि आखिर मोदी जी के दिमाग में चल क्या रहा है।

भारत की वर्तमान रणनीति की पृष्ठभूमि पर हम सभी को नजर डालनी होगी और अपना विस्मृत ज्ञान का भंडार फिर से ताजा करना होगा क्योंकि यूक्रेन एक ऐसा देश रहा है जिसने कभी भी किसी भी संकट में भारत का साथ नहीं दिया है और वह सदा ही भारत विरोध का रवैया अपनाता रहा है। यूक्रेन की सरकार ने न तो पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय अटल बिहारी बाजपेयी सरकार के कार्यकाल में परमाणु परीक्षण के मुददे पर भारत का साथ दिया और नहीं आतंकवाद के मुददे पर। यूक्रेन सदा पाकिस्तान व चीन के साथ खड़ा रहा है। अमेरिका व अन्य पश्चिमी देश भारत पर इस बात का दबाव बना रहे हैं कि वह रूस के खिलाफ मतदान करे। लेकिन सबसे बड़ा सवाल यह है कि इन देशों ने आज तक आतंकवाद के मुददे पर भारत को कोई सहयोग कभी नहीं दिया। इतिहास गवाह है कि अमेरिका व ब्रिटेन जैसे देश पाकिस्तान के साथ मिलकर जम्मू कश्मीर व पाक अधिकत कश्मीर को मिलाकर एक स्वतंत्र देश बनाने का सपना देख रहे हैं और कई बार उनकी यह साजिशें उन देशों के नेताओं की जुबान पर आ भी जाती हैं। जब गलवान में चीन ने सोची समझी साजिश के तहत हमला किया तब भी ये देश भारत के पक्ष में नहीं बोले तो आज भारत इन देशों का साथ क्यों दे? भारत में बैठे पश्चिमी मीडिया के पिछलग्गू बुद्धिजीवि सरकार से यह आशा कर रहे है कि वह यूक्रेन का साथ दे तो उनकी बुद्धि पर तरस ही आता है। वर्ष 1998 में जब भारत ने पोखरण में परमाणु परीक्षण किया था उस समय संयुक्त राष्ट्र की सुरक्षा परिषद में भारत पर कड़े आर्थिक प्रतिबंध लगाने के लिए एक प्रस्ताव आया था इस प्रस्ताव को दुनिया के जिन 25 देशों ने प्रस्तुत किया था उसमें यूक्रेन प्रमुख था। भारत के परमाणु कार्यक्रम को रोकने के लिये यूक्रेन ने पाकिस्तान का साथ दिया था। सबसे खतरनाक पहलू यह है कि पिछले तीन दशकों से पाकिस्तान को हथियार बेचने वाला सबसे बड़ा देश यूक्रेन बना हुआ है। पाकिस्तान को हथियारों की जरूरत यूक्रेन ही पूरा करता है और वह अब तक पाकिस्तान को 12 हजार करोड़ रूपये के हथियार बेच चुका है आज पाकिस्तान के पास जो 400 टैंक हैं वो यूक्रेन के द्वारा ही बेचे गये हैं। यूक्रेन पाकिस्तान की सेना को मजबूत करने में लगातार सहयोग कर रहा था और वह भारत के लिये बहुत बड़ा खतरा बन चुका था।

कश्मीरी पंडितों के दर्द महसूस कराती है द कश्मीर फाइल्स

द कश्मीर फाइल्स कश्मीरी पंडितों के पलायन के दर्द को दिखाती है। कश्मीरी पंडितों का यह दर्द आपको बेचैन कर देगा। ऐसा नहीं है कि लोग कश्मीर का यह व्याकुल सच नहीं जानते कि कैसे आतंकियों ने कश्मीरी हिंदुओं को उनकी जमीन से बेदखल किया। बेरहमी से कत्ल किया। उनकी महिलाओं बच्चों पर शर्मनाक अत्याचार किए। कश्मीरी लोग कैसे देश प्रदेश की सरकार, स्थानीय प्रशासन, पुलिस और मीडिया कैसी तत्वों के बावजूद अपनी ही धरती पर शरणार्थी बनकर रह गए और उन्हें आज तक न्याय नहीं मिला। निर्देशक विवेक अग्निहोत्री ने इसी दर्द की कहानी को कश्मीर फाइल्स के जरिए पर्दे पर उतारा है।

यह कहानी रिटायर्ड टीचर पुष्कर नाथ पंडित (अनुपम खेर) और उनके परिवार को केंद्र में रखते हुए चलती है। उनके बहाने कश्मीरियों के जख्मों और तकलीफों को बयां करती है। जेएनयू दिल्ली में पढ़ने वाला उनका जवान पोता कृष्णा (दर्शन कुमार) जब कश्मीर पहुंचता है, तो पुष्कर नाथ के पुराने दोस्तों आईएएस ब्रह्मा दत्त (मिथुन चक्रवर्ती), डीजीपी हरि नारायण (पुनीत इस्सर), डॉ महेश कुमार (प्रकाश बेलावाडी) और पत्रकार विष्णु राम (अतुल श्रीवास्तव) से मिलता है। वहां उसका सामना हकीकत से होता है। वह उस आतंकी फारुख मलिक बिट्टा (चिन्मय मांडलेकर) से भी मिलता है, जो उसके परिवार समेत कश्मीर की बर्बादी का जिम्मेदार है। विश्वविद्यालय में कश्मीर को देश से अलग करने के नारे लगाने वाले कृष्णा को वहां सच्चाई पता चलती है और उसकी आंखों के आगे से पर्दा हटता है। विवेक अग्निहोत्री ने फिल्म में कश्मीर से जुड़े दुष्प्रचारों को फिल्म में दिखाने की कोशिश तो की है लेकिन उसे लेकर बहुत ज्यादा मुखर नहीं हुए हैं। कश्मीर फाइल्स में वह राजनीति से अधिक वहां के हिंसक घटनाक्रम और कश्मीर को भारत से तोड़ने वाली षड्यंत्रकारी सोच पर फोकस करते हैं।

इस फिल्म में दिखाई गई हिंसा कहीं कहीं आप को झकझोर देती है। एक सीन में चावल की कोठी में छुपे पंडित के बेटे को जब आतंकी गोलियों से छलनी कर देता है तो उसके खून से सने चावल बिखर जाते हैं। आतंकी पंडित की बहू से कहता है कि अगर वह इस चावल को खाएगी, तभी उसकी और उसके परिवार के दूसरे लोगों की जान बच सकती है। वह चावल खाती है। एक दूसरे सीन में आतंकी पुलिस की वर्दी में 24 कश्मीरी हिंदुओं को एक लाइन में खड़ा करके गोलियों से भून देते हैं। वे कश्मीरी हिंदुओं और भारत का अपमान करने वाले नारे लगाते हैं।

लगभग 3 घंटे की इस फिल्म का पहला हिस्सा जहां कश्मीर में 1990 में हुए भीषण नरसंहार पर केंद्रित है, वहीं दूसरे में निदेशक कृष्णा के बहाने नई पीढ़ी के असमंजस को दिखाते हैं, जिसे बताया कुछ गया है और सच कुछ और है। कश्मीर की आजादी के नारे, बेनजीर भुट्टो के वीडियो और फैज की नज़्म हम देखेंगे के बहाने निर्देशक आतंकियों और अलगाववादियों के इरादे जाहिर करते हुए नई पीढ़ी की उलझन को सामने लाते हैं। काली बिंदी लगाई हुई वामपंथी उदारवादी प्रो. राधिका मोहन के रूप में पल्लवी जोशी जहां युवाओं को गुमराह करने वालों का प्रतिनिधित्व करती हैं।

फिल्म बहुत सारे पंडितों की सच्ची कहानियों और दस्तावेजों पर आधारित है। यह फिल्म बार-बार फ्लैशबैक में जाती है और 1 सीध में नहीं चलती। तथ्यों पर ज्यादा जोर देने की वजह से कहीं-कहीं यह फिल्म डॉक्युड्रामा की तरह भी लगती है। निर्देशक ने आर्टिकल 370 से लेकर शरणार्थी कैंपों में कश्मीरियों की दुर्दशा को और उस पर राजनेताओं की संवेदनहीनता को उभारा है। यह फिल्म कई बातों को सामने लाती है जो लोगों को जानी चाहिए। यह मनोरंजन का नहीं बल्कि संवेदना का सिनेमा है।

पीएम मोदी ने भी की कश्मीर फाइल्स की तारीफ

नौ नए मेडिकल कालेजों के लिए 300 करोड़, एमबीबीएस की सीटें भी बढ़ेंगी

मध्य प्रदेश बजट: 13 हजार टीचर्स और 6 हजार आरक्षकों की भर्ती होगी

मध्यप्रदेश विधानसभा में विपक्ष के जोरदार हंगामे के बीच वित्तमंत्री जगदीश देवड़ा ने मध्य प्रदेश की शिवराज सरकार का 2022-23 का बजट पेश किया। यह उनका दूसरा बजट था, जिसमें सरकारी कर्मचारियों के लिए बड़ी घोषणा की गई। सरकार ने महंगाई भत्ता 11फीसदी बढ़ाकर 31फीसदी कर दिया है। इससे 7.5 लाख कर्मचारियों को फायदा होगा। शिक्षा पर फोकस करते हुए 13 हजार नए टीचर्स की भर्ती की भी घोषणा की गई है। एमबीबीएस की सीटों की संख्या 2035 से बढ़ाकर 3250 की जाएगी यानी टोटल 1215 सीट बढ़ेंगी। नर्सिंग की सीटें 50 और बढ़ाकर 320 की जाएंगी। गृह विभाग में 6 हजार आरक्षकों की भर्ती होगी। प्रदेश में अभी 13 सरकारी मेडिकल कालेज हैं जो आने वाले सालों में 22 हो जाएंगे। एमबीबीएस की सीटें 2035 से बढ़कर 3250 हो जाएंगी। बीएससी नर्सिंग की सीटें 390 से बढ़ाकर 810 करने का भी बजट में प्रावधान किया गया है।

वित्तमंत्री ने कहा कि मध्य प्रदेश में 13 हजार टीचर्स की नियुक्ति की जाएगी, सागर और उज्जैन में सोलर प्लांट लगाए जाएंगे। भोपाल में ग्लोबल स्किल पार्क शुरू हो रहे हैं, उज्जैन में मेडिकल डिवाइस पार्क को मंजूरी दी गई है। उद्योगों को रियायती दरां पर रियायत पर जमीन दी जाएगी। राज्?य में 11 नए औद्योगिक क्षेत्र विकसित किए जाएंगे। इससे 11 हजार से ज्यादा रोजगार के अवसर विकसित होंगे। मध्य प्रदेश में इस बार कोई नया कर नहीं लगाया गया। 2 लाख 79 हजार 237 करोड़ का कुल बजट है। बजट में इस बार चाइल्ड बजट भी पेश किया गया।बजट में महंगाई भत्ता 20 प्रतिशत से बढ़ाकर 31 प्रतिशत किया गया है, इसका लाभ राज्?य के साढ़े सात लाख कर्मचारियों को मिलेगा। भारी हंगामें के बीच वित्त मंत्री वित्त मंत्री जगदीश देवड़ा ने कहा कि यह बजट आत्मनिर्भर मध्य प्रदेश का संकल्प है। उन्होंने कहा-सरकार पूरी तरह से अन्नदाताओं के

वित्तीय प्रबंधन का उत्तम उदाहरण है वर्ष 2022-23 का बजट: शिवराज

साथ है। प्रदेश में सिंचाई क्षमता 43 लाख हेक्टेयर में पहुंची है।

सीएम राइज योजना के तहत मध्य प्रदेश 360 स्कूल खोलने का लक्ष्य है। मध्य प्रदेश के सागर, शाजापुर और उज्जैन में सोलर प्लांट बनेंगे।मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि वर्ष 2022-23 का बजट सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे संतु निरामयः, सब सुखी हों, सब निरोग हों, सबका मंगल हो, सबका कल्याण हो, के भाव से बनाया गया है। यह वित्तीय प्रबंधन का उत्तम उदाहरण है। विपरीत परिस्थितियों में सामंजस्य बनाते हुए बेहतर वित्तीय प्रबंधन से ऐसा बजट प्रस्तुत करने के लिए वित्त मंत्री श्री जगदीश देवड़ा बधाई के पात्र हैं, यह बजट स्वागत योग्य है। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने विधानसभा में बजट प्रस्तुत होने के बाद बजट पर अपना अभिमत व्यक्त करते हुए विधानसभा में मीडिया प्रतिनिधियों से यह बात कही। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि प्रदेश की विकास दर करंट रेट पर प्राप्त आंकड़ों के आधार पर देश में सर्वाधिक है। प्रदेश 19.7 प्रतिशत से अधिक की विकास दर अर्जित करने में सफल रहा है। यह प्रदेश के लिए बड़ी उपलब्धि है। आज प्रस्तुत बजट आत्म-निर्भर मध्यप्रदेश के निर्माण का बजट है। यह प्रधानमंत्री श्री मोदी के वैभवशाली, गौरवशाली, सम्पन्न और समृद्ध भारत के निर्माण के स्वप्न और संकल्प को पूर्ण करने का बजट है। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि यह बजट केवल अर्थ-शास्त्रियों और अधिकारियों ने ही नहीं बनाया अपितु यह जनता के सुझावों के आधार पर भी बनाया गया है। जन-सामान्य से आमंत्रित कई सुझावों को बजट में सम्मिलित किया गया है।

देश में पहली बार गोबर के ब्रीफकेस में बजट

छत्तीसगढ़ के सीएम भूपेश बघेल ने वित्तीय वर्ष 2022-23 के लिए विधानसभा में बजट पेश किया। इस दौरान बघेल के हाथ में मौजूद एक ब्रीफकेस काफी चर्चा में है। दरअसल यह ब्रीफकेस गोबर से बना हुआ है, जिसे लेकर बघेल ने बजट पेश किया। इस ब्रीफकेस पर संस्कृत में 'गोमय वसते लक्ष्मी' लिखा था, जिसका अर्थ गोबर में लक्ष्मी का वास होता है। देश में ऐसा पहली बार है जब किसी मुख्यमंत्री ने बजट लाने लिए गोबर से बने ब्रीफकेस का इस्तेमाल किया है। आम तौर पर इससे पहले अलग-अलग राज्यों के मुख्यमंत्री चमड़े या जूट से बने ब्रीफकेस का इस्तेमाल बजट की प्रति लाने के लिए करते रहे हैं। इस ब्रीफकेस को रायपुर गोकुल धाम गौठान में काम करने वाली महिला स्वंय सहायता समूह एक पहल की महिलाओं ने तैयार किया है। समूह की महिलाओं ने बताया कि इस ब्रीफकेस की खासियत ये है कि इसे गोबर पाउडर, चूना पाउडर, मैदा, लकड़ी एवं ग्वार गम के मिश्रण को परत दर परत लगाकर 10 दिनों की कड़ी मेहनत से तैयार किया गया है।

छत्तीसगढ़ बजट : राज्य में बहाल हुई पुरानी बजट योजना, 6 नई तहसीलें बनाने का ऐलान

मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने बुधवार को छत्तीसगढ़ विधानसभा में अपनी सरकार का बजट पेश किया। बता दें कि भूपेश बघेल गोबर से बना सूटकेस लेकर विधानसभा पहुंचे, जिसपर 'गोमय वसते लक्ष्मी' लिखा था। उन्होंने इस दौरान कई अहम घोषणाएं की। अपनी बजट भाषण उन्होंने किसानों की जिक्र करते हुए शुरू किया और उनके लिए भूमिहीन मजदूर न्याय योजना का ऐलान किया। इस स्कीम के तहत किसानों को सालाना 7000 रुपये मिल सकेंगे। अपने बजट भाषण में बघेल ने आगे कहा कि मौजूदा सरकार ने पहले साल में 17.96 लाख किसानों का 8744 करोड़ का कर्ज माफ किया है और 2500 रुपये प्रति क्विंटल की दर से धान खरीदी की गई। उन्होंने कहा कि इसके इतर उनकी सरकार ने खरीफ 2018 के धान के लिए 15.77 लाख किसानों को 6022 करोड़ का बोनस भी दिया है।

मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने 1 लाख 5 हजार करोड़ के बजट में समाज के हर वर्ग को रखने की कोशिश की है। बजट में 6 नई तहसीलें बनाने की घोषणा गई है। इस बजट में लोगों को राहत देते हुए कोई टैक्स नहीं लगाया गया है। बजट भाषण में बघेल ने बताया कि मेडिकल कॉलेज रायपुर में स्नातक छात्र छात्राओं के हॉस्टल निर्माण तथा कर्मचारियों के आवास निर्माण हेतु 10.50 करोड़ का प्रावधान किया, वहीं, खैरागढ़ में 50 बिस्तर सिविल अस्पताल के भवन निर्माण का भी प्रावधान है। बजट में राजीव गांधी ग्रामीण कृषि भूमिहीन मजदूर नई योजना के तहत आगामी वर्ष के लिए वार्षिक सहायता राशि 6000 से बढ़ाकर 7000 किया गया है।

बजट की खास बात यह थी कि इस दौरान छत्तीसगढ़ में पुरानी पेंशन योजना भी बहाल की गई। छत्तीसगढ़ सरकार ने सरकारी कर्मचारियों की मांग को देखते हुए पुरानी पेंशन योजना को राज्य में लागू कर दिया है। मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने वित्तमंत्री के रूप में बजट प्रस्तुत करते हुए सदन में इस संबध में घोषणा की।

राजस्थान के बाद देश में छत्तीसगढ़ दूसरा कांग्रेस शासित राज्य है, जिसने पुरानी पेंशन योजना को बहाल किया है।

वर्ष 2005 में देश भर में पेंशन पर बढ़ते खर्च को देखते हुए सरकारों ने पेंशन योजना को बंद कर दिया था। उसके बाद से लगातार सरकारी संगठन इस योजना को दोबारा से शुरू करने की मांग करते रहे हैं। मध्य प्रदेश में भी सरकारी कर्मचारियों के सभी संगठन इस तरह की मांग को लेकर आंदोलन कर रहे है।

वहीं, बजट भाषण के दौरान सीएम भूपेश बघेल ने यह घोषणा की है कि छत्तीसगढ़ व्यवासायिक परिक्षा मंडल और छत्तीसगढ़ राज्य लोकसेवा आयोग के द्वारा ली जाने वाली सभी परिक्षाओं के लिए छत्तीसगढ़ के मूल निवासियों को कोई शुल्क नहीं देना होगा। इन दोनों एजेंसियों द्वारा आयोजित की जाने वाली परिक्षाओं में राज्य के मूल निवासी बिना कोई शुल्क दिए शामिल हो सकेंगे।

गोबर से बन रही बिजली और गुलाल

राज्य सरकार गाय पालने वाले किसानों से गोबर तो खरीद ही रही है। इसके अलावा राज्य सरकार गोबर से ही बिजली बनाने का काम भी कर रही है। पिछले साल गांधी जयंती के दिन सीएम ने गोबर से बिजली बनाए जाने की परियोजना का शुभारंभ किया था। इसके तहत अब राज्य में गोबर से ही बिजली बनाने का काम किया जा रहा है। वहीं रायपुर की सामाजिक संस्था एक पहल गोबर से ही गुलाल बनाने का काम कर रही है।

29 महिलाओं को नारी शक्ति सम्मान

लहरों की कैप्टन, किसी को जंगल-जमीन से प्यार, तो कोई गणित की गुत्थी हल करने में माहिर

राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर महिलाओं के सशक्तिकरण में उत्कृष्ट योगदान देने वाली 29 महिलाओं को 2020-21 के लिए नारी शक्ति पुरस्कार प्रदान किया। इनमें 2020 के लिए 14 और 2021 के लिए 14 पुरस्कार शामिल हैं। यह पुरस्कार महिला और बाल विकास मंत्रालय की तरफ से महिलाओं के विकास की दिशा में उल्लेखनीय काम करने वालों को दिया जाता है। 'आजादी के अमृत महोत्सव' के क्रम में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस का सप्ताह भर चलने वाला समारोह नई दिल्ली में एक मार्च, 2022 को शुरू हुआ था। इस समारोह का समापन नारी शक्ति पुरस्कार वितरण से हुआ। यह पुरस्कार 2020-21 के लिए प्रदान किया गया। 2020 का पुरस्कार समारोह कोरोना संकट के चलते टाल दिया गया था।

कई क्षेत्र की महिलाओं को मिला पुरस्कार

वर्ष 2020 के लिए नारी शक्ति पुरस्कार विजेताओं में विभिन्न क्षेत्रों की महिलाएं शामिल हैं। मसलन उद्यमशीलता, कृषि, नवोन्मेष, सामाजिक कार्य, कला, दस्तकारी, एसटीईएमएम और वन्यजीव संरक्षण। वर्ष 2021 के लिए नारी शक्ति पुरस्कार विजेताओं में भाषा-विज्ञान, उद्यमशीलता, कृषि, सामाजिक कार्य, कला, दस्तकारी, मर्चेंट नेवी, एसटीईएमएम, शिक्षा, साहित्य, दिव्यांगजन अधिकार आदि क्षेत्र की महिलाएं शामिल हैं।

14 राज्यों की ये महिलाएं सम्मानित

पुरस्कार प्राप्त करने वालों में मर्चेंट नेवी की कप्तान राधिका मेनन, सामाजिक उद्यमी अनीता गुप्ता, आर्गेनिक खेती करने वाली आदिवासी कार्यकर्ता ऊषाबेन दिनेशभाई वसावा, नवाचार के लिए विख्यात नासिरा अख्तर, इंटेल इंडिया की प्रमुख निवृति राय, डाउन सिंड्रोम से पीड़ित कथक नृत्यांगना सायली नन्दकिशोर अगवाने, सांपों को बचाने वाली पहली महिला वनिता जगदेव बोराडे और गणितज्ञ नीना गुप्ता शामिल हैं।

प्रधानमंत्री मोदी ने नारी शक्ति को किया नमन

इस मौके पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर नारी शक्ति को नमन किया है। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार सम्मान और अवसरों पर विशेष जोर के साथ अपनी विभिन्न योजनाओं के माध्यम से महिला सशक्तिकरण पर अपना ध्यान केंद्रित करती रहेगी। भारत की विकास यात्रा में अपनी नारी शक्ति को आगे रखने के लिए वित्तीय समावेषण से लेकर सामाजिक सुरक्षा, गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य देखभाल से लेकर आवास, शिक्षा से लेकर उद्यमिता जैसे कई प्रयास किए गए। आने वाले समय में ये प्रयास और जोश के साथ जारी रहेंगे। महिला दिवस पर मैं नारी शक्ति और विभिन्न क्षेत्रों में उनकी उपलब्धियों को नमन करता हूं। भारत सरकार सम्मान और अवसरों पर विशेष जोर के साथ अपनी विभिन्न योजनाओं के माध्यम से महिला सशक्तिकरण पर अपना ध्यान केंद्रित करती रहेगी।

महिलाओं ने अनेक क्षेत्रों में की उपलब्धी हासिल

राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के मौके पर देशवासियों को महिला दिवस की बधाई दी है। कोविंद ने अपने ट्वीट में कहा कि अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर सभी देशवासियों को मेरी हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं। हमारे देश की महिलाएं अनेक क्षेत्रों में उपलब्धी हासिल की है। उन्होंने आगे कहा कि आइए, आज के दिन हम सब महिलाओं एवं पुरुषों के बीच असमानता को पूर्णतया समाप्त करने का सामूहिक संकल्प लें।

इन्हें मिला नारी शक्ति पुरस्कार

राष्ट्रपति कोविंद ने जिन 29 महिलाओं को नारी शक्ति पुरस्कार दिए, उनमें मर्चेंट नेवी की कप्तान राधिका मेनन, सामाजिक उद्यमी अनीता गुप्ता, जैविक खेती करने वाली आदिवासी कार्यकर्ता उषाबेन दिनेशभाई वसावा, नवाचार के लिए विख्यात नासिरा अख्तर, इंटेल इंडिया की प्रमुख निवृति राय, 'डाउन सिंड्रोम' से पीड़ित कथक नृत्यांगना सायली नन्दकिशोर अगवाने, सांपों को बचाने वाली पहली महिला वनिता जगदेव बोराडे और गणितज्ञ नीना गुप्ता शामिल हैं।

हर क्षेत्र में आगे बढ़ती आज की नारी

हमारे देश की महिलायें आज हर क्षेत्र में पुरूषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम कर अपनी ताकत का अहसास करवा रही हैं। महिलाओं का काम अब केवल घर चलाने तक ही सीमित नहीं है बल्कि वे हर क्षेत्र में अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही हैं। परिवार हो या व्यवसाय, महिलाओं ने साबित कर दिखाया है कि वे हर वह काम करके दिखा सकती हैं जिसमें अभी तब सिर्फ पुरुषों का ही वर्चस्व माना जाता था। शिक्षित होने के साथ ही महिलाओं की समझ में वृद्धि हुयी है। अब उनमें खुद को आत्मनिर्भर बनाने की सोच पनपने लगी है। शिक्षा मिलने से महिलाओं ने अपने पर विश्वास करना सीखा है और घर के बाहर की दुनिया को जीतने का सपना सच करने की दिशा में कदम बढ़ाने लगी हैं।

भारतीय शास्त्रों में कहा गया है कि जहां नारी की पूजा होती है वहां देवता वास करते हैं। भारतीय संस्कृति में नारी का स्थान काफी ऊंचा है। वैदिक युग में समाज में नारी की भूमिका बेहद अहम थी। लेकिन कालांतर में पुरुषों की वर्चस्ववादी सोच ने महिलाओं को हाशिए पर लाकर खड़ा कर दिया। महिलाओं को अबला समझा जाने लगा। धीरे-धीरे महिलाएं अपने सम्मान के लिए आगे बढ़ने लगी और हाल के दिनों में भारत समाज

के विभिन्न क्षेत्रों में बड़ी उपलब्धि हासिल की। चाहे वो शिक्षा का मामला हो या खेलकूद का, हर क्षेत्र में महिलाएं आगे बढ़ रही हैं। इसके बावजूद बालिकाओं की संख्या कम होने, बाल विवाह, दहेज, महिलाओं के खिलाफ हिंसा, अनेक स्तरों पर शोषण और भेदभाव जैसी बुराइयां मौजूद हैं। इन बुराइयों के खिलाफ एक जंग की जरूरत है। परिवार के अंदर आज भी अधिकांश यह देखने को आया है कि महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने का मौका मिलता ही नहीं। लड़की के जवान होने पर परिवार की सबसे बड़ी चिंता उसकी शादी की होती है। अगर इतनी चिंता उसकी पढ़ाई को लेकर की जाए तो वह आत्मनिर्भर बनकर पूरे परिवार को एक नया रास्ता दिखा सकती है। कम उम्र में लड़कियों की शादी भी हमारे समाज की एक बड़ी समस्या है। लेकिन इन सभी समस्याओं के बीच महिलाओं ने प्रगति की रफ्तार रूकने नहीं दी है। आज जीवन के हर क्षेत्र में वे आगे बढ़ रही हैं। चाहे वह वायुसेना के फाइटर प्लेन उड़ाने की बात हो या फिर सेना में तैनात होकर देश की सेवा करने का मौका, हर जगह महिलाओं का दखल बढ़ रहा है। यह आत्मनिर्भरता की ओर उनकी उड़ान की एक अहम कड़ी है।

सेना में महिलाओं के दखल की बात करें तो सेना के तीनों अंगों में महिला अधिकारी कार्यरत हैं। सेना की चिकित्सा, दंत चिकित्सा और नर्सिंग से संबंधित महिला अधिकारी शामिल हैं। वहीं राज्यों की पुलिस सेवा में महिलाओं को आरक्षण देने पर अमल शुरू हो गया है। ग्राम पंचायतों में महिलाओं के लिए पद आरक्षित रखे गए हैं। अन्य सरकारी नौकरियां चाहे वह केंद्र सरकार की हों या राज्य सरकार की, सभी में महिलाओं के लिए स्थान रिजर्व रखे गए हैं।

नारी आज के बदलते परिवेश में जिस तरह पुरुष वर्ग के साथ कंधे से कंधा मिलाकर प्रगति की ओर अग्रसर हो रही है, वह समाज के लिए एक गर्व और सराहना की बात है. आज राजनीति, टेक्नोलोजी, सुरक्षा समेत हर क्षेत्र में जहां जहां महिलाओं ने हाथ आजमाया उसे कामयाबी ही मिली. अब तो ऐसी कोई जगह नहीं है, जहां आज की नारी अपनी उपस्थिति दर्ज न करा रही हो. और इतना सब होने के बाद भी वह एक गृहलक्ष्मी के रूप में भी अपना स्थान बनाए हुए है. लेकिन सिक्के का दूसरा पहलू भी विचारणीय है जहां आज भी महिलाओं को घर के बाहर न निकलने की हिदायत दी जाती है, रेप या बलात्कार होने पर आत्महत्या पर मजबूरकरने वाला समाज, कन्या भ्रूण हत्या जैसे पाप हमारे समाज के विकास में अवरोध पैदा कर रहे हैं. हाल ही में भारत ने महिला सशक्तिकरण की दिशा में अभूतपूर्व कदम उठाते हुए, देश की संसद और राज्य विधानसभाओं में एक तिहाई महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित की. महिला आरक्षण बिल के पास होने से जहां पहले से ही पंचायतों में महिलाओं की हिस्सेदारी 33प्रश से ज्यादा थी अब उम्मीद है कि देश की सरकार में भी उनकी भागीदारी बढ़ेगी. भ्रूण हत्या के मामलों में भी तेजी से वृद्धि हो रही है. इन हालात में निश्चित ही महिला आरक्षण विधेयक से महिलाओं का संख्या बल इस नकारात्मक परिदृश्य को बदलने में सहायक सिद्ध होगा.

प्रदेश के पहले ड्रोन स्कूल का मुख्यमंत्री चौहान, केन्द्रीय मंत्री तोमर व सिंधिया ने किया उद्घाटन

● पुष्पांजली टुडे

ग्वालियर। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा है कि आत्मनिर्भर मध्यप्रदेश बनाने के लिये सरकार सभी दिशाओं में काम कर रही है। इस दिशा में प्रदेश में ड्रोन तकनीक को भी प्रमुखता से अपनाया गया है। हम मध्यप्रदेश को ड्रोन तकनीक के इस्तेमाल में नंबर वन राज्य बनायेंगे। मुख्यमंत्री श्री चौहान गुरूवार को ग्वालियर में प्रदेश के पहले ड्रोन स्कूल के उद्घाटन कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री चौहान ने ग्वालियर के माधव प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान संस्थान (एमआईटीएस) में केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री नरेन्द्र सिंह तोमर व केन्द्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया के साथ प्रदेश के पहले ड्रोन स्कूल और एमआईटीएस के नवनिर्मित बॉयज हॉस्टल का उद्घाटन किया। इस अवसर पर प्रदेश भाजपा अध्यक्ष वीडी शर्मा, केबिनेट यशोधरा राजे सिंधिया, प्रभारी मंत्री तुलसीराम सिलावट, राजस्व मंत्री गोविंद सिंह राजपूत, स्वास्थ्य मंत्री डॉ. प्रभुराम चौधरी, सांसद विवेक नारायण शेजवलकर व भाजपा जिला अध्यक्ष कमल माखीजानी मौजूद थे। केन्द्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री श्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने कहा कि सिंधिया ने बताया कि इस ड्रोन स्कूल में हर माह 40 से 50 बच्चों को ड्रोन तकनीक में प्रशिक्षित किया जायेगा। इस प्रकार सालभर में लगभग 500 युवा ड्रोन पायलट तैयार होंगे। उन्होंने कहा कि मध्यप्रदेश के पांचों ड्रोन स्कूल शुरू होने पर साल भर में लगभग ढ़ाई हजार ड्रोन पायलट तैयार होंगे। केन्द्रीय मंत्री नरेन्द्र सिंह तोमर व सांसद विवेक नारायण शेजवलकर ने भी विचार व्यक्त किए। शुरुआत में एमआईटीएस के निदेशक डॉ. आरके पंडित ने स्वागत उद्बोधन दिया।

नरोत्तम मिश्रा बेस्ट मंत्री अवार्ड से सम्मानित

● पुष्पांजली टुडे

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा है कि लोकतांत्रिक व्यवस्था में जन-प्रतिनिधियों की जवाबदारी जनता के प्रति है। अतः सदन में जन-प्रतिनिधियों का व्यवहार और आचरण लोकतांत्रिक गरिमा के अनुरूप होना चाहिए। सदन में अपने व्यवहार और कार्यप्रणाली से ही विधायकगण जन-सामान्य में विधायिका की कार्य-प्रणाली के संबंध में श्रेष्ठ भाव और छवि विकसित कर सकते हैं। आने वाली पीढ़ी को सही स्वरूप में यह लोकतांत्रिक परम्पराएँ और मूल्य सौंपने की दृष्टि से हम पर यह दायित्व भी है मुख्यमंत्री श्री चौहान मध्यप्रदेश विधानसभा द्वारा आयोजित संसदीय उत्कृष्टता पुरस्कार 2021 के वितरण समारोह को संबोधित कर रहे थे। विधानसभा स्थित मानसरोवर सभागार में आयोजित कार्यक्रम की अध्यक्षता लोकसभा अध्यक्ष श्री ओम बिरला ने की। विधानसभा अध्यक्ष श्री गिरीश गौतम, विधि-विधायी कार्य

मंत्री डॉ. नरोत्तम मिश्रा, विधायक तथा पूर्व विधानसभा अध्यक्ष श्री सीताशरण शर्मा सहित मंत्रीगण, जन-प्रतिनिधि और अधिकारी उपस्थित थे। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने अपने संबोधन में पूर्व मुख्यमंत्री श्री सुंदरलाल पटवा की विधानसभा में पटवा शैली का स्मरण करने के साथ मध्यप्रदेश विधानसभा के पूर्ववर्ती सदस्यों के संस्मरणों का भी उल्लेख किया। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने बेस्ट मंत्री अवार्ड से सम्मानित होने पर विधि-विधायी कार्य तथा गृह मंत्री डॉ. नरोत्तम मिश्रा, वित्त मंत्री श्री जगदीश देवड़ा और नगरीय विकास एवं आवास मंत्री श्री भूपेन्द्र सिंह को बधाई दी। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने उत्कृष्ट विधायक सम्मान से सम्मानित होने पर विधायक सुश्री झूमा सोलंकी, श्री यशपाल सिंह सिसोदिया, श्री बहादुर सिंह चौहान, श्री जयवर्धन सिंह और पुरस्कार प्राप्त पत्रकारों तथा अधिकारी-कर्मचारियों को भी बधाई दी।

संगठन गढ़े चलो, सुपंथ पर बढ़े चलो, भला हो जिसमें देश का, वो काम सब किए चलो

महेंद्र शर्मा, रिपोर्टर ग्वालियर संभाग

दिल्ली। किसी भी संगठन की शक्ति उसके कार्यकर्ता होते हैं। कार्यकताओं का निस्वार्थ भाव व लगन से संगठन व उसके लक्ष्यों के समर्पण ही संगठन की सफलता निर्धारित करता है। स्वदेशी जागरण मंच का काम द्रुत गति से बढ़ रहा है। अपना पूरा समय संगठन को देने का निर्णय निश्चित ही बड़े त्याग एवम् संगठन तथा नेतृत्व के प्रति आस्था का धोतक होता है।

आत्मनिर्भर भारत के लिए समावेशी और स्वदेशी यह दो मूल मंत्र स्वदेशी के हैं और अकेले स्वदेशी के ही नहीं अपितु सम्पूर्ण भारत का यही मूल मंत्र है। इसी के आधार पर भारत का निर्माण किया जा सकता है ।और इतिहास को जानकर ही भविष्य निर्माण की संकल्पना की जा सकती है। वर्तमान में मोदी सरकार के आने के बाद प्रतिभा पलायन रुका है ।भारत एक अवसर हीन देश से सर्वाधिक अवसरवान देश के रूप में बदल चुका है ।प्रधानमंत्री द्वारा युवा शक्ति का सही उपयोग किया जा रहा है। कृषि उत्पादन एवं सेवा यह तीन हमारी अर्थव्यवस्था के प्रमुख भाग है। कृषि के क्षेत्र में अपार संभावनाएं हैं । स्वसहायता समूह बनाकर कृषि उत्पादों को प्रोसेसिंग कर नए रोज़गार एवं व्यापार का सृजन किया जा सकता है। ग्रामीण क्षेत्रों में भी रोज़गार की अपार संभावनाओं को स्वदेशी के माध्यम से बढ़ाया जा सकता है। देश के लिए काम और काम के पूरे दाम÷ की धारणा के साथ स्वदेशी स्वावलंबन में ग्रामीण क्षेत्रों का विकास संभव है। दिनांक 20, 21 व 22 फरवरी को दिल्ली में स्वदेशी जागरण मंच की तीन दिवसीय वर्ग बैठक संपन्न हुई। बैठक में तेलंगाना, पंजाब, उड़ीसा, मध्य प्रदेश एवम उत्तर प्रदेश आदि प्रदेशों से कार्यकर्ता शामिल हुएस्वदेशी जागरण मंच की इस 3 दिवसीय बैठक में प्रदेशों से आए हुए कार्यकताओं को पूर्णकालिक बनाकर व जिलों सौंपकर घोषणा की गई।बड़े हर्ष का विषय है कि मध्य प्रदेश के लिए 6 कार्यकर्ताओं ने पूरा समय देकर काम करने का निर्णय लिया है। इन पूर्णकालिक कार्यकर्ताओं में श्री राजेश जी पचौरी (प्रदेश कार्यालय सचिव भोपाल), श्री महेंद्र जी शर्मा (भिंड-दतिया जिले संगठन), श्री योगेश जी मरैया (मुरैना-श्योपुर जिले संगठन), श्री दशरथ जी डाबिया (उज्जैन मालवा संगठन), श्री शिवेंद्र जी कौरव (नरसिंगपुर जिला महाकोशल प्रान्त संगठन), श्री हेमंत जी रावत (भोपाल महानगर के एक जिला संगठन) शामिल है उक्त घोषणा पश्चात संगठन के सभी पदाधिकारियों ने नए बने पूर्णकालिक कार्यकर्ताओ को बधाईयां दी और कहा आप सभी के आने से संगठन की गतिविधियों का विस्तार होगा, और संगठन नव कीर्तिमान स्थापित करेगा, इन्ही मंगल कामनाओं के साथ आप सभी का अभिनंदन। घोषणा पश्चात नए पूर्णकालिक कार्यकताओ को संगठन पदाधिकारियों ने बताते हुए कहा सपनों को साकार करने का संकल्प हम सभी के मन में होना चाहिए। बिना किसी पद की लालसा के स्वदेशी का भाव मन में रखते हुए, पूर्ण निष्ठा और ईमानदारी से सतत् कार्य करते रहना है ऐसा उन्होंने कार्यकर्ताओं से आव्हान किया। स्वदेशी के कार्यक्रमों को जन मानस तक ले जाने की अपील की। रोज़गार सृजन की और युवाओं को नए दृष्टिकोण अपनाते हुए अध्ययन के साथ धनअर्जित करने के लिए उद्यम करने की बात पर बल दिया। उन्होंने कहा युवाओं को सुझाव दिया जाना है कि रोज़गार दाता बनने का विचार मन में रखे हैं ना कि रोज़गार ढूंढने का ।सामाजिक एवं धार्मिक कार्यक्रमों एवं दैनिक दिनचर्या में स्वदेशी वस्तुओं की अनिवार्यता को प्रमुखता से अपनाने का संदेश दिया।

आईजी और एसपी ने महिला पुलिसकर्मियों को किया सम्मानित

● पुष्पांजली टुडे

महिला दिवस के अवसर पर ग्वालियर पुलिस की महिला पुलिसकर्मियों द्वारा शहर के 15 मुख्य चौराहों पर यातायात व्यवस्था को संभाला गया। इस दौरान यातायात नियमों का उल्लंघन करने वाले वाहन चालकों को समझाइश दी जाकर यातायात जागरूकता के लिए पैंपलेट भी बांटे गए। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर ग्वालियर शहर की यातायात व्यवस्था को सम्हाल रही पुलिसकर्मियों का आईजी ग्वालियर जोन श्री अनिल शर्मा(भापुसे) एवं एसएसपी ग्वालियर श्री अमित सांघी(भापुसे) द्वारा शहर के चौराहों पर पहुंचकर उन्हें पुष्पगुच्छ देकर सम्मानित किया गया साथ ही उनके द्वारा किए जा रहे कार्य की सराहना भी की।

ग्वालियर जेल में महिला कैदियों के उदास चेहरों पर आई मुस्कान...

केशव पंडित जी अम्बाह...

ग्वालियर... जेल में बंद महिला कैदियों के उदास चेहरे रविवार को खिल उठे। किसी को अपने स्कूल के दिन तो किसी को अपने बचपन के दिन याद आए। मौका था अंतराष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में जेल में हुए कार्यक्रम का। जेल अधीक्षक मनोज कुमार साहू व उप जेल अधीक्षक प्रभात कुमार झा ने महिला कैदियों के लिए नवाचार करते हुए कुछ प्रतियोगिता आयोजित की।बिधि प्राधिकरण से मुख्य अथिति जयसबाल व अन्य साथी रहै इसमें महिला कैदियों ने उत्साह से हिस्सा लिया। इस दौरान जेल में रहते हुए सराहनीय कार्य करने वाली महिला कैदियों को सम्मानित भी किया गया। महिला बैरक का नजारा आम दिनों की अपेक्षा कुछ अलग रहा। जेल मनोज कुमार साहू द्वारा महिला बैरक का परिसर गुब्बारों से सजवाया था जिसमें सांस्कृति कार्यक्रम नाटक व महिला कबि द्वारा कवि सम्मेलन हुआ था यहां कार्यक्रम की शुरुआत करते हुए खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। पहचान प्रतियोगिता हुई। इसमें एक महिला कैदी झोले में से एक वस्तु निकाल रही थी। इसके बाद वह अपनी महिला कैदी को वस्तु की पहचान बता रही थी। वस्तु को बिना देखे उसके पीछे बैठी महिला कैदी उसका नाम बताने का प्रयास कर रही थी। इस बीच बैरक महिला कैदियों के ठहाकों से गूंज उठा। महिला कैदियों के मायूस चेहरों पर मुस्कान आ गई। इसके बाद महिला कैदियों ने कहा कि उन्हें अपने स्कूल और बचपन के दिन याद आ गए। जेल अधीक्षक ने बताया कि महिला बैरक में 36 महिला कैदी हैं। यह सभी अपने घर से दूर यहां बंद हैं। उनके लिए यहां महिला दिवस के उपलक्ष में कार्यक्रम किया गया। अक्सर देखा गया है कि इस दिवस पर कार्यक्रम के नाम पर खानापूर्ति की जाती है लेकिन इस बार जेल में महिला को नवाचार करते हुए उनके चेहरे पर मुस्कुराहट लाने का प्रयास किया गया। कार्यक्रम के दौरान प्रतियोगिता में विजयी होने वाली महिला कैदियों को गिफ्ट भी दिए गए। वे गिफ्ट अपनी रोजमर्रा की जिंदगी में उपयोग ला सकती हैं। इसके साथ ही जेल में रहकर सराहनीय कार्य करने वाली महिला कैदियों का सम्मान भी इस अवसर पर किया गया। कार्यक्रम में निजी संस्था की तरफ से कुछ महिलाये भी मौजूद रहीं।

देश-की-हर-पीढ़ी-के-लिए-प्रेरणास्रोत-है वीर शहीदों का बलिदान

राजगुरु और सुखदेव के साथ फांसी पर चढ़े थे भगत सिंह, अंग्रेजों ने डर के चलते तय तारीख से एक दिन पहले ही दे दी थी फांसी

23 मार्च को देशभर में शहीदी दिवस मनाया जाता है देश के वीर शहीदों को आज के दिन याद किया जाता है। 1931 में भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव को फांसी दी गई थी। कोर्ट ने तीनों को फांसी दिए जाने की तारीख 24 मार्च तय की थी, लेकिन ब्रिटिश सरकार को माहौल बिगड़ने का डर था, इसलिए नियमों को दरकिनार कर एक रात पहले ही तीनों क्रांतिकारियों को चुपचाप लाहौर सेंट्रल जेल में फांसी पर चढ़ा दिया गया। इन तीनों पर अंग्रेज अफसर सांडर्स की हत्या का आरोप था।

23 मार्च यानि देश को आजाद कराने का सपना दिखाने वाले तीन वीर सपूतों ने हंसते-हंसते अपने प्राणों की आहुति दे कर आजादी के हवन कुंड को पवित्र करते हुए फांसी के फंदे को चूम लिया था। यह दिन ना केवल भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव तीनों देशभक्त वीर सपूतों को भी भावविभोर होकर श्रद्धांजलि देने के लिए है, बल्कि उनके विचारों को याद करने और समझने के लिए भी है। जिन विचारों के कारण भारत की हर माता भगत सिंह जैसा पुत्र प्राप्त करने की प्रार्थना ईश्वर से करती थी। जिन विचारों का अनुसरण करके हिंदुस्तान की आजादी का सपना पूरा करने के लिए भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव बनकर स्वतंत्रता संग्राम में हजारों देशवासियों ने अंग्रेजों से लड़ने का फैसला लिया। अपने संक्षिप्त जीवन में वैचारिक क्रांति की मशाल जलाकर देशवासियों के हाथ में थमा कर जाने वाले उस क्रांतिकारी को याद करते हुए उसके विचारों को समझने की आवश्यकता है।

बड़े से बड़े साम्राज्य का पतन हो सकता है, आदमी को मारा जा सकता है, लेकिन विचार हमेशा जीवित रहते हैं। हमें आज आवश्यकता है भगत सिंह के विचारों की प्रासंगिकता को समझने की, आज जरूरत इस बात पर मंथन करने की है कि क्या भगत सिंह के विचार उतने ही प्रासंगिक हैं जितने कि उनके समय में थे।

भगत सिंह ने सांप्रदायिक और जातिवाद को बढ़ावा देने वाले लोगों का हमेशा विरोध किया था। वो सत्ता में ऐसा

बदलाव चाहते थे जहां आम आदमी की आवाज़ सुनी जा सके। उन्होंने एक लेख ÷मैं नास्तिक क्यों हूँ÷ को लिखकर धर्म और ईश्वर के बारे में अपने विचार प्रकट किए जिसमें लिखा है कि ÷अधिक विश्वास और अधिक अंधविश्वास खतरनाक होता है यह मस्तिष्क को मूर्ख और मनुष्य को प्रतिक्रियावादी बना देता है। जो मनुष्य यथार्थवादी होने का दावा करता है उसे समस्त प्राचीन विश्वासों को चुनौती देनी होगी, यदि वो तर्क का प्रहार न सहन कर सके तो टुकड़े टुकड़े होकर गिर पड़ेंगे। तब उस व्यक्ति का पहला काम होगा तमाम पुराने विश्वासों को धराशायी करके नए दर्शन की स्थापना के लिए जगह साफ करना। इसके बाद सही कार्य शुरू होगा जिसमें पुनः निर्माण के लिए पुराने विश्वासों की कुछ बातों का प्रयोग किया जा सकता है। भगत सिंह चाहते तो माफी मांग कर फांसी की सजा से बच सकते थे, लेकिन मातृभूमि के सच्चे सपूत को झुकना पसंद नहीं था। इसलिए महज 30 वर्ष की उम्र में ही इस वीर सपूत ने हंसते हंसते फांसी के फंदे को चूम लिया था। आज हमारे देश में पूंजीवादी शक्तियों का बोलबाला है। जिसकी वजह से अमीर गरीब के बीच की खाई चौड़ी होती जा रही है। देश का आम नागरिक सरकार की तथाकथित उदारीकरण नीतियों के कारण आजादी के बाद से आज तक भ्रम की स्थिति में है। देश का होनहार युवक बहुराष्ट्रीय कंपनियों का टेक्नो-कुली बनकर रह गया है। इन कंपनियों का भ्रमजाल ऐसा बना हुआ है कि इनकी कंपनी में कार्य करने वाले रोजगारियों का पैसा भी घूम फिर कर इन्हीं की जेबों में वापस आ जाता है। भगत सिंह ने एक लेख- ÷लेटर टू यंग पॉलिटिकल वर्कर्स÷ में युवाओं को संबोधित करते हुए आधुनिक वैज्ञानिक समाजवाद की बात कही, जिसका सीधा-सा उद्देश्य साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद से आजादी से था। भगत सिंह आज भी अपने विचारों के माध्यम से जीवित हैं, उनके विचार आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने उस समय थे।

समस्त देशवासियों को होली एवं रंगपंचमी की

हार्दिक शुभकामनाएं

सौरभ उत्तराखण्डी (उ.प्र.)

सौरभ कन्हऊआ बुंदेलखंडी (समाजसेवी)

चंबल संभाग अध्यक्ष, सर्वब्राह्मण महासभा, महामंत्री ब्रह्मेश्वर मप्र

उमाकांत शर्मा

पत्रकार चंबल संभाग

अरूण कटारे

किसान नेता अटेर

संजय करैया

शासकीय ठेकेदार

नन्दू आरौन

भिण्ड

सागर नाती

विधायक प्रतिनिधि

विस्सू कन्हऊआ

पप्पू पावई

पवन शुक्ला

अटेर

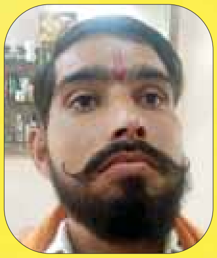

डरू तिवारी

गोरमी, मेहगांव

बसंत शुक्ला

शुक्लपुरा

हरिमोहन

कचनाव, अटेर

गोलू पुराहित

कचनावकला

दामोदर गुर्जर

पिंटो पार्क

सोनू

कनावर फूप

एल. आर. जाटव

रिटा. जेलर

विनोद सिंह राजावत

लहार

संतोष बालौठिया

कुटरौली मेहगांव

होलिया में उड़े रे गुलाल.....

भारत में त्योहार और पर्वों का अनादि काल से विशिष्ट महत्व है। हमारी संस्कृति की यह अनूठी विशेषता है कि हमारे त्योहार समाज में मानवीय गुणों को स्थापित कर लोगों में समता, समानता, सद्भाव, प्रेम और भाईचारे का सन्देश प्रवाहित करते हैं। होली देश का सबसे पुराना त्योहार है जिसे छोटे-बड़े अमीर-गरीब सभी लोग मिलजुल कर मनाते हैं। यह असत्य पर सत्य और बुराई पर अच्छाई का प्रतीक है। राग-रंग का यह पर्व वसंत का संदेशवाहक भी है। राग रंग और नृत्य इसके प्रमुख अंग हैं। फाल्गुन माह में मनाए जाने के कारण इसे फाल्गुनी भी कहते हैं।

ली का त्यौहार देश और दुनिया भर में बड़े ही उत्साह के साथ धूमधाम से मनाया जाता है हर तरफ लोग मस्ती में झूमते व एक दूसरे पर अबीर-गुलाल लगाते व रंगों की वर्षा करते दिखाई देते हैं। यह त्योहार सामाजिक समानता, राष्ट्रीय एकता और अखण्डता तथा विभिन्नता में एकता का साक्षात प्रतीक है। होली मनाते समय जात-पात, छोटा-बड़ा का भी कोई भेद नहीं होता। अमीर-गरीब, बच्चे, युवा बुजुर्ग सभी मिल-जुल कर यह त्यौहार मनाते हैं। होली रंगों के साथ गीत-संगीत और नृत्य का अनूठा त्यौहार है। इसे एकता, प्यार, खुशी, सुख और जीत का त्योहार के रुप मे भी जाना जाता है। यह हर्षोल्लास परस्पर मिलन व एकता का प्रतीक है। इस पर्व के अवसर पर लोग आपसी वैमनस्य को भुलाकर मित्र बन जाते हैं। यह त्योहार अमीर और गरीब के भेद को कम कर वातावरण में प्रेम की ज्योति प्रज्वलित करता है। निःसंदेह होली का पर्व हमारी सांस्कृतिक धरोहर है। उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, हरियाणा, राजस्थान, बिहार, पंजाब, दिल्ली आदि हिन्दी भाषी प्रदेशों में होली का पर्व भारी उल्लास और रंगों के साथ मनाया जाता है। देश के अन्य राज्य भी अलग-अलग तरीकों से होली का आनन्द उठाते हैं। ब्रज, मथुरा और बरसाने की होली विश्व प्रसिद्ध है। देश में होली पर्व को अनेक कहानियों के साथ भी जोड़कर देखा जाता है। उत्तर भारत के राज्यों में जिसमें राजस्थान भी शामिल है, भक्त प्रहलाद की कहानी विख्यात है।

फाग और धमार का गाना प्रारंभ हो जाता है। खेतों में सरसों खिल उठती है। बाग-बगीचों में फूलों की आकर्षक छटा छा जाती है। पेड़-पौधे, पशु-पक्षी और मनुष्य सब उल्लास से आह्लादित हो जाते हैं। खेतों में गेहूँ की बालियाँ इठलाने लगती हैं। किसानों का हृदय खुशी से नाच उठता है। बच्चे-बुजुर्ग सभी सब कुछ संकोच और रूढ़ियाँ भूलकर ढोलक-झाँझ-मंजीरों की धुन के साथ नृत्य-संगीत व रंगों में डूब जाते हैं। उत्साह और उमंग से भरा ये त्योहार एक दूसरे के प्रति प्रेम, स्नेह और निकटता लाता है। इसमें लोग आपस में मिलते हैं, गले लगते हैं और एक दूसरे को रंग और अबीर लगाते हैं। इस दौरान सभी मिलकर ढोलक, हारमोनियम तथा करताल की धुन पर धार्मिक और फागुन गीत गाते हैं। होली राग रंग और मौज मस्ती का बांका त्योहार है। होली हमारे लिये सांस्कृतिक और पारंपरिक उत्सव है। होली का त्योहार जैसे-जैसे नजदीक आता है वैसे-वैसे लोगों में खिलन्दड़ भाव के साथ एक अनोखा और अद्भुत उन्माद छा जाता है। विशेषकर उत्तर भारत के मैदानी राज्यों में होली बहुत धूमधाम के साथ मनाई जाती है। होली रंग बिरंगा पर्व है। रंग और पिचकारी लेकर युवा निकल पड़ते हैं और एक-दूसरे पर अबीर, गुलाल और रंग डालकर होली मनाते हैं। हर तरफ लोग मस्ती में झूमते व एक दूसरे पर अबीर-गुलाल लगाते व रंगों की वर्षा करते दिखाई देते हैं। यह त्योहार सामाजिक समानता, राष्ट्रीय एकता और अखण्डता तथा विभिन्नता में एकता का साक्षात प्रतीक है। होली मनाते समय जात-पात, छोटा-बड़ा का भी कोई भेद नहीं होता। अमीर-गरीब, बच्चे, युवा बुजुर्ग सभी मिल-जुल कर यह त्यौहार मनाते हैं। होली रंगों के साथ गीत-संगीत और नृत्य का अनूठा त्यौहार है। इसे एकता, प्यार, खुशी, सुख और जीत का त्योहार के रुप मे भी जाना जाता है। यह हर्षोल्लास परस्पर मिलन व एकता का प्रतीक है। इस पर्व के अवसर पर लोग आपसी वैमनस्य को भुलाकर मित्र बन जाते हैं। यह त्योहार अमीर और गरीब के भेद को कम कर वातावरण में प्रेम की ज्योति प्रज्वलित करता है। निःसंदेह होली का पर्व हमारी सांस्कृतिक धरोहर है। उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, हरियाणा, राजस्थान, बिहार, पंजाब, दिल्ली आदि हिन्दी भाषी प्रदेशों में होली का पर्व भारी उल्लास और रंगों के साथ मनाया जाता है। देश के अन्य राज्य भी अलग-अलग तरीकों से होली का आनन्द उठाते हैं। ब्रज, मथुरा और बरसाने की होली विश्व प्रसिद्ध है। देश में होली पर्व को अनेक कहानियों के साथ भी जोड़कर देखा जाता है। उत्तर भारत के राज्यों में जिसमें राजस्थान भी शामिल है, भक्त प्रहलाद की कहानी विख्यात है।

मुरैना अपराध व अपराधी की कमर तोड़ने को अभी बहुत कुछ करना बाकी: आशुतौष बागरी

केशब पंडित जी चम्बल ब्यूरौ...

मुरैना...शासन के दूत के रूप में आए मुरैना जिला पुलिस अधीक्षक आशुतोष बागरी ने जिले में अपराध, कोरोना और पुलिसिंग की समीक्षा के दौरान कडे शब्दो में कहा है। कि अभी बहुत काम करना बाकी है। तभी अपराध व अपराधी की कमर तोड़ी जा सकेगी। हालांकि, उन्होंने एक महीने के कार्यकाल में मुरैना स्टेशन व कोतबाली शिबिल लाइन थाना प्रभारियो की पीठ ठोंकते हुए कहा कि उनकी कार्यशैली से वे अब परिचित हैं। और बेहतर ही करेंगे क्यो कि मुरैना में जाम जैसी परिस्थिति से आमजन बहुत परैसान थे जिसमे स्बम एसपी ने फ्लैग मार्च निकाल कर मुरैना को जाम से निजात दिलाने में उपलब्धी हासिल की है

पुलिस अधीक्षक ने पुलिस लाइन सभागार में सबसे पहले आरआई कृष्ण प्रताप जी व अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक की मौजूदगी में पुलिस के राजपत्रित अधिकारियों की बैठक ली, जिसमें करीब दो घंटे तक चर्चा हुई जिसमें उन्हौने एएसपी पीरियड जो देखा उसके बारे में बताया इसके बाद इन्दौर में एसपी रहते जो उपलब्धी हासिल की उसी प्रक्रिया से मुरैना की भोगोलिक स्थिति में परिबर्तन लाने की बात कही और अभियोजन के अधिकारियों के साथ अपराधियों के खिलाफ मुकदमों की पैरवी पर चर्चा की। जिले के सभी थाना प्रभारियो की मौजूदगी में कोरोना को लेकर हुए कामकाज की समीक्षा की। इसके बाद दो घंटे के ब्रेक

के बाद शाम को एएसपी और अपर पुलिस अधीक्षक स्तर के अधिकारियों के साथ जिले में पुलिसिंग की थानावार समीक्षा का काम शुरू हुआ जो देर शाम तक जारी रहा। इस मौके पर सिटी सीएसपी अतुल सिह व क्राइम टीम साइबर सैल प्रभारी सचिन पटैल यातायत प्रभारी निखल नागर मौजूद रहे। स्टाफ अफसर ने रात में देखी पुलिस पेट्रोलिंग की हकीकत व आरटीकॉल पर बदलाब लाते हुऐ स्वम साथ रहकर चेकिंग के लिए भेजा। इस दौरान वे शहर के सर्वाधिक शराब नशे जैसे अढढा और लडकियो को परेसान करने बालो पर शिकंजा कस कमर तोडी इस दौरान उनके स्टाफ अफसर पुलिस तैनाती की व्यवस्था पर गहरी निगाहे रखी

रात में रुकेंगे और समय दिखेगे भी दिखेंगे ऐसे अधीनस्थो को कडे निर्देश दिये

प्रभारी रात में 12 बजे तक थाने में ही रुकेंगे हालांकि, उन्होंने अभी अपना कोई प्लान किसी को नहीं बताया है कि कहा किस समय भ्रमण पर निकल ले सभी बीट प्रभारियो को शक्त निर्देश दिये है शराब का कारोबार किसी की बीट में मिला तो खैर नही दण्डात्मिक कारबाही से बच नही पाओगे और अच्छा करने रहैगे तो पुरूस्कार से नबाजे जाओगे दूसरा सभी नागरिको से अपील है कि जिले में लगातार आसामाजिक तत्वो द्वारा डकैत गैंगो की अफबाहे फैलाई जारही है वो बिल्कुल असत्य है जितनी भी घटना हुई है उन्हे पुलिस द्वारा बैरीफाई किया है असत्य पाई गई है ऐसा कही कुछ भी नही है बाबरी पुरा गॉव की भी घटना संदिग्ध है पुलिस द्वारा वेरीफाई करने पर किसी भी डकैत का कोई मूवेन्ट नही है अगर जो भी ब्यक्ति अफबाह फैलाकर के डर और भय का माहौल पैदा करैगा उसके प्रति दण्डात्मिक कारबाही की जाबेगी अगर कोई ब्यक्ति डर और भय का माहौल पैदा करता है तो आप 7049101040 पर सूचित भी कर सकते हैं।

स्क्रिप्ट राईटिंग और फिल्म मेकिंग वर्कशाप में शामिल होने का मौका

● पुष्पांजली टुडे ब्यूरो सीहोर

नगर और सीहोर जिले के युवाओं तथा लेखकों के लिए स्क्रिप्ट राईटिंग एवं फ़िल्म मेकिंग वर्कशाप का आयोजन आगामी 24 मार्च से 29 मार्च तक किया जा रहा है। यह वर्कशाप पुराने भोपाल-इंदौर हाई वे पर स्थित दि आक्सफोर्ड हायर सेकंडरी स्कूल में होगी। वर्कशाप मुंबई के प्रसिद्ध स्क्रिप्ट राईटर, डायरेक्टर एवं अभिनेता श्री मोहन आज़ाद के मार्गदर्शन और निर्देशन में आयोजित होगी। वर्कशाप में भाग लेने वाले योग्य प्रतिभागियों का चयन सीहोर में अति शीघ्र निर्माण होने जा रही फिल्म के लिए भी किया जाएगा। यह चयन योग्यता के आधार पर श्री मोहन आज़ाद द्वारा किया जाएगा। अधिक जानकारी और वर्कशाप में शामिल होने के लिए वरिष्ठ पत्रकार श्री रघुवर गोहिया के मो. 9425083827 पर संपर्क कर पंजीयन कराया जा सकता है।

भोपाल रियासत के दौर से नया दौर तक
हमारा सिनेमा और सीहोर

रघुवर दयाल गोहिया

भोपाल/सीहोर सीहोर में सिनेमा का इतिहास बहुत पुराना है। आज़ादी के दौर के बहुत पहले यहां लगभग 1940 में टॉकीज की शुरुआत हो गई थी। एक जमाने में यहां चार से पांच टॉकीज हुआ करते थे। इनके नाम सीहोर टॉकीज, अमर टॉकीज, नरेंद्र टूरिंग टॉकीज, बिजली घर केम्पस वाला टॉकीज और संजय टॉकीज हुआ करते थे।

बिजली घर चौराहा के पास एक टॉकीज हुआ करता था जो खुले मैदान में बना हुआ था। वक्त के साथ सिनेमा संस्कृति में भी काफी तेजी से बदलाव हुआ है। अब तो हालत यह है कि सीहोर और उसके आसपास के इलाकों में कई फिल्मों की शूटिंग आये दिन होती रहती है।

भोपाल रियासत के दौर में जब द्वितीय विश्व युद्ध चल रहा था तब तत्कालीन हिज हाईनेस के जन्मदिन के अवसर पर बिजली घर वाले टॉकीज में सीज़न टिकट पर फ़िल्म दिखाई गई थी। सेकंड क्लास के इस दुर्लभ टिकट की कीमत एक रुपये रखी गई थी। इस दौरान जो इनकम हुई थी उसे वार कॉन्ट्रीब्यूशन के रूप में भेजा गया था।

सीहोर जिले की बुधनी तहसील में अपने जमाने की सुपर हिट फिल्म *नया दौर* की शूटिंग भी हुई थी। इस फिल्म में दिलीप कुमार और अजीत मुख्य कलाकार थे। यह भी बताया जाता है कि सीहोर में पृथ्वीराज राज कपूर भी आये थे।

इनके अलावा एक चेरिटी शो बीएसआई ग्राउंड पर आयोजित किया गया था। तब अपने जमाने के प्रसिद्ध फ़िल्म स्टार नवीन निश्चल, नरगिस, जानी वाकर, संजय दत्त और बिंदिया गोस्वामी का आगमन यहां हुआ था। बाद के वर्षों में चुनावी गतिविधियों के चलते बलराज साहनी, शर्मिला टैगौर और राज बब्बर जैसे दिग्गज अभिनेताओं का जलवा भी इस शहर ने देखा है। रजा मुराद और अन्नु कपूर का भी सीहोर से काफी घनिष्ट नाता रहा है।

रजा मुराद पूर्व विधायक श्री रमेश सक्सेना के नजदीकी मित्रों में शुमार हैं। वहीं अन्नु कपूर तत्कालीन एसपी श्री वरुण कपूर के आमंत्रण पर स्थानीय पूनी संयंत्र में आयोजित किये गये कार्यक्रम में शामिल हुए थे।

इसके बाद से इस शहर में अनेक नामी हस्तियों ने अपनी अपनी फिल्मों की शूटिंग की है। इन में अक्षय कुमार, कैटरीना कैफ, रवि किशन और किरण राव जैसी दिग्गज हस्तियों के नाम शुमार हैं।

हाल ही में गत जनवरी माह में प्रसिद्ध *फ़िल्म चांदनी बार* के स्क्रिप्ट राईटर, डायरेक्टर और अभिनेता श्री मोहन आज़ाद ने भी सीहोर की विजिट की थी। वह यहां के लोगों से वादा करके गए थे कि आने वाले दिनों में यहां फ़िल्म से संबंधित वर्कशाप करेंगे।

अपने वायदे के मुताबिक आगामी 24 मार्च से 29 मार्च तक यह वर्कशाप सीहोर में आयोजित होने जा रही है जिसमें स्क्रिप्ट राईटिंग और फ़िल्म मेकिंग से जुड़ी जानकारियां प्रतिभागियों को दी जाएंगी। साथ ही आगामी दिनों में श्री आज़ाद द्वारा सीहोर में फ़िल्म का निर्माण भी किया जाने वाला है।

वक्त के साथ मनोरंजन के साधन, तौर तरीक़े भी बदले हैं। संचार क्रांति ने बहुत सारी चीजों को बदल कर रख दिया है। फिर भी टॉकीज और फिल्मों का आकर्षण बरकरार है।

समय की मार के चलते सीहोर से अमर टॉकीज, संजय टॉकीज, नरेंद्र टूरिंग टॉकीज का तो अस्तित्व ही समाप्त हो गया। इसके बाद सीहोर टॉकीज को नगर के प्रतिष्ठित राय परिवार ने खरीद लिया और उसे आधुनिक साज सज्जा व टेक्नालॉजी से अपडेट कर उसका नाम *लीसा टॉकीज* रख दिया। अब नगर में *लीसा-1 और लीसा-2* टॉकीज का ही कुशलता के साथ श्री रिंकू जायसवाल के द्वारा संचालन किया जा रहा है। यहां आधुनिक टेक्नालॉजी के साथ दर्शकों को बेहतर सुविधाएं प्रदान की गईं हैं। हालत यह है कि किसी समय में यहां के लोग फ़िल्म देखने के लिए भोपाल जाते थे। लेकिन अब लीसा टॉकीज में फ़िल्म देखने के लिए भोपाल से लोग यहां आते हैं और टॉकीज की दिल से प्रशंसा करते हैं। सीहोर में इस समय भले ही कोई फैक्ट्री या बड़ा उद्योग न हो लेकिन आने वाले दिनों में यहां फ़िल्म निर्माण को लेकर अपार संभावनाएं बन रही ही हैं। आने वाले दिनों में यहां फ़िल्म का निर्माण और शूटिंग भी होना है। इस से यहां में युवाओं को अपनी प्रतिभा दिखाने और रोजगार प्राप्त करने का भरपूर अवसर मिलेगा। इसमें कोई संदेह नहीं है।

ग्वालियर में जब हुई सिंधिया सत्ता की स्थापना

डॉ. सुरेश सम्राट
वरिष्ठ संपादक, लेखक
9406502099

महादजी सिंधिया का दत्तक उत्तराधिकारी दौलतराव सिंधिया अत्यंत महत्वाकांक्षी और असीम हौसले से भरा हुआ नवयुवक था। महादजी के पराक्रम की परंपरा को आगे बढ़ाते हुए उसने कई कदम उठाए। लेकिन सन् 1794 से 1810 तक, जब तक उसने ग्वालियर को अपनी राजधानी नहीं बना लिया वह संघर्षों से जूझता रहा। ग्वालियर को अपनी सत्ता का केन्द्र बनाने पर उसे अंग्रेजों ने ग्वालियर रियासत माना जबकि स्थानीय स्तर पर उसे सिंधिया स्टेट कहा गया। ग्वालियर रियासत सन् 1810 से शुरू होकर सन् 1948 तक निर्बाध गति से चली। आजादी के बाद सन् 1948 में उसे मध्य भारत राज्य में शामिल करते हुए भारतीय गणराज्य का हिस्सा बना लिया गया। इन 139 वर्षों में दौलतराव सिंधिया सहित पांच शासकों ने ग्वालियर रियासत पर राज्य किया। हालांकि 1810 से पूर्व मराठशाही के तहत इस क्षेत्र पर कन्हेरखेड़ के पाटिल, राणोंजी सिंधिया ने सन् 1726 से ही अधिकार जमा लिया था, जिसे सन् 1810 तक उसके उत्तराधिकारियों ने संभाला। इस तरह कहा जा सकता है कि सन् 1726 से सन् 1948 तक ग्वालियर क्षेत्र पर किसी न किसी रूप में सिंधियाओं की सत्ता कायम रही। महाराष्ट्र में सतारा से 12 मील दूर कन्हेरखेड़ा नामक एक गांव है। इसी कन्हेरखेड गांव से सिंधिया घराने की उत्पत्ति हुई। कन्हेरखेड के पटेलों के वंशज राणोजी को प्रथम पेशवा बालाजी विश्वनाथ के साथ कार्य करने का अवसर मिला। अपनी निष्ठा और पराक्रम के बल पर वह पेशवाओं की नजरों में इतनी तेजी से उठा कि प्रांरभिक तीन पेशवाओं के साथ कार्य करते हुए उसने मराठा सेना में अपनी पृथक पहचान बना ली। उन्हें पेशवा का प्रमुख सरंजामी सरदार बना दिया गया। सरंजामी सरदार के रूप में उसे मालवा का विशाल क्षेत्र मिला, जिसमें आगे चलकर ग्वालियर क्षेत्र भी जुड़ा। चूंकि राणोजी का कन्हेरखेड के सेंन्द्रक नामक क्षत्रिय घराने से ताअल्लुक था, अतः पहले शिनदे और फिर उसे सिंधिया कहा जाने लगा। मालवा का क्षेत्र प्राप्त होने के बाद राणोजी ने सरंजामी सरदार की हैसियत से उत्तरी भारत में तेजी से अपनी पकड़ बनाई। बाद में विजित क्षेत्र उसे जागीर में दे दिए गए। इस प्रकार राणोजी सिंधिया ने सिंधिया घराने की नींव रखी। इस घराने की एक दूसरी शाखा राणोजी के परिजन जामोजी से जुड़ी है। हालांकि जाणोजी का ग्वालियर की सिंधिया स्टेट से कोई सीधा संबंध नहीं रहा। लेकिन बाद में जाणोजी शाखा के वंशज जनकोजीराव सिंधिया और जयाजीराव सिंधिया को दत्तक पुत्रों के रूप में ग्वालियर रियासत पर राज्य करने का अवसर मिला।

सिंधिया घराने के संस्थापक राणोजी का सन् 1745 में शुजालपुर में निधन हो गया। उसके पांच पुत्रों, जयप्पा, दत्ताजी, ज्योतिबा, तुकोजी और महादजी में सबसे बड़ा पुत्र जयप्पा सन् 1745 में राणोजी की जागीर का उत्तराधिकारी बना जयप्पा के निधन के बाद सन् 1759 में जयप्पा का नाबालिग पुत्र जनकोजी प्रथम अपने चाचा दत्ताजी के संरक्षण में उत्तराधिकारी बना। सन् 1761 की पानीपत की तीसरी लड़ाई में, जब अहमद शाह अब्दाली ने मराठों को बुरी तरह पराजित कर दिया तब राणोजी सिंधिया का पांचवा पुत्र महादजी ही जीवित बचा था। लेकिन उसे राणोजी की जागीर का उत्तराधिकार प्राप्त करने के लिये कड़ा संघर्ष करना पड़ा। अन्ततः पेशवा ने उसे राणोजी सिंधिया का उत्तराधिकारी मानते हुए जागीर सौंप दी। तब महादजी सिंधिया ने राष्ट्रीय स्तर पर पराक्रम दिखाते हुए मराठा-शक्ति में अपनी वह पहचान बनाई कि कुछ मराठा सरदार और पेशवा के सलाहकार उससे ईर्ष्या करने लगे। सन् 1794 में जब महादजी का निधन हुआ तब उत्तर भारत के अलावा भी बहुत बड़े भूभाग पर उसका अधिकार था। उसके उत्तराधिकारी दौलतराव सिंधिया ने जिस समय महादजी की विरासत संभाली उस समय उसके सामने अनेक चुनौतियां थीं। होल्कर के सिंधियाओं के साथ जो मतभेद थे, वे दौलतराव सिंधिया के भी आड़े आते रहे। सन् 1810 में जब दौलतराव सिंधिया ने उज्जैन की जगह लश्कर ग्वालियर को अपनी राजधानी बनाया तब उसके हाथ से महादजी से मिली विरासत का बहुत बड़ा भू-भाग निकल चुका था परन्तु मान्य ग्वालियर रियासत के शासन के रूप में उसने सन् 1827 तक राज्य किया और एक मजबूत रियासत के रूप में ग्वालियर की पहचान बनाई।

दौलतराव सिंधिया के भी कोई पुत्र नहीं था। अतः उसने सिंधिया घराने की जाणोजी शाखा के वंशज मुकुटराव को गोद लिया, जो 1827 में जनकोजीराव सिंधिया के नाम से दौलतराव सिंधिया का उत्तराधिकारी बना। नाबालिग होने के कारण सन् 1833 तक वास्तविक सत्ता दौलतराव सिंधिया की पत्नी बैजाबाई के हाथ में रही, जिन्हें क्वीन रीजेन्ट कहा गया। इस प्रकार जनकोजीराव को सन् 1833 से 1843 तक दस वर्ष के राज्य करने का मौका मिला। जनकोजीराव के भी कोई पुत्र नहीं था। अतः उसने भी जाणोजी शाखा के वंशज नाबालिग भागीरथ राव को गोद लिया। नाबालिग यही भागीरथ राव, जनकोजीराव के निधन के बाद सन् 1843 में जयाजीराव सिंधिया के नाम से गद्दी पर बैठा। बालिक होने तक सत्ता रीजेंट के माध्यम से चली। जयाजीराव सिंधिया ग्वालियर रियासत के पहले शासक थे, जिन्हें अपना उत्तराधिकारी गोद नहीं लेना पड़ा। उसके दो पुत्र थे, बलवंतराव भैया और माधौराव सन् 1886 में जयाजीराव के निधन के बाद माधौराव सिंधिया ग्वालियर रियासत के शासन बने। माधौराव सिंधिया ने 1886 से 1925 तक लगभग 39 वर्ष राज्य किया। सन् 1925 में माधौराव सिंधिया के आकस्मिक निधन के बाद उनके पुत्र जीवाजीराव सिंधिया ने ग्वालियर रियासत की सत्ता संभाली। 15 अगस्त 1947 को भारत के आजाद होने के बाद जब रियासतों का विलीनकरण हुआ तब सन् 1948 को ग्वालियर रियासत को भी उसमें शामिल कर लिया गया। इस प्रकार सन् 1810 से ग्वालियर में राजधानी बनाने के बाद सन् 1848 तक ग्वालियर रियासत के नाम से सिंधियाओं की सत्ता रही।

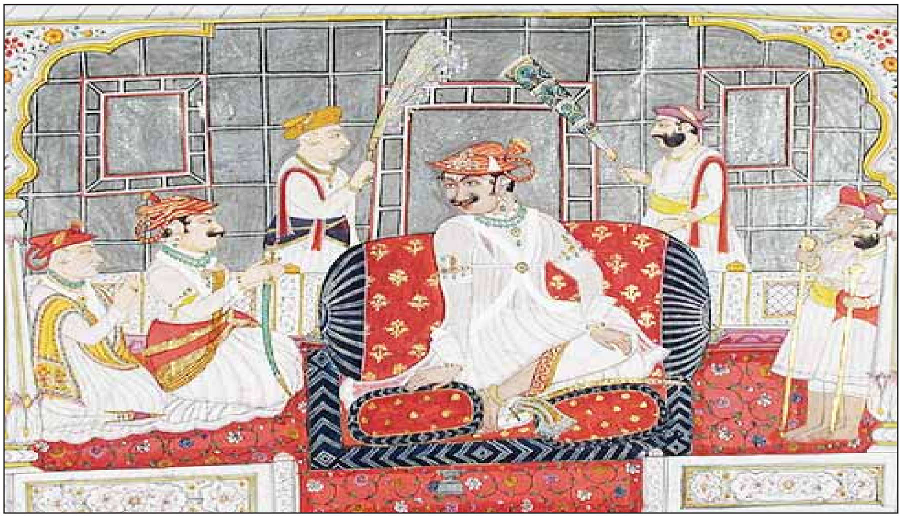

पत्रकारिता में बनाएं शानदार कैरियर

मीडिया एक चमकदार और ग्लैमरस इंडस्ट्री दिखती है इसकी चमक-धमक देखकर अब अधिकतर छात्र मास कम्यूनिकेशन और जर्नलिजम का कोर्स कर रहे हैं। मीडिया में नौकरी के बहुत सारे अवसर हैं। जरूरी नहीं है कि आप किसी न्यूज चैनल या अखबार में ही नौकरी करें कोर्स करने के बाद आप एडवरटाइजिंग एजेंसी, फिल्म लाइन या पब्लिशिंग हाउस में भी काम कर सकते हैं यहां हम आपको मीडिया फील्ड में करियर बनाने के बारे में शुरू से बता रहे हैं।

एक बेहतर और बढ़िया करियर बनाना सब की चाहत है। हर कोई अपने लाइफ में एक ऐसा करियर बनाना चाहता है जो आगे चल के अपने लिए कामयाबी के झंडे गाड़े। इसी क्रम में एक करियर आता है पत्रकारिता यानि मास कम्युनिकेशन की। अमूमन ये बोला जाता है कि यह फील्ड अधिकतर पुरुष प्रधान के लिए लिए बना है लेकिन पिछले कई सालों में महिलाएं भी इसमें अव्वल रही है। आज पत्रकारिता के फील्ड में अगर कोई पुरुष अग्रणी है तो महिलाएं भी कम नहीं है। उदहारण के लिए आप टीवी चैनलों पर खुद देख सकती है। बहरहाल, इस फिल्ड में जितना कामयाबी है उतना ही प्रांरभिक दिक्कते भी है। मास मिडिया अथवा मास कम्युनिकेशन पत्रकारिता का ही स्वरूप है। पत्रकारिता और मास कम्युनिकेशन की फील्ड में अगर आपको अपना करियर बनाना है तो इस आर्टिकल को बखूबी अच्छे से पढ़ना होगा। तो चलिए जानते हैं इन्हीं आयामों को जिसके जरिए आप पत्रकारिता में एक बेहतर करियर बना सके-

किसी भी फील्ड में जाने से पहले आप हमेशा अपने लक्ष्य को निर्धारित कर ले कि हमें इस फील्ड में ही जाना है। मै इसलिए बोल रहा हूं कि मास मिडिया में आज सिर्फ एक आयाम नहीं है बल्कि बहुत सारे फील्ड है। पत्रकारिता सिर्फ टीवी चैनलों पर दिखने वाली कार्य नहीं है बल्कि इसके कई रूप है। सबसे पहले यहं निर्धारित करें कि हमें पत्रकारिता के फील्ड में कौन सा एरिया सेलेक्ट करना है। क्योंकि आज पत्रकारिता का कोर्स बहुत ही बड़ा होगा है जैसे प्रिंट, रेडियो, वेब, एंटरटेनमेंट, जनसंपर्क आदि से जुड़कर अपना करियर संवार सकती है।

दूसरा कार्य-

किसी भी फील्ड में करियर बनाने के लिए एक डिग्री का होना बहुत ज़रूरी है। पत्रकारिता में भी करियर बनाने के लिए आपके पास कुछ डिग्री का होना अनिवार्य है। सबसे पहले आप 12 वी के बाद किसी मास मिडिया संस्था में दाखिला ले और वहां से बी.ए मास मीडिया का डिग्री ले। मास मीडिया का डिग्री ही आपको पत्रकारिता जैसे फील्ड में करियर को सवांरने में मदद मिलेगीं।

प्रिंट पत्रकारिता

प्रिंट पत्रकारिता एक बेहतर आप्शन हो सकता है जिसके सहायता से अपनी करियर को सवांर सकती है। प्रिंट पत्रकारिता का अगर मूल रम निकले तो इसे आम बोल चला के भाषा में लिखना बोलते हैं। जो हर रोज आपके घरों में पेपर आते और जो खबर उससे लिखे रहते हैं उसी को आज के दौर में प्रिंट पत्रकारिता कहते हैं।

वेब जर्नलिज्म

आज कल अगर इन्टरनेट का जमाना है तो इसका मतलब है बेव जर्नलिज्म का क्रेज। जी हां, आज हर कोई खबर को चलते चलते और किसी कम को करते-करते पढ़ लेना चाहता है। इसी स्वरुप को देखते हुए आप वेब जर्नलिज्म तेजी के साथ बढ़ रहा है। अगर आप इन्टरनेट के खबरों में रूचि रखते हैं तो बेव जर्नलिज्म एक बेहतर फील्ड हो सकता है।

रेडियो जर्नलिज्म

रडियो जर्नलिज्म भी आज के पत्रकारिता में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। अगर आप को लगता है कि आप अपने स्वर के माध्यम से खबरों को आसानी से जन के पास पंहुचा सकती है तो रेडियो जर्नलिज्म भी कर सकती है।

मास कम्यूनिकेशन या जर्नलिजम का कोर्स करें

मीडिया में करियर बनाने के लिए आपके पास बेसिक क्वालिफिकेशन होनी चाहिए और वो है मास कम्यूनिकेशन या जर्नलिजम कोर्स की डिग्री या डिप्लोमा। आपके पास शैक्षिक योग्यता होने के बाद ही आपकी दूसरी योग्यताओं पर विचार किया जाएगा। मास कम्यूनिकेशन कोर्स आप किसी अच्छे संस्थान से कर सकते हैं। बेनेट यूनिवर्सिटी ने हाल ही में टाइम्स स्कूल ऑफ मीडिया के जरिए मास कम्यूनिकेशन और जर्नलिजम कोर्स शुरू किया है। आप यहां से कोर्स कर सकते हैं।

तय करें आपको मीडिया में कहां जाना है

मास कम्यूनिकेशन और जर्नलिजम कोर्स करने के बाद आप तय करें कि आपको कहां जाना है आप टेलिविजन यानी न्यूज चैनल्स जॉइन करना चाहते हैं या रेडियो, प्रिंट, डिजिटल मीडिया, एड एजेंसी आदि में नौकरी करना चाहते हैं। यह आप अपनी पसंद और प्राथमिकता के आधार पर तय करें।

इंटर्नशिप के लिए करें अप्लाई

करियर की शुरूआत आप इंटर्नशिप से कर सकते है जिसमें आपको काफी कुछ सीखने को मिलेगा। इंटर्नशिप करते-करते ही नौकरी के लिए भी अप्लाई करें। इसके लिए आप संबंधित कंपनियों की वेबसाइट पर जाकर अप्लाई कर सकते हैं या इन कंपनियों के एचआर सेक्शन में कॉल करके भी पूछ सकते हैं।

शिक्षा/कैरियर

तकनीकी शिक्षा और बेहतर कैरियर

लद्योगिकी जीवन और समाज के हर पहलू को छू रही है। आजादी के बाद से, हमारे देश में तकनीकी शिक्षा प्रणाली काफी बड़े आकार की प्रणाली के रूप में उभरी है, जो देश भर में संस्थानों में प्रमाण पत्र, डिप्लोमा, डिग्री, स्नातकोत्तर डिग्री और डॉक्टरेट स्तर पर विभिन्न प्रकार के व्यापारों और विषयों में शिक्षा और प्रशिक्षण के अवसर प्रदान करती है।

भारत में उच्च शिक्षा का सामान्य परिदृश्य वैश्विक गुणवत्ता मानकों के बराबर नहीं है। इसलिए, देश के शैक्षिक संस्थानों की गुणवत्ता के बढ़ते मूल्यांकन के लिए पर्याप्त औचित्य है। तकनीकी शिक्षा के मानक को बनाए रखने के लिए, अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद (एआईसीटीई) की स्थापना 1945 में हुई थी। एआईसीटीई मानदंडों और मानकों की योजना, निर्माण और रखरखाव, मान्यता के माध्यम से गुणवत्ता आश्वासन, प्राथमिक क्षेत्रों में वित्त पोषण के लिए जिम्मेदार है। निगरानी और मूल्यांकन, प्रमाणीकरण और पुरस्कारों की समानता बनाए रखना और देश में तकनीकी शिक्षा के समेकित और एकीकृत विकास और प्रबंधन को सुनिश्चित करना।

यह महत्वपूर्ण क्यों है?

भारत, विज्ञान और प्रौद्योगिकी की उम्र देख रहा है। आधुनिक युग में तकनीकी शिक्षा की भारी मांग है। उम्र में विकसित जीवन का पैटर्न कुछ पचास साल पहले हमारे समाज में मिलने वाले व्यक्ति से बहुत अलग है।

कई मामलों में पेशेवर तकनीकी शिक्षा द्वारा सामान्य शिक्षा को प्रतिस्थापित किया गया है। तकनीकी शिक्षा रोजगार और सफल करियर के लिए अच्छा अवसर प्रदान करती है। तकनीकी शिक्षा समग्र शिक्षा प्रणाली में एक बड़ा हिस्सा योगदान देती है और हमारे देश के सामाजिक और आर्थिक विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भारत में, तकनीकी शिक्षा को विभिन्न स्तरों पर प्रदान किया जाता है, जैसे कि शिल्प कौशल, डिप्लोमा और डिग्री, स्नातकोत्तर और विशेष क्षेत्रों में अनुसंधान, तकनीकी विकास और आर्थिक प्रगति के विभिन्न पहलुओं को पूरा करना।

इसके अलावा, बेरोजगारी की इस उम्र में, केवल तकनीकी शिक्षा नौकरी और आरामदायक रहने का आश्वासन दे सकती है, जो लोग अभी भी पारंपरिक संस्थानों में हैं, परीक्षा उत्तीर्ण करते हैं, जिनके पास आधुनिक प्रणालियों में थोड़ी प्रासंगिकता है, उन्हें रोजगार के अवसर नहीं मिलते हैं और, स्वाभाविक रूप से, वे निराशा के पीड़ित बनने के लिए खत्म हो जाते हैं और खुद को आधुनिक दुनिया के मुख्यधारा से अलग कर पाते हैं। किसी भी विशेषज्ञता और पेशेवर कौशल के बिना उनके स्टीरियो टाइप की गई सामान्य शिक्षा के साथ वे मानव समाज की प्रगति और समृद्धि में योगदान करने के लिए कुछ भी हासिल नहीं करते हैं। वे इस बारे में काफी जानते हैं और यह जागरूकता उन्हें निराशाजनक छोड़ देती है।

यह सिर्फ एक अंत नहीं था, यह आधुनिक भारत का सपना था और उस सपने को साकार करने के लिए तकनीकी शिक्षा को उचित महत्व दिया गया था।

संभावनाएं और पहल

भारत उच्चतम क्षमता वाले स्नातकों के उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है, लेकिन इसकी आबादी की तुलना में केवल कुछ ही उच्च गुणवत्ता वाली तकनीकी शिक्षा प्राप्त करते हैं। भारत ने वर्षों से तकनीकी शिक्षा की गुणवत्ता और उपलब्धता को काफी हद तक मजबूत किया है, जो स्नातक की रोज़गार दर को दोगुना कर रहा है, जो अब भारतीय उद्योग की जरूरतों के अनुरूप बेहतर हैं।

इसलिए, पारंपरिक अध्ययन का समर्थन करने और तकनीकी शिक्षा को पढ़ाने की सख्त जरूरत है, क्योंकि इससे न केवल देश के विकास में मदद मिलेगी, बल्कि वह कौशल रखने वाले व्यक्ति भी होंगे। तकनीकी शिक्षा, शिक्षा का एक हिस्सा है, जो सीधे विनिर्माण और सेवा उद्योगों में आवश्यक जानकारी और कौशल प्राप्त करने से संबंधित है। तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने के लिए, भारत में दो संरचनात्मक धाराएं हैं - औपचारिक और अनौपचारिक। पॉलिटेक्निक, औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान, औद्योगिक प्रशिक्षण केंद्र, मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा माध्यमिक शिक्षा के व्यावसायिककरण की केंद्रीय प्रायोजित योजना भारत में तकनीकी शिक्षा के औपचारिक स्रोतों में से एक हैं। जबकि अल्पकालिक तकनीकी पाठ्यक्रम प्रदान करने वाले स्वयं-शिक्षण और छोटे निजी संस्थान अनौपचारिक शिक्षा के अंतर्गत आते हैं।

भारत में नए औद्योगिक और श्रमिक रुझानों ने स्पष्ट रूप से तकनीकी शिक्षा की आवश्यकता को निर्दिष्ट किया है, लेकिन माध्यमिक स्तर की शिक्षा में तकनीकी शिक्षा का आधार मजबूत होना चाहिए और छात्रों को इस क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए एक स्पष्ट मार्ग बनाया जाना चाहिए। तकनीकी विश्वविद्यालयों के साथ उच्च गुणवत्ता की अधिक तकनीकी डिग्री स्थापित की जानी चाहिए।

संबंधित मुद्दे

तकनीकी शिक्षा विशिष्ट व्यापार, शिल्प या पेशे के ज्ञान प्रदान करती है। तकनीकी शिक्षा, यानी, कुछ कला या शिल्प में शिक्षा एक बहुत बड़ी आवश्यकता है। हम उस समय में रह रहे हैं, जब शिक्षा की पुरानी अवधारणाओं में बदलाव आया है। हमें उदार शिक्षा की आवश्यकता नहीं है, शिक्षा जो ललित कला, मानविकी, सांस्कृतिक पैटर्न और व्यवहार में प्रशिक्षण का तात्पर्य है और इसका उद्देश्य मनुष्य के व्यक्तित्व को विकसित करना है, क्योंकि यह स्वतंत्रता दिवसों में था। हमें कुशल श्रमिकों की जरूरत है। हर साल करोड़ों रुपए के निर्मित सामान आयात किए जा रहे हैं। भोजन की कमी है। हमारे उद्योग अभी तक बचपन में हैं। हमें इंजीनियर मनुष्यों की जरूरत है। मकई के उत्पादन में वृद्धि के लिए हमें मशीनीकृत खेती की जरूरत है। यह सब केवल तभी संभव है, जब हम अपनी शिक्षा में तकनीकी बदलाव दें और यदि कुशल श्रम उपलब्ध कराया जाए।

बायोकेमिस्ट्री में अपना कॅरियर कैसे बनाएं, जानिये आवश्यक कौशल, स्कोप और वेतन

बायोकेमिस्ट कोशिकाओं और अंगों के भीतर और उनके बीच संचार, मस्तिष्क के कार्य के तंत्र और वंशानुक्रम और रोग के रासायनिक आधारों में अपनी रुचि दिखाते हैं। जैव रसायन चिकित्सा, जैव प्रौद्योगिकी, पशु चिकित्सा और कृषि में व्यावहारिक प्रगति का आधार प्रदान करता है।जैव रसायन मूल रूप से कोशिकीय और आणविक स्तर पर जैविक प्रक्रियाओं के अध्ययन के लिए रसायन विज्ञान के सिद्धांतों का अनुप्रयोग है। जैव रसायन जीवित जीवों के रसायन विज्ञान और जीवित कोशिकाओं में होने वाले परिवर्तनों के आणविक आधार को देखता है और इस प्रकार यह जीवन विज्ञान और रासायनिक विज्ञान दोनों है। जैव रसायन हमारे शरीर को बनाने वाले घटकों को तोड़ने, चलाने, बनाने और मरम्मत करने वाली रासायनिक प्रतिक्रियाओं को सीखने के बारे में है। जैव रसायन बुनियादी विज्ञानों में सबसे व्यापक होने के कारण इसमें कई उप-विशिष्टताएं शामिल हैं जैसे कि जैव-रासायनिक विज्ञान, भौतिक जैव रसायन, तंत्रिका रसायन, क्लीनिकल जैव रसायन, आणविक आनुवंशिकी, जैव रासायनिक औषध विज्ञान और प्रतिरक्षा रसायन। बायोकेमिस्ट कोशिकाओं और अंगों के भीतर और उनके बीच संचार, मस्तिष्क के कार्य के तंत्र और वंशानुक्रम और रोग के रासायनिक आधारों में अपनी रुचि दिखाते हैं। जैव रसायन चिकित्सा, जैव प्रौद्योगिकी, पशु चिकित्सा और कृषि में व्यावहारिक प्रगति का आधार प्रदान करता है। एक बायोकेमिस्ट यह निर्धारित करना चाहता है कि ऐसी प्रक्रियाओं में प्रोटीन, न्यूक्लिक एसिड, लिपिड, विटामिन और हार्मोन जैसे विशिष्ट अणु कैसे कार्य करते हैं।

जैव रसायनज्ञों के लिए आवश्यक योग्यता-एक प्रतिष्ठित संस्थान से बायोकैमिस्ट्री में स्नातक- बीएससी बायोकैमिस्ट्री। स्नातकोत्तर- यदि आप इस क्षेत्र में अपना करियर आगे बढ़ाना चाहते हैं तो स्नातक होने के बाद एमएससी बायोकैमिस्ट्री

जरूरी है। कुछ संस्थान क्रस्र/रूरू बायोकेमिस्ट्री इंटीग्रेटेड कोर्स ऑफर करते हैं जो एक अच्छा विकल्प भी हो सकता है। एमएससी बायोकैमिस्ट्री स्नातकोत्तर, जो अनुसंधान में शामिल होना चाहते हैं, उन्हें नेट / गेट परीक्षा उत्तीर्ण होनी चाहिए, क्योंकि अधिकांश सरकारी और निजी संस्थान इसे नौकरी चयन के लिए एक आवश्यक मानदंड के रूप में रखते हैं। जैव रसायन अनुसंधान क्षेत्र में एक समृद्ध कॅरियर के लिए पीएचडी डिग्री होना जरूरी है। कुछ विश्वविद्यालय चार साल का स्नातक पाठ्यक्रम प्रदान करते हैं जिसमें पहले से ही एक अनुसंधान प्लेसमेंट वर्ष शामिल होता है, जो आमतौर पर फार्मास्युटिकल या बायोटेक्निकल उद्योग या एक शोध संस्थान में किया जाता है।

आवश्यक स्किल्स-आवश्यक डिग्री का स्तर स्थिति के आधार पर भिन्न होता है। कई सेटिंग्स के लिए बायोकैमिस्ट्री में स्नातक की डिग्री पर्याप्त है, जबकि उन्नत शोध कार्य के लिए डॉक्टरेट की डिग्री अनिवार्य होती है। बायोकैमिस्ट्री या संबंधित क्षेत्र में स्नातक डिग्री प्रोग्राम में छात्र आमतौर पर गणित, भौतिकी और कंप्यूटर विज्ञान के पाठ्यक्रमों के अलावा, जैविक और रासायनिक विज्ञान में पाठ्यक्रम लेते हैं। बायोकेमिस्ट के लिए गणित और कंप्यूटर विज्ञान के पाठ्यक्रम महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि उन्हें जटिल डेटा विश्लेषण करने में सक्षम होना चाहिए। स्नातक होने के बाद कुछ कार्य अनुभव प्राप्त करके अवसरों में सुधार किया जा सकता है जैसे कि किसी कंपनी या शोध प्रयोगशाला में इंटर्नशिप। इच्छुक जैव रसायनज्ञों के लिए प्रयोगशाला अनुभव आवश्यक है; उन्नत शोध पदों के लिए पोस्टडॉक्टरल शोध कार्य की आवश्यकता हो सकती है। चिकित्सा, वैज्ञानिक, क्वेरी और स्प्रेडशीट सॉफ्टवेयर का ज्ञान मौलिक है। विभिन्न प्रकार के उपकरण जैसे गैस क्रोमैटोग्राफ और इलेक्ट्रॉन माइक्रोस्कोप का उपयोग सूक्ष्म जीवविज्ञानी द्वारा उचित रूप से किया जाना चाहिए। बायोकैमिस्ट्री व्यावसायिक रूप से एक मूल्यवान डिग्री है और यह महत्वपूर्ण उद्योगों की एक श्रृंखला में अच्छी तरह से भुगतान करने वाली नौकरियों के लिए काफी उपयोगी होती है। जैव रसायन के भीतर कार्य क्षेत्र विशाल है।

कैसे बनें वेब डेवलपर

आजकल ऑनलाइन व्यवसायों के लिए जो सबसे ज्यादा मायने रखता है वह है उनकी वेबसाइट। वे उस वेबसाइट की गुणवत्ता और कार्य क्षमता के साथ समझौता नहीं कर सकते। यही कारण है कि बहुत सारे व्यवसायों ने शुरू में एक वेबसाइट बनाने के बारे में और अपनी फिजिकल उपस्थिति को जारी रखने के पक्ष में सोचा था कि अधिक लोगों के संपर्क में रहने और अधिक बेचने के लिए वेबसाइट कितनी महत्वपूर्ण होती है। व्यवसायों को काम करने के लिए योग्य और अनुभवी वेब डेवलपर्स को नियुक्त करने की आवश्यकता होती है।आजकल ऑनलाइन होने वाले व्यवसायों की संख्या में निरंतर वृद्धि हो रही है और वेब डिज़ाइनरों और डेवलपर्स की मांग बढ़ती जा रही है। वेब डेवलपर्स आजकल विभिन्न तकनीकों का उपयोग करके ऐसी वेबसाइट विकसित करने में अधिक कुशल होते हैं जो व्यावसायिक आवश्यकताओं और ग्राहकों की अपेक्षाओं के अनुरूप हैं। क्या आपको लगता है कि आपके ऐसा पास कौशल है? वेब डेवलपमेंट में एक आशाजनक करियर है, जिसमें बहुत संभावनाएं हैं। आपके पास अपने करियर के विभिन्न चरणों में चुनने के लिए कई वेब डेवलपमेंट कॅरियर के अवसर भी होंगे। तो आइए जानते हैं कि वेब डेवलपर कौन होते हैं और उन्हें किन जिम्मेदारियों को पूरा करना होता है।

वेब डेवलपमेंट क्या होता है?

वेब डेवलपमेंट इंटरनेट के लिए वेबसाइटों और प्लिकेशन्स या एक निजी नेटवर्क के लिए जिसे इंट्रानेट के रूप में जाना जाता है, के निर्माण की प्रक्रिया होती है। वेब डेवलपमेंट का संबंध वेबसाइट के डिजाइन से नहीं है बल्कि, यह कोडिंग और प्रोग्रामिंग के बारे में है जो वेबसाइट की कार्यक्षमता को शक्ति प्रदान करता है। स्टैटिक वेब पेजों से लेकर सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म और ऐप्स तक, ई-कॉमर्स वेबसाइटों से लेकर कंटेंट मैनेजमेंट सिस्टम (सीएमएस) तक - वे सभी टूल्स जो हम दैनिक आधार पर इंटरनेट के माध्यम से उपयोग करते हैं, डेवलपर्स द्वारा बनाए गए हैं।

एक वेब डेवलपर का काम क्या होता है?

एक वेब डेवलपर की जिम्मेदारियों में ग्राहकों से फोन पर बात करना या उनकी आवश्यकताओं को समझने के लिए उनसे मिलना शामिल होता है। वेब डेवलपर्स के लिए यह बहुत महत्वपूर्ण है कि वे प्रश्नों के स्पष्ट उत्तर प्राप्त करें जैसे कि एक ग्राहक अपनी वेबसाइट से उनके लिए क्या चाहता है। एक ग्राहक अपनी वेबसाइट में कौन-सी विशेषताएँ रखना चाहता है? यदि आप क्लाइंट से बात करने से पहले वेबसाइट पर काम करना शुरू करते हैं तो वेबसाइट शायद वैसी नहीं होगी जो क्लाइंट आपसे डिलीवर करने की उम्मीद करता है।

वेब डेवलपर के लिए पात्रता

हालांकि वेब डेवलपर बनने के लिए किसी विशिष्ट शैक्षणिक योग्यता की आवश्यकता नहीं होती है, सिवाय विभिन्न वेब डेवलपमेंट टूल्स और वेबसाइट बनाने के लिए आवश्यक सॉफ्टवेयर के संयोजन के संपूर्ण व्यावहारिक ज्ञान के, लेकिन साथ ही यदि आप एक प्रतिष्ठित संगठन के साथ काम करना चाहते हैं तो आपके पास कंप्यूटर एप्लीकेशन या वेब डिजाइनिंग में डिग्री या डिप्लोमा होनी चाहिए।

शिव मंदिर में पूजा अर्चना कर मनाया महाशिवरात्रि पर्व

● उमाकान्त शर्मा भिण्ड संवाददाता पुष्पांजली टुडे

भिण्ड शहर से 12 किलोमीटर दूर स्थित ग्राम नीमगाँव में शिव मंदिर पर महाशिवरात्रि पर्व मनाया गया।मंदिर के पुजारी से मिली जानकारी के अनुसार ग्राम नीमगांव में 7 फरबरी के दिन शिव मंदिर की स्थापना की गई थी।पुजारी श्री श्री1008 जगन्नाथ दास जी महाराज ने बताया कि मंदिर पर गाँव वासियो की बहुत आस्था है आपको बता दें कि इस मंदिर का निर्माण श्री नाथूराम करैया जी ने अपने ईष्ट देवों व पितरों की यादगार में करवाया था।महाशिवरात्रि पर्व के उपलक्ष्य में डॉ. रमाकान्त शर्मा की अनुशंसा पर संजीव शर्मा जिला ब्यूरो आर बी न्यूज़ व उमाकान्त शर्मा संबाददाता चम्बल संभाग दैनिक पुष्पांजली टुडे ने पहुँच कर दर्शन लाभ उठाया तथा मंदिर की सजावट भी की।इस उपलक्ष्य में कई श्रद्धालुओं ने भी भोले बाबा के दर्शन किये तथागंगाजल चढाया।इनमें मुख्य रूप से शत्रुघ्न राजौरिया,चंद्रप्रकाश राजौरिया,अजय राजौरिया धर्मेंद्र पाराशर,उपेन्द्र पाराशर, अबधेश पुरोहित आदि कई ग्रामीण जनों ने महाशिवरात्रि पर गंगाजल चढ़ाया।

आबकारी विभाग की कार्यवाही के दौरान बीहड़ में चल रही अवैध शराब फैक्ट्री पर दबिश

● उमाकान्त शर्मा भिण्ड संवाददाता पुष्पांजली टुडे

आबकारी उपनिरीक्षक अजीत यादव की कार्यवाही

कलेक्टर भिंड श्री सतीश कुमार एस,उपायुक्त आबकारी श्री एन के चौबे स.उ.द.ग्वालियर के निर्देशन एवम् जिला आबकारी अधिकारी भिंड श्रीमती बसंती भूरिया,सहायक जिला आबकारी अधिकारी श्री ए एस सिसोदिया के मार्गदर्शन में आबकारी विभाग द्वारा वृत्त भिण्ड क्रमांक 01 में अवैध मदिरा के विक्रय,निर्माण,परिवहन,धारण के विरुद्ध लगातार की जा रही कार्यवाही के दौरान मंगलवार दिनांक 22.02.2022 को मुखबिर से प्राप्त सूचना के आधार पर ग्राम सिंहुडा चौकी अकोड़ा थाना ऊमरी क्वारी नदी के बीहड़ में आबकारी बल द्वारा दबिश दी।आबकारी बल को आता देख आरोपी बीहड़ में भागने में कामयाब हुआ।समक्ष गवाहन तलाशी ली तो एक केन 50 लीटर धारिता क्षमता की जिसमें देशी मदिरा प्लेन भरी पाई तथा एक गत्ते के कार्टून में 23 पाव देशी मदिरा प्लेन के भरे हुए बिना लेबल के 300 खाली क्वार्टर,250 ढक्कन बरामद हुए।मदिरा की कुल मात्रा 54.14 लीटर पाई समक्ष गवाहन मौके पर समस्त मदिरा व सामग्री को विधिवत् जप्त कर कब्जे आबकारी लिया।उक्त कृत्य मध्यप्रदेश आबकारी अधिनियम 1915 की धारा 34(1)(च),34(2) का दंडनीय घटित पाए जाने से अज्ञात के विरुद्ध अपराध कायम कर विवेचना में लिया गया। जप्त मदिरा व सामग्री की अनुमानित कीमत रु 20000/- है। प्रकरण के आरोपी की तलाश जारी है।उपरोक्त कार्यवाही में अजीत यादव आबकारी उपनिरीक्षक वृत्त भिण्ड क्रमांक 01 आबकारी आरक्षक हरिओम शर्मा की सराहनीय भूमिका रही।

चारों विधानसभा सीटों पर फिर भाजपा का कब्जा

● सोनू कुमार माथुर पुष्पांजली टुडे एटा ब्यूरो

एटा जिले की चारों विधानसभा सीटों पर भाजपा का कब्जा हो गया एटा सदर पर विपिन वर्मा डेविड मारहरा पर वीरेंद्र सिंह लोधी अलीगंज पर सतपाल सिंह राठौर और जलेसर पर संजीव दिवाकर जीते हैं इससे पहले 2017 मैं भी यही चारों प्रत्याशी जीते थे चारों नेता लगातार दूसरी बड्डार विधायक चुने गए हैं

भाजपा के लिए सबसे बड़ी और आसान जीत एटा सदर सीट पर रही यहां पर विपिन वर्मा डेविड ने सपा प्रत्याशी जुगेंद्र सिंह यादव को 17000 वोटों से मात दी यह दोनों ही प्रत्याशियों के बीच कड़ा मुकाबला था पिछ्ली बार भी यही दोनों प्रत्याशी मुख्य मुकाबले में रहे थे और प्रणाम भी समान थे इस बार यहां तीसरे स्थान पर बसपा के अजय यादव रहे सपा का गढ़ कहीं जाने वाली अलीगंज विधानसभा सीट पर भी द्वारा कमल खिला है भाजपा के सत्यपाल सिंह राठौर ने भी दूसरी बार लगातार जीत दर्ज की उन्होंने सपा प्रत्याशी रामेश्वर सिंह यादव को करीब 4000 मतों से शिकस्त दी जबकि तीसरे स्थान पर बसपा के सऊद अली खां उर्फ जुनैद मियां रहे हैं जिन्हें 17687 मत मिले इस सीट पर सपा के रामेश्वर सिंह यादव पिछले चुनाव में भी हारे थे

मारहरा विधानसभा सीट पर संघर्षपूर्ण मुकाबला रहा अंतिम चक्रों तक रही उठापटक के साथ ही भाजपा के वीरेंद्र सिंह लोधी चुने गए गए जबकि दूसरे स्थान पर सपा के अमित गौरव यादव उर्फ टीटू और तीसरे स्थान पर बसपा के योगेश कुमार रहे इस सीट पर भी परिणाम 2017 के चुनाव जैसे ही रहे भाजपा और सपा के यही दोनों प्रत्याशी थे और भाजपा के विजेंद्र सिंह लोधी जीते थे जलेसर विधानसभा सीट पर बेहद कशमकश बाली स्थिति रही यहां पहले बढ़त बनाकर भाजपा प्रत्याशी संजीव दिवाकर पिछड़ गए अंत में जाकर उन्हें जीत हासिल हुई उन्होंने सपा के रणजीत सुमन को करीब 5000 मतों से मात दी जबकि यहां तीसरे स्थान पर बसपा के प्रत्याशी आकाश सिंह रहे यहां भी 2017 में भाजपा सपा के यही प्रत्याशी रहे थे और संजीव दिवाकर विधायक चुने गए थे

रंगों के त्यौहार होली की
हार्दिक शुभकामनाएं
Happy Holi
जयराम पंवार
चैन्नई

रंगों के त्यौहार होली की
हार्दिक शुभकामनाएं
Happy Holi
धर्मगुरू दीवान माधव सिंह जी

रंगों के त्यौहार होली की
हार्दिक शुभकामनाएं
Happy Holi
श्री राम विल्थरिया
जिला उपाध्यक्ष किसान मोर्चा भाजपा जिला पन्ना

रंगों के त्यौहार होली की
हार्दिक शुभकामनाएं
Happy Holi
रामलाल सेंणचा
गांधीधाम गुजरात

शिवपुरी पुलिस को मिली बड़ी सफलता

25 लाख की 41 मोटरसाइकिल सहित चोरों के गिरोह का किया पर्दाफाश

● अनिल कुशवाह पुष्पांजली टुडे ब्यूरो

शिवपुरी जिले में मोटरसाईकल चोरी की लगातार हो रही घटनाओं को गंभीरता से देखते हुये पुलिस अधीक्षक शिवपुरी श्री राजेश सिंह चंदेल के निर्देशन एवं अति पुलिस अधीक्षक श्री प्रवीण भूरिया, एसडीओपी शिवपुरी श्री अजय भार्गव, एसडीओपी पोहरी श्री निरंजन सिंह राजपूत के मार्गदर्शन में जिले में वाहन चोरी की घटनाओ पतारसी के लगातार प्रयास किये जा रहे थे, जिसके तारतम्य मे दिनांक 8222 को थाना देहात व्दारा चोरी की 41 मोटर साइकिल सहित चोर गिरोह का पर्दाफाश किया गयादिनांक 82.22 को मुखबिर व्दारा सूचना दी गई कि एक व्यक्ति चोरी की मोटरसाईकल बेचने के लिये पुरानी शिवपुरी में लाया है जिसकी तस्दीक की गयी तो उक्त व्यक्ति द्वारा उक्त मोटरसाईकल बाकई हनुमान मंदिर से अपने अन्य साथियों के साथ चोरी करना बताया एवं अपने गिरोह के साथ जिला शिवपुरी ग्वालियर श्योपुर व आसपास के क्षेत्रों की कई मोटमाईकल चोरी करना बताया एवं कुछ मोटरसाईकल उसके गिरोह ने बेचने के लिये मोहना जिला ग्वालियर, कराहल श्योपुर में एवं आकुसों थाना बैराड में अपने साथियों को बेचने के लिये दे दी थी सूचना पर से पुलिस अधीक्षक शिवपुरी श्री राजेश सिंह चंदेल के निर्देशन में एवं अति पुलिस अधीक्षक श्री प्रवीण भूरिया, एसडीओपी शिवपुरी श्री

अजय भार्गव एमडीओपी महोदय पोटरी श्री निरजन सिंह राजपूत के मार्गदर्शन में टीमें गठित की गई, जो प्राप्त सूचना बताये स्थान पर पहुंचकर टीमों ने मोहना से आरोपी के बताये स्थान से 16 मोटसाईकल, आकुर्सी से बताये स्थान से 08 मोटरसाईकल एवं कराहल से आरोपी के बताये स्थान से 17 मोटसाईकल कुल 41 मोटरसाईकल कीमती करीबन 25 लाख रूपये जब्त की गई। आरोपी के 03 सहयोगी अभी फरार है शेष 02 सहयोगी खरीदार को गिरफ्तार किया। उक्त कार्य में थाना प्रभारी देहात निरीक्षक विकास यादव इंचार्ज थाना पोहरी उनि विनोद यादव सउनि प्रकाश कौरव, सउनि वी एस जादौन, सउनि आर के सगर प्र आर. 86 भगवत चतुर्वेदी प्र. आर. 264 सुनील जाट, प्र. आर. 634 बीरवल, प्र. आर 570 विनय कुमार, प्र. आर. 180 हृदेश पाराशर प्र आर 486 शुशील जाट , आर 374 गजेन्द्र सिंह परिहार, आर. 259 शरद यादव, आर 580 दिलशाद खान, आर. 201 सुनील भार्गव, आर 129 राघवेन्द्र रघुवेशी, आर 683 मनोज, आर 708 रणवीर शर्मा, आर. संदीप राठौर, आर रवि, महत्पूर्ण भूमिका रही।

शिवपुरी पुलिस की बड़ी कार्यवाही

45 बोरियों मे 9 क्विंटल मादक पदार्थ ले जाते हुये ट्रक चालक को किया गिरफ्तार

● अनिल कुशवाह पुष्पांजली टुडे ब्यूरो

शिवपुरी-पुलिस महा निरीक्षक ग्वालियर श्री अनिल शर्मा द्वारा मादक पदार्थों को निषेध करने के संबंध में निर्देश दिए गए है उक्त निर्देशों के तहत पुलिस अधीक्षक शिवपुरी श्री राजेश सिंह चंदेल के निर्देशन मे ,अति. पुलिस अधीक्षक शिवपुरी श्री प्रवीण कुमार भूरिया एवं एसडीओपी कोलारस श्री निरंजन सिंह राजपूत के मार्गदर्शन मे कार्यवाही करते हुये थाना कोलारस ने सूचना पर एक ट्रक मे अवैध रुप से 9 क्विंटल डोडा चूरा जप्त कर चालक को गिरफ्तार किया है। आज दिनांक 25.02.2022 को मुखबिर द्वारा सूचना प्राप्त हुई कि ट्रक क्रमांक एच.आर. 57 ए. 2063 जावरा (रतलाम) से अवैध मादक पदार्थ डोंडा चूरा भरकर हरियाणा की तरफ जा रहा है सूचना की तस्दीक करने पर पडोरा के पास हाईवे पर उक्त नंबर का ट्रक खडा मिला जिसमे 45 बोरी 20-20 किलो की कुल 09 क्विंटल अवैध डोडा चूरा एवं 330 मक्का की बोरियां भरी मिली उक्त ट्रक के चालक निवासी प्रतापनगर थाना एलनावाद जिला सिरसा हरियाणा से पूछताछ की गई तो उसके द्वारा बताया गया कि खंडवा से मक्का भरकर चला था फिर जावरा मे आकर अपने ट्रक के असली नंबर एच.आर. 57 ए 9752 की जगह दूसरी नंबर प्लेट एच.आर. 57 ए 2063 की लगाकर ट्रक मे अवैध 45 बोरियां डोडा चूरा

की भरकर चला था ट्रक की फायनेंस की किस्ते उधार होने के कारण नंबर प्लेट बदली थी। आरोपी का कृत्य अपराध धारा 8/15 एन.डी.पी.एस. एक्ट के अंतर्गत पाया जाने से उक्त 14 चक्का ट्रक क्रमांक एच.आर. 57 ए 2063 कीमती करीब 30 लाख रूपये मय उसमे भरे 45 बोरी अवैध डोडा चूरा कुल 09 क्विंटल कीमती करीबन 54 लाख रूपये की एवं ट्रक मे भरी 330 बोरी मक्का कीमती करीबन 04 लाख रूपये कुल 88 लाख रूपये का मशरूका जप्त कर कार्यवाही की गई। इस कार्यवाही में निरीक्षक आलोक सिंह भदौरिया , उनि. रूपेश शर्मा , उनि. रामचंद्र शर्मा, का.वा. सउनि. शत्रुघ्न सिंह भदौरिया, का.वा.प्र.आर. दिलीप सिंह, का.वा.प्र.आर. भूपेन्द्र तोमर, आर. 874 प्रभजोत सिंह, आर. 88 पुष्पेन्द्र रावत , आर. 565 गजराज सिंह , आर. चालक 926 बलराम मोगिया की विशेष भूमिका रही।

भारत के प्रधानमंत्री

शुरू से अभी तक भारत के प्रधानमंत्री

क्र	नाम	कब से	कब तक	राजनैतिक दल	कार्यकाल अवधि
1	जवाहर लाल नेहरू	15 अगस्त 1947	27 मई 1964	भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस	16 वर्ष 286 दिन
2	गुलजारी लाल नंदा	27 मई 1964	09 जुन 1964	भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस	13 दिन
3	लाल बहादुर शास्त्री	09 जुन 1964	11 जनवरी 1966	भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस	1 वर्ष 216 दिन
4	गुलजारी लाल नंदा	11 जनवरी 1966	24 जनवरी 1966	भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस	13 दिन
5	इन्दिरा गॉधी	24 जनवरी 1966	24 मार्च 1977	भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस	11 वर्ष 59 दिन
6	मोरारजी देसाई	24 मार्च 1977	28 जुलाई 1979	जनता पार्टी	2 वर्ष 126 दिन
7	चौ. चरण सिंह	28 जुलाई 1979	14 जनवरी 1980	जनता पार्टी	170 दिन
8	इन्दिरा गॉधी	14 जनवरी 1980	31 अक्टूबर 1984	भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस	4 वर्ष 291 दिन
9	राजीव गॉधी	31 अक्टूबर 1984	02 दिसम्बर 1989	कांग्रेस आई	5 वर्ष 32 दिन
10	विश्वनाथ प्रताप सिंह	02 दिसम्बर 1989	10 नवम्बर 1990	जनता दल	343 दिन
11	चन्द्रशेखर	10 नवम्बर 1990	21 जून 1991	जनता दल	223 दिन
12	नरसिंह राव	21 जून 1991	16 मई 1996	भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस	4 वर्ष 330 दिन
13	अटल बिहारी बाजपेयी	16 मई 1996	01 जून 1996	भारतीय जनता पार्टी	16 दिन
14	एच.डी. देवगौडा	01 जून 1996	21 अप्रैल 1997	जनता दल	324 दिन
15	इंद्रकुमार गुजराल	21 अप्रैल 1997	19 मार्च 1998	जनता दल	332 दिन
16	अटल बिहारी बाजपेयी	19 मार्च 1998	19 अक्टूबर 1999	भारतीय जनता पार्टी	1 वर्ष 214 दिन
17	अटल बिहारी बाजपेयी	19 अक्टूबर 1999	22 मई 2004	भारतीय जनता पार्टी	5 वर्ष 71 दिन
18	मनमोहन सिंह	22 मई 2004	22 मई 2009	भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस	5 वर्ष
19	मनमोहन सिंह	22 मई 2009	22 मई 2014	भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस	5 वर्ष
20	नरेन्द्र मोदी	22 मई 2014	कार्यरत	भारतीय जनता पार्टी	कार्यरत

खुली किताब सा जीवन था,
मां ने यही सिखाया था!
छल कपट कभी मत करना,
उसने यही बताया था!
किसी को धोखा मत देना,
मत करना अपमान!
ना किसी से बैर रखना,
करना सबका सम्मान!
भरे हैं गुण प्रभु ने तुझमें,
उसका मान रखना
सबकी खुशी में शामिल हो,
खुशियां और बढ़ा देना!
कभी किसी को,
अपशब्द मत कहना,
गलत का जवाब देकर,
तुम गलती मत करना!
मां की बात को मान लिया,
पल्लू से गांठ बांध लिया!
पर इस जमाने ने मुझको
जब चाहा तब बांच लिया,
सरलता को मेरे,
लोगो ने उपयोग किया!
फिर लोगों ने मुझसे
अपना मुंह मोड़ लिया!
सोचता हूं कि अब ,
खुद को बदल लूंगा,
लोगों की मीठी बातों में,
अब नहीं फसुंगा!
नहीं करूंगा सबका,
ना करना भी सीखूंगा!
पर मां ने अपने ज्ञान को,
नस-नस में भर दिया,
अपने दूध के साथ,
घूंटी में पिला दिया!
अपनी सारी सोच,
ताखे में रख देता हूं,
मां के कहे अनुसार,
फिर चल देता हूं!
पल्लू की बंधी गांठ,
कभी खुलती नही,
मां की सिखाई बातें,
जीवन भर भूलता नहीं!

केशव पंडित जी अम्बाह

महाकाल के दर्शन मात्र से ही दूर हो जाते हैं सभी काल

कहा जाता है कि उज्जैन की पूरी धरती उसर यानी की उपजाऊ नहीं है और इसलिए इसे शमशान भूमि भी कहा जाता है। यहां स्थित महाकालेश्वर का मुख भी दक्षिण दिशा की ओर है, इसीलिए तंत्र मंत्र की क्रिया करने वाले लोग विशेष रूप से इस मंदिर में दर्शन के लिए आते हैं।बता दें कि कुछ दिनों पहले ही एक उत्तर प्रदेश के कानपुर के एक बदमाश विकास दुबे के महाकाल के मंदिर से गिरफ्तार किए जाने के बाद इस मंदिर की चर्चा लगातार हो रही है। हम आपको बताएंगे कि महाकालेश्वर मंदिर की महिमा कितनी अपरंपार है और देश-विदेश से लोग इस मंदिर में दर्शन के लिए क्यों आते हैं? महाकालेश्वर मंदिर के निर्माण और स्थापना को लेकर भी बहुत सारी कहानियां प्रचलित हैं और इनका पुराणों तक में वर्णन है। पुराणों के अनुसार कहा जाता है कि जब सृष्टि की रचना हो रही थी, उस समय सूर्य की 12 रश्मियां सबसे पहले धरती पर गिरीं और उन्हीं से धरती पर 12 ज्योतिर्लिंगों की स्थापना हुई। उज्जैन के महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग भी उन्हीं सूर्य रश्मि से उत्पन्न हुआ एक ज्योतिर्लिंग है।

कहा जाता है कि उज्जैन की पूरी धरती उसर यानी की उपजाऊ नहीं है और इसलिए इसे शमशान भूमि भी कहा जाता है। यहां स्थित महाकालेश्वर का मुख भी दक्षिण दिशा की ओर है, इसीलिए तंत्र मंत्र की क्रिया करने वाले लोग विशेष रूप से इस मंदिर में दर्शन के लिए आते हैं। महाकाल के इस मंदिर में और भी बहुत सारे देवी देवताओं की मूर्तियां स्थापित हैं, जिसमें माता पार्वती और गणेश तथा कार्तिकेय भगवान का नाम आता है। इतना ही नहीं, महाकाल की नगरी उज्जैन में हर सिद्धि भगवान, काल भैरव भगवान, विक्रांत भैरव आदि देवताओं के भी मंदिर स्थापित हैं। महाकाल मंदिर के प्रांगण में एक कुंड बना हुआ है और कहा जाता है कि इस कुंड में स्नान

करने के बाद मनुष्य के सारे पाप, दोष, संकट उसके ऊपर से हट जाते हैं।

कब करें दर्शन?

वैसे तो महाकाल के दर्शन आप 12 महीने कर सकते हैं, लेकिन कार्तिक पूर्णिमा, बैशाख पूर्णिमा और दशहरे के अवसर पर यहां विशेष रूप से मेले का आयोजन किया जाता है। इसमें भारी मात्रा में लोग शामिल होते हैं और बाबा भोलेनाथ के दर्शन के साथ ही मेले का आनंद लेते हैं।

क्यों कहते हैं महाकाल?

उज्जैन के इस ज्योतिर्लिंग को महाकाल भी कहा जाता है और इसके पीछे यह वजह है कि प्राचीन समय से ही उज्जैन में संपूर्ण विश्व के मानकों का निर्धारण किया जाता रहा है। इस कारण इस ज्योतिर्लिंग को महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग कहा जाता है।

कैसे हुई महाकालेश्वर मंदिर की स्थापना?

पुराणों में एक कहानी प्रचलित है जिसके अनुसार मध्य प्रदेश के उज्जैन शहर में जो तत्कालीन समय में अवंतिका नगरी के नाम से प्रसिद्ध था। उक्त नगरी में एक ब्राह्मण रहता था, जिसके चार पुत्र थे। उस समय राक्षसों ने उस शहर को काफी परेशान कर उत्पात मचा रखा था, जिससे परेशान होकर ब्राह्मण ने भगवान शिव की उपासना की, और भगवान शिव ने प्रसन्न होकर राक्षस का वध कर ब्राम्हण और उसके पुत्र की रक्षा की। तब से ब्राह्मण की प्रार्थना पर भगवान शिव उज्जैन में ही बस गए और इस तरीके से उज्जैन में महाकाल मंदिर की स्थापना हो गई।

और भी हैं मंदिर उज्जैन में!

उज्जैन में आपको महाकाल के दर्शन के साथ ही हर सिद्धि मंदिर भी देखने को मिलेगा, जिसे माता सती के 51 शक्तिपीठों में से एक माना जाता है। इसके अलावा यहां काल भैरव का विश्व प्रसिद्ध मंदिर भी है। कहा जाता है कि इस मंदिर में मूर्ति पर प्रसाद के रूप में शराब चढ़ाई जाती है। उज्जैन में ही आपको गोपाल मंदिर देखने को मिलेगा, जिसमें भगवान कृष्ण की मूर्ति स्थापित है। यहीं पर आपको मंगलनाथ मंदिर के दर्शन होंगे और कहा जाता है कि मंगल मंदिर में आपके ऊपर अगर मंगल दोष है तो उसके नाश करने के उपाय किए जाते हैं।अगर आप महाकाल के दर्शन के लिए जा रहे हैं तो सुबह होने वाली भस्म आरती जरूर देखें, क्योंकि इस मंदिर में महाकाल की आरती और श्रृंगार ताजे मुर्दे की भस्म से की जाती है। महाकाल के दर्शन के बाद जूना महाकाल का दर्शन करना आवश्यक बताया जाता है।

लज्जाराम का गधा

लज्जाराम धोबी है उसके पास एक गधा है उसका नाम रामू है। रामू लज्जाराम की हर बात इशारे में समझता है। वैसे मैं इस गधे शब्द से स्कूल से ही वाकिफ था। क्योंकि मास्टर साहब अक्सर किसी न किसी बच्चे को गधा कहते थे। उस समय में मास्टर साहब के इस गधे शब्द से गुस्सा रहता था। पर अब जान गया कि ये शब्द बड़े-बड़े लोगों के साथ जुड़ने लगा है। गधा होना बुरी बात नहीं है, जब से राजनीति जवान हुई है, तब से गधे शब्द की जमकर तरक्की हुई है। लज्जाराम का गधा भी तरक्की कर घर का मालिक बन बैठा है। लज्जाराम उसे समझाता रहता है कि रामू इधर-उधर मत जाया कर न इधर-उधर देखाकर तेरा चरित्र खराब हो जाएगा। पर, रामू गधे की औलाद मानता ही नहीं है। इस देश के नेताओं के लक्षण इसमें आने लगे हैं। लज्जाराम ने रामू से कहा- रामू एक तेरा ही सहारा है तेरे सहारे मैंने सारे कर्जे चुका दिये। रामू खुश होकर हेंचू -हेंचू करने लगता। पास पड़ौस की औरतें चर्चा करने लगतीं कि मेरा ये लज्जाराम का गधा चिल्लाता ही रहता है। लड़के चुटकियां कसने लगते कि साले की आदत खराब है। जब भी इसका इरादा गलत होता है तब ये ऐसे ही चिल्लाता है। लज्जाराम को क्रोध आ गया। चीखकर बोला क्यों चिल्ला रहा है। और एक डण्डा उसकी पीठ में दे मारा। रामू का डण्डा पड़ते ही जो भागा और दुलत्ती मारते हुए गधैयों के बीच में जा मिला। अब कैसे पकड़ में आयेगा। मुझे तो लोगों के कपड़े देने जाना है। वहां खेल रहे लड़कों ने लज्जाराम का गधा पकड़वा दिया।

लज्जाराम लोगों के कपड़े देने चला। लौटते समय देर हो गयी। शाम होने को थी। तभी रामू ने चौराहे पर एक नेता को भाषण देते देख लिया। बस यहीं से रामू का हृदय परिवर्तन हुआ। सोचने लगा कि जब भाषण से ही पेट भर जाता है तो मैं क्यों काम करूँ। और रामू घर को भाग आया। लोग बोले- क्या हुआ, लज्जाराम दिखता नहीं मेरा गधा भाग गया और आप लोगों को मजाक करने की पड़ी है। दूसरे दिन रामू ने न चारा खाया न पानी पिया। लज्जाराम को शक हुआ कि कुछ तो गड़बड़ है। लज्जाराम ने बड़े प्यार से पूछा रामू क्या बात है। काम पर नहीं चलोगे। रामू ने मुण्डी हिला दी। क्यों क्या बात है। काम नहीं करोगे, तो हमारा तुम्हारा गुजारा कैसे होगा। रामू बोला नहीं मेरा अनशन है। देश के सारे नेता अनशन करके ही ख्याति पाते हैं। रामू उनकी बात अलग है। वे देश का विकास करेंगे। रामू बोला वे क्या देश का विकास करेंगे। विकास तो हम करते हैं। देश में बनने वाली इमारतों में ईंटें हमने ढोई हैं। विकास में उनका नहीं हमारा हाथ है। और रामू अनशन पर बैठ गया। लज्जाराम समझ गया कि कल इसने एक नेता को चौराहे पर भाषण देते देख लिया। तब से ही इसका मूंड खराब हुआ। लज्जाराम ने रामू की बात मान ली। रामू खुश होकर हेंचू-हेंचू करने लगा। रामू का पहला अनशन सफल रहा। लोगों ने पूछ लज्जाराम आज तेरा रामू बहुत खुश है। क्या बात हो गई। लज्जाराम ने बताया भैया अब ये नेता हो गया है। लोगों ने नारे लगाये, रामू जिन्दाबाद।

-रामवरण ओझा
ग्वालियर

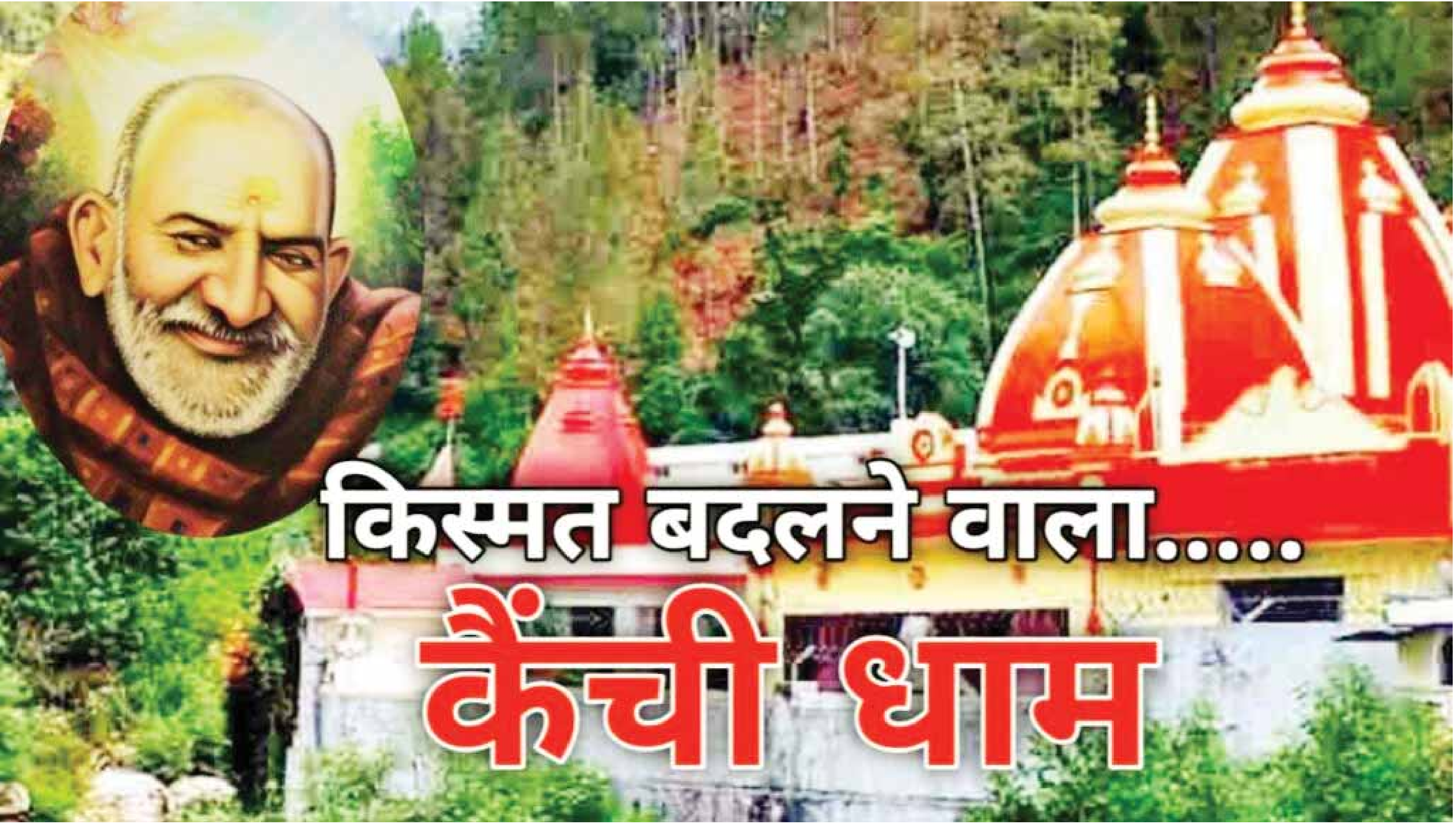

किस्मत बदलने वाला.....
कैंची धाम

● पुष्पांजली टुडे

नैनीताल के कैंची धाम स्थित हनुमान मंदिर, आज किस्मत बनाने वाले करोली बाबा के नाम से विश्व भर में विख्यात है। नीम करोली बाबा को हनुमान का एक रूप भी बताया जाता है। बाबा के भक्तों में एप्पल कंपनी के मालिक स्टीव जॉब्स भी आते थे। आज फेसबुक प्रमुख मार्क जुकरबर्ग और हॉलीवुड अभिनेत्री जूलिया रॉबर्ट्स बाबा की भक्त हैं। वर्तमान में बाबा तो समाधी ले चुके हैं किन्तु कहते हैं कि हनुमान जी का यह मंदिर बिगड़ी तकदीर बना देता है। देश-विदेश समेत हज़ारों लोग यहाँ अपनी बिगड़ी तक़दीर को बनवाने आते हैं। देवभूमि उत्तराखंड की धरती पर स्थित पवित्र कैंची धाम, जहां कोई भी मुराद लेकर जाए तो वह खाली हाथ नहीं लौटता। इस धाम से जुड़े कई रोचक चमत्कारों के किस्से दुनिया भर में मशहूर है। कैंची धाम में बाबा के भक्तो की फहरिस्त देश ही नहीं बल्कि विदेशो तक है। दुनिया के कई बड़े बिजनेस मैन तक यंहा हाजिरी लगा अपनी मुरादे मांग चुके है। मान्यताओं के अनुसार, इस धाम में बाबा नीम करौली को भगवान हनुमान का अवतार माना जाता है।

देश-विदेश से हज़ारों लोग यहां हनुमान जी का आशीर्वाद लेने आते हैं। बाबा नीब करौरी ने इस आश्रम की स्थापना 1964 में की थी। बाबा नीब करौरी 1961 में पहली बार यहां आए और उन्होंने अपने पुराने मित्र पूर्णानंद जी के साथ मिल कर यहां आश्रम बनाने का विचार किया था। बाबा के आशीर्वाद से यंहा एक भव्य मंदिर का निर्माण हुआ। जिसके बाद बाबा के भक्तो की आस्था यंहा उमड़ पड़ी। हार साल यंहा एक भव्य मेले का आयोजन भी किया जाता है, जिसको आश्रम के स्थापना दिवस के रूप में मनाया जाता है।

नीम करोली बाबा की महिमा न्यारी है। भक्तजनों की माने तो बाबा की कृपा से सभी बिगड़े काम बन जाते हैं। यही कारण है कि बाबा के बनाए सारे मंदिरों में भक्तों का सैलाब उमड़ पड़ता है। नीम करोली बाबा का यह आश्रम आधुनिक जमाने का धाम है। यहां मुख्य तौर पर भगवान हनुमान जी की पूजा होती है। इस जगह का नाम कैची यहां सड़क पर दो बड़े जबरदस्त हेयरपिन बैंड (मोड़ के नाम पर पड़ा है। स्थानीय लोगों के अनुसार सन 1964 में आगरा के पास फिरोजाबाद के गांव अकबरपुर में जन्मे लक्ष्मी नारायण शर्मा (असली नाम यहाँ तपस्या करने आए थे। उन्हीं के प्रयासों से इस मंदिर का उद्धार हुआ था। बताया जाता है की फर्रूखाबाद के गांव नीम करौली में उन्होंने कठिन तपस्या की थी जिस कारण वे बाबा नीम करौली कहलाने लगे। मंदिर चारों ओर से ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों से घिरा हुआ है और मंदिर में हनुमान जी के अलावा भगवान राम एवं सीता माता तथा देवी दुर्गा जी के भी छोटे-छोटे मंदिर बने हुए हैं। किन्तु कैंची धाम मुख्य रूप से बाबा नीम करौली और हनुमान जी की महिमा के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ आने पर व्यक्ति अपनी सभी समस्याओं के हल प्राप्त कर सकता है।

इस चमत्कारी धाम से खाली नहीं लौटता कोई, माने जाते हैं हनुमानजी का अवतार बाबा नीम करोली बाबा नीम करौली को कैंची धाम बहुत प्रिय था। बाबा के भक्तों ने इस स्थान पर हनुमान का भव्य मन्दिर बनवाया। यहां बाबा नीम करौली की भी एक भव्य मूर्ति स्थापित की गयी है। बाबा नीम करौली महाराज के

देश-दुनिया में 108 आश्रम हैं। इन आश्रमों में सबसे बड़ा कैंची धाम और अमेरिका के न्यू मैक्सिको सिटी स्थित टाउस आश्रम है। भक्तो के अनुसार कहा जाता है कि बाबा नीब करौली को भगवान हनुमान की उपासना करने के बाद अनेक चमत्कारिक सिद्धियां प्राप्त हुई थीं। लोग उन्हें हनुमान जी का अवतार भी मानते हैं। लेकिन बाबा बेहद साधारण तरीके से रहते थे और अपने पैर किसी को नहीं छूने देते थे। जब भी कोई भक्त बाबा के चरण स्पर्श करना चाहता था, तो बाबा उसको रोक कर महाबली हनुमान जी के आगे नतमस्तक होने का आदेश देते थे। बाबा के अनुसार कलयुग में भाग्यविधाता हनुमान की सरण ही भक्तो को कस्ट से मुक्ति दिलाते है।

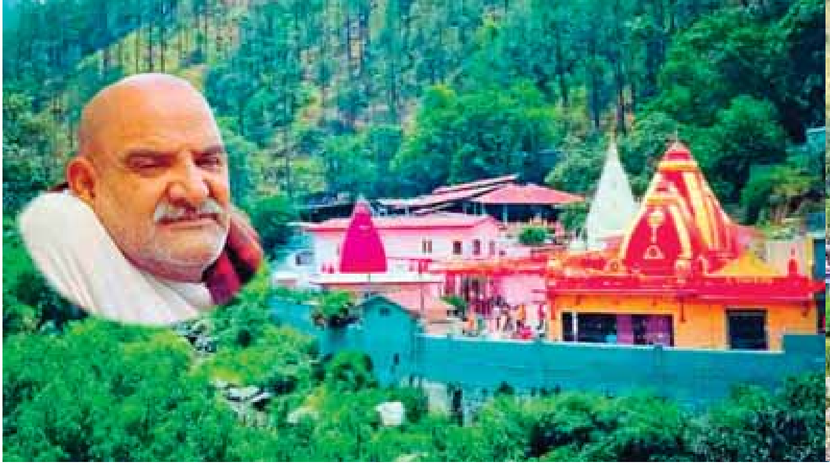

बाबा नीम करौली

इस भारत भूमि पर अनेक महात्माओं और सिद्ध पुरूषों ने जन्म लिया है। आज हम उन्हीं सिद्ध महात्माओं में से एक हनुमान जी का साक्षात् रूप कहे जाने वाले नीम करौली बाबा के बारे में जानेगें।

प्रारंभिक जीवन

11 सितम्बर 1900ई. को जिला फिरोजाबाद (उ.प्र.) के एक गांव अकबरपुर में ब्राह्मण परिवार में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री दुर्गाप्रसाद शर्मा था और माता का नाम श्रीमति कौशल्या देवी शर्मा था। इनके बचपन का नाम श्री लक्ष्मीनारायण शर्मा था। इनकी शादी 11 वर्ष की उम्र में इनका विवाह बादामवास नामक गांव की बेटी 8 वर्षीय रामबेटी से हुआ था। इनके दो बेटे और एक बेटी है। बेटो का नाम अनेग सिंह शर्मा और धर्म नारायण शर्मा और बेटी का नाम गिरिजा था। विवाह के लगभग 2 वर्ष पश्चात् इन्होंने घर त्याग करके सन्यास ले लिया था तथा गुजरात चले गये। बाबा ने गुजरात में ववाणीया मोरबी में तपस्या की और ये तल्लैया वाले बाबा कहलाने लगे। वृंदावन में भक्त इनको चमत्कारी बाबा के नाम से पुकारते थे। बाबा ने गजरात व अन्य स्थानों में भ्रमण करते हुए 10 - 15 साल बाद फरूखाबाद जिले के एक गांव जिसका नाम नीब करौली में आ गये। किसी ने इनके पिता को जाकर बताया कि तुम्हारे बेटे जैसा एक बाबा नीब करौली में आया है। जब पिता ने जाकर देखा तो वो इनका बेटा ही निकला। इन्होंने उनको काफी समझाया और घर ले आये। पर बाबा ने पुनरु 1998 में घर त्याग दिया और हमेशा के लिए संन्यास ले लिया।

तपस्थली

1998 को घर त्यागने के बादमें बाबा ने नैनीताल(उत्तराखंड) से लगभग 17 किलोमीटर दूर अल्मोडा रोड के किनारे अपनी तपस्थली बनाई जो बाद में कैंचीधाम के नाम से जानी जाने लगी।

बाबा की लीलाएँ

1. पहली घटना है 1958 की जब बाबा और लक्ष्मणदास बाबा एक साथ ट्रेन में बिना टिकट यात्रा कर रहे थे। जब टिकट चैक करने टीसी आया तो इनके पास टिकट न मिलने पर इनको नीब करौली नामक स्थान पर उतार दिया गया। बाबा को उतारने के बाद टीसी ने देखा कि टेञ्न अपने स्थान से चल नहीं पा रही है,तो सभी लोगों ने उन्हें समझाया कि बाबा को पहले मना लो तभी ट्रेन चलेगी। लोगों के द्वारा टीसी को काफी समझाने पर वो बाबा के पास गया और मनाने लगा। पर बाबा ने कहा कि पहले जिस स्थान पर तुमने मुझे ट्रेन से उतारा है उस स्थान

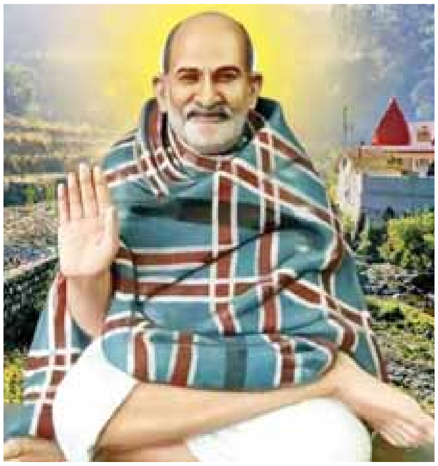

पर स्टेशन बनाने का वादा करो तब मैं बेठूगां। जब टीसी मान गया तो बाबा भी मान गये और बाबा के टेञ्न में बैठते ही ट्रेन चलने लगी बाद में उस स्थान पर स्टेशन का निर्माण कराया गया।

2. इनका एक शिष्य था रामदास जिसका पहले नाम था रिचर्ड एल्पेर्ट वो अमेरीकी दवाओं का व्यापारी था। ए घटना इन्हीं रिचर्ड एल्पेर्ट के बारे में है। रिचर्ड एक बहुत बडा नशेबाज भी था। एक समय की बात है इसने बाबा की परीक्षा लेने चाही उसके लिए इसने बाबा को नशे की 300 गोलियॉ दे दी,बाबा ने 300 गोलियॉ एक साथ निगल ली। जब काफी समय बीत गया और बाबा को कुछ नहीं हुआ तब रिचर्ड ने बाबा से माफी मांगी और उनके शिष्य बन गये जो बाद में रामदास के नाम से पहचाने जाने लगे। रामदास ने बाबा के ऊपर मिड नाइट बिद दा मिस्टिक नामक किताब लिखी।

3. यह बात 1973 की है जब इनके एक भक्त ने जिनका नाम योगेश बहुगुणा है उन्होंने 8 संतरे लिये और बाबा को खाने का आग्रह करने लगे। ज्यादा योगेश जी के आग्रह करने पर बाबा ने वो फल वहॉ मौजूद भक्तो में बांट दिए लेकिन योगेश जी ने क्या देखा कि वो फल 8 के 18 हो गये।

4. एक बार बाबा ने आश्रम में बैठे हुये थे अचानक उन्होंने एक भक्त को रामायण लाने को कहा और उन्होंने अशोक वाटिका का प्रसंग पढने को कहा जब हनुमान जी सीता माता से मिलने के लिए गये थे। जब सीता माता और हनुमान जी का दृष्टांत भक्त सुनाने लगा तो लोग क्या देखते हैं कि बाबा आंखे बंद करके रो रहे हैं। तभी से लोग उनको हनुमानजी का अवतार कहने लगे। वैसे बाबा के अनेक चमत्कार हैं ये चमत्कार जग प्रसिद्व हैं। बाबा हनुमान जी के बहुत बडे भक्त थे। इनके शिष्य भारत में नहीं बल्कि विदेशों में भी हैं। विदेशी शिष्यों में एप्पल के सीईओ स्टीबस जॉब्स और फेसबुक के सीईओ मार्क जुकरबर्ग प्रमुख हैं। बाबा कई नामों से जाने जाते थे - तल्लैया वाले बाबा,हांडी वाले बाबा,लक्ष्मणदास,तिकोनिया वाले बाबा,चमत्कारी बाबा।

समाधि या स्वर्ग प्रस्थान

यह बात है 10 सितम्बर 1973 की जब बाबा वृंदावन में थे। बाबा के छाती में अचानक दर्द हुआ जब उनको अस्पताल ले जाया गया तो डॉक्टरों ने बताया कि उन्हें डायबिटिक कोमा हुआ है तथा हमसब के दर्द के हरते हुए और सब के दर्दो को लेकर 11 सितम्बर 1973 की रात लगभग 1 बजकर 15 मिनट पर वो हमेशा के लिए हनुमान जी में लीन हो गये। इनकी समाधि वृंदावन के आश्रम में बनाई गई।

तपस्थली कैंची धाम कैसे जाये -

कैंची धाम जाने के लिए नई दिल्ली से नैनीताल के पास काठगोदाम रेल्वे स्टेशन या हल्द्वानी के लिए रेल व बस दोनो से जाया जा सकता है। हद्वानी ने टैक्सी या बाईक से जाना पडेगा। नैनीताल से भी जाया जा सकता है। बाबा को कैंची धाम में ज्ञान की प्राप्ति हुई उसी के उपलक्ष्य में प्रतिवर्ष 15 जून को कैंचीधाम में भव्य मेला लगता है।

चरण सेवक

प्रभात शर्मा संचालक

महाकालेश्वर इंस्टीट्यूट ऑफकम्प्यूटर साइंस

भारत में बदले गए शहरों के नामों की लिस्ट

क्र	पुराना नाम	परिर्वतित नाम
1	रोहतांग सुरंग	अटल सुरंग (8.8किमी.)
2	गोरखपुर हवाई अड्डा	महायोगी गोरखनाथ हवाई अड्डा
3	बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ	बदलाव(बेटी आपकी धनलक्ष्मी और विजय लक्ष्मी)
4	इलाहाबाद शहर	प्रयागराज
5	स्वच्छ भारत अभियान	सुंदर भारत
6	हैवलॉक द्वीप	स्वराज द्वीप
7	रॉस द्वीप	सुभाष चंद्र बोस द्वीप
8	फ़िरोज शाह कोटला स्टेडियम	अरूण जेटली स्टेडियम
9	सहारनपुर विश्वविद्यालय	मां शाकंभरी विश्वविद्यालय
10	राजीव गांधी खेल रत्न पुरूस्कार	मेजर ध्यानचंद खेल रत्न पुरूस्कार
11	पूणे आर्मी स्पोर्ट्स स्टेडियम	नीरज चोपड़ा स्पोर्ट्स स्टेडियम
12	अलीगढ़	हरिगढ़
13	रेलवे सुरक्षा बल	भारतीय रेलवे सुरक्षा बल सेवा
14	प्रवासी भारतीय केद्र	सुषमा स्वराज भवन
15	हबीबगंज रेलवे स्टेशन	अटल जंक्शन
16	चेनानी नाशरी सुरंग	श्यामाप्रसाद मुखर्जी टनल
17	मोटेरा स्टेडियम (सरदार वल्लभ भाई पटेल स्टेडियम)	नरेंद्र मोदी स्टेडियम
18	मोहाली अंतरराष्ट्रीय हॉकी स्टेडियम	बलबीर सिंह सीनियर
19	व्हीलर द्वीप(उड़ीसा)	एपीजे अब्दुल कलाम द्वीप
20	गोएयर (एयरलाइन कंपनी)	गो फर्स्ट
21	हावड़ा-कालका मेल	नेताजी एक्सप्रेस
22	झांसी रेलवे स्टेशन	लक्ष्मी बाई
23	प्रगति मैदान मेट्रो स्टेशन	सुप्रीम कोर्ट मेट्रो स्टेशन
24	नील द्वीप(अंडमान निकोबार)	शहीद द्वीप
25	बोगिबुल पुल(असम)	अटल सेतु
26	अगरतला एयरपोर्ट	महाराजा वीर विक्रम एयरपोर्ट
27	मिनिस्ट्री ऑफशिपिंग(जहाजरानी)	मिनिस्ट्री ऑफपार्ट्स,शिपिंग एण्ड वाटरवेज
28	मंडुवाडीह रेलवे स्टेशन	बनारस
29	विदेश संचार निगम लिमिटेड(वीएसएनएल)	टाटा कम्युनिकेशन लिमिटेड(टीसीएल)
30	होशंगाबाद(मप्र)	नर्मदापुरम
31	किंग्स इलेवन पंजाब(आईपीएल)	पंजाब किंग्स
32	औरंगाबाद(महाराष्ट्र)	संभाजी नगर
33	गोरेवाडा चिड़ियाघर(महाराष्ट्र)	नगपुर
34	अयोध्या हवाई अड्डा(उ.प्र.)	मर्यादा पुरूषत्तम श्री राम हवाई अड्डा
35	हुबली रेलवे स्टेशन(कर्नाटक)	श्री सिद्वारूढ्वा स्मामी जी
36	हावेरी रेलवे स्टेशन	महादेवप्पा मैलारा
37	टैन-18	वंदे भारत एक्सप्रेस
38	राष्ट्रीय राजमार्ग एनएच-703	एएए गरूनानक देव जी
39	ग्वालियर-चंबल एक्सप्रेस वे	अटल बिहारी बाजपेयी
40	औरंगजेब रोड(दिल्ली)	कलाम रोड
41	हजरतगंज चौराह(लखनऊ)	अटल चौक
42	चेन्नई रेलवे स्टेशन	पुरैच्ची तलैवर डॉ.एम.जी.रामचंद्रन सेंट्रल
43	बस्ती शहर	वशिष्ठ नगर
44	सुल्तानपुर शहर	कुशभवनपुर
45	मध्यप्रदेश व्यवसायिक परीक्षा मंडल(व्यापम)	राज्य कर्मचारी चयन आयोग
46	मुगलसराय रेलवे स्टेशन(उप्र)	पं.दीनदयाल उपाध्याय रेलवे स्टेशन
47	अहमदाबाद	कर्णावती
48	घाघरा नदी	सरयू नदी
49	छत्रपति शिवाजी इंटरनेशनल एयरपोर्ट	छत्रपति शिवाजी महाराज इंटरनेशनल एयरपोर्ट
50	इकाना अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम(उप्र)	अटल बिहारी वाजपेयी अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम
51	झारसुगुडा हवाई अड्डा(उडीसा)	वीर सुरेंद्र साय हवाई अड्डा
52	साबरमती घाट	अटल घाट
53	आगरा एयरपोर्ट	दीनदयाल उपाध्याय एयरपोर्ट
54	चकेरी एयरपोर्ट(कानपुर)	गणेश शंकर विद्यार्थी एयरपोर्ट
55	बरेली एयरपोर्ट	नाथ नगरी
56	बुंदेलखण्ड एक्सप्रेस वे	अटल पथ
57	नया रायपुर(छग)	अटल नगर
58	गुड़गांव	गुरूग्राम
59	कुरनूल हवाई अड्डा(आंध्र प्रदेश)	उयालवाड़ा नरसिम्हा रेड्डी
60	आदिम जाति कल्याण विभाग(मप्र)	जनजातीय कार्य विभाग
61	फैजाबाद(उप्र)	अयोध्या
62	मेवात शहर(हरियाणा)	नूह
63	मानव संसाधन विकास मंत्रालय	शिक्षा मंत्रालय
64	अंबाला बस स्टैंड	सुषमा स्वराज बस स्टैंड
65	जेवर हवाई अड्डा	नोइडा इंटरनेशनल हवाई अड्डा
66	भोपाल मेट्रो	राजा भोज मेट्रो
67	फेड कप(टेनिस)	बिली जीन किंग कप
68	लिब्रा एसोसिएशन (फेसबुक डिजिटल करेंसी)	डायम
69	डैग्रान फ्रूट(गजरात)	क्मलम
70	इंटरनेशनल एसोसिएशन ऑफ एथलेटिक्स फेडरेशन	वर्ल्ड एथलेटिक्स

प्रमुख दिवस एवं तारीख

दिवस का नाम	तारीख्स
खेल दिवस	29 अगस्त
राष्ट्रीय विज्ञान दिवस	28 फरवरी
कम्प्यूटर साक्षरता दिवस	2 दिसंबर
केंद्रीय उत्पाद शुल्क दिवस	24 फरवरी
हिन्दी दिवस	14 सितंबर
शिक्षक दिवस	5 सितंबर
किसान दिवस	23 सितंबर
नौ सेना दिवस	4 दिसंबर
थल सेना दिवस	15 जनवरी
वायु सेना दिवस	8 अक्टूबर
राष्ट्रीय एकता दिवस	31 अक्टूबर
भारत में राष्ट्रीय विधि दिवस	26 नवंबर
डायबिटीज दिवस	14 नवंबर
भारत में राष्ट्रीय उपभोक्ता दिवस	24 दिसंबर
भारत में महिला दिवस (सरोजिनी नायडू की स्मृति में)	13 फरवरी
राष्ट्रीय मतदाता दिवस	25 जनवरी
सद्भावना दिवस	20 अगस्त
प्रवासी भारतीय दिवस	9 जनवरी
राष्ट्रीय पक्षी दिवस	12 नवंबर
बाल अधिकार दिवस	14 नवंबर
राष्ट्रीय हथकरघा दिवस	7 अगस्त
भारत में वन महोत्सव दिवस	1 जुलाई
कारगिल दिवस	26 जुलाई
चिकित्सक दिवस	1 जुलाई
शहीद दिवस 30 जनवरी	
विश्व कैंसर दिवस	4 फरवरी
विश्व जल दिवस	22 मार्च
गणेश शंकर विद्यार्थी का बलिदान दिवस	25 मार्च
आरपीएफका स्थापना दिवस	20 सितंबर
विश्व डाक दिवस	9 अक्टूबर
इंदिरा गांधी पुण्य तिथि	31 अक्टूबर
राष्ट्रीय पत्रकारिता दिवस	17 अक्टूबर
विश्व मांसाहार निषेध दिवस	25 नवंबर
झंडा दिवस	7 दिसंबर
नागरिक सुरक्षा दिवस	6 दिसंबर

प्रमुख यज्ञ

1.अग्निष्टोम यज्ञ: इसमें सोम पीया जाता था तथा अग्नि को पशुबलि दी जाती थी। यज्ञ से पूर्व यज्ञकर्ता एवं उसकी पत्नी एक वर्ष तक सात्विक जीवन व्यतीत करते थे।

2.राजसूय यज्ञ: राज्याभिषेक हेतु,सम्राट को इससे दिव्यशक्ति मिलती थी,इसमें सोम का पान किया जाता था। इसके लिए राजा को रत्नियों के घर भी जाना पडता था।

3.वाजपेय यज्ञ: रथ दौड था,इसमें राजा को विजयी बनाया जाता था,यह खान-पान से सम्बन्धित था।

4.अश्वमेघ यज्ञ: राज्य विस्तार से सम्बन्धित था। यह सर्वाधिक प्रसिद्व था। इसमें एक घोडा छोडा जाता था।

चार आश्रम

1.ब्रह्मचर्य : 25 वर्ष की आयु तक

2.गृहस्थाश्रम - 25 से 30 वर्ष की आयु तक
3.वानप्रस्थ आश्रम - 50 से 75 वर्ष की आयु तक
4.संन्यास आश्रम - 75 से 100 वर्ष की आयु तक

विवाह के प्रकार

1.गान्धर्व विवाह - प्रेम विवाह या स्वयंवर ही गन्धर्व विवाह कहलाया जाता था। वात्स्यायन के अनुसार सर्वाधिक पूजित विवाह था। महाभारत के अनुसार यह सर्वोत्तम विवाह है।

2.राक्षस विवाह - यह अपहरण विवाह था। मनु के अनुसार यह क्षत्रियों के लिए प्रशंसनीय था।

3.पैशाच विवाह - यह जबरदस्ती व बलात्कार के बाद होने वाला विवाह था। यह सबसे निकृष्ट विवाह माना जाता था तथा आदिमजातियों में प्रचलित था।

4.ब्रह्म विवाह - सर्वोत्तम,आधुनिक जैसा,उपहार देकर आज की तरह कनयाकी विदाई की जाती थी।

5.दैव विवाह - कन्या के पिता द्वारा यज्ञ सम्पादित करने वाले के साथ पुत्री का विवाह सम्पन्न किया जाता था।

6.आर्ष विवाह - वर को कन्या प्रदान करने के बदले में एक जोडी गाय व बैल की प्राप्ति,कन्या के पिता द्वारा वर से वचनबद्वता प्राप्त करना कि दोनों साथ-साथ मिलकर सामाजिक एवं धार्मिक कर्तव्यों का सम्पादन करें।

7.प्रजापत्य विवाह - यह सर्वाधिक प्रचलित विवाह था।

8.असुर विवाह - यह विक्रय विवाह इसमें पिता के द्वारा कन्या के बदले मूल्य प्राप्ति की जाती थी। आपस्तम्ब ने कहा कि शूद्र को कन्या का मूल्य स्वीकार नहीं करना चाहिए। बोधायन के अनुसार खरीदी कन्या पत्नी का पूर्ण पद नहीं प्राप्त कर सकती।

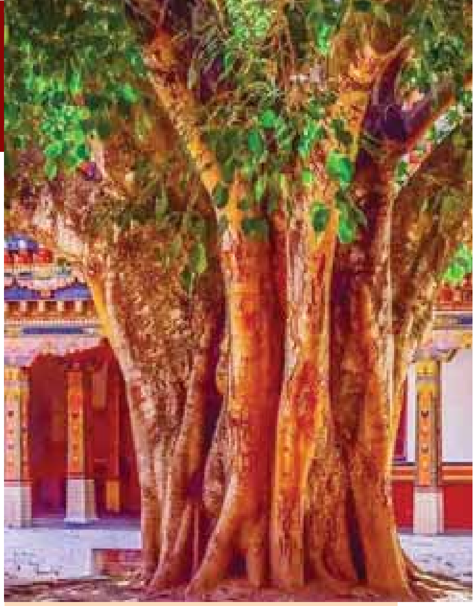

गांव में वो पीपल का पेड़

गांव में वह पीपल का पेड़
अब मनहूस हो गया है
कुछ मुढ़ता वादी लोग ने
उस पर भूत प्रेत चुड़ैल डाकन का
साया घोषित कर दिया है

रात के सन्नाटे में वो पीपल का पेड़
नई पीढ़ी को अब डराने लगा है
दिन में जो हवा की शीतलता देता है
रात में हर राहगीर को डर बांटने लगा है

मूढ़ता कि हद तब हो गई
जब पीपल के भूत प्रेत चुड़ैल डाकन
आदमी और औरतों में घुसकर
देवी देवता बनकर
लोगों की आफतों से
छुटकारा दिलाने लगा है

धीरे-धीरे यह डर का व्यापार
गांव वालों को रास आने लगा है
तंत्र मंत्र झाड़-फूंक नीम हकीम
गांव में सब का धंधा चमकने लगा है

गांव में वह पीपल का पेड़
डर के साथ-साथ
दिन के उजाले में
आते जाते राहगीर को
ठंडी हवा और छांव देने लगा है

कमल राठौर साहिल
शिवपुरी मध्य प्रदेश
9685907895

डायबिटीज़ को रखना है सही तो खाएं यह इम्युनिटी बूस्टर फल

मधुमेह रोगियों को ऐसे खाद्य पदार्थ खाने की सलाह दी जाती है जो फाइबर से भरपूर हों और उनमें मध्यम ग्लाइसेमिक इंडेक्स हो। संतरे फाइबर से भरे हुए होते हैं और इसकी जीआई सीमा 40-50 के बीच होती है। साथ ही, फल में प्राकृतिक शुगर होती है, जो कि मधुमेह रोगियों के लिए पूरी तरह से सुरक्षित है।यहाँ हम आपको कुछ स्वादिष्ट और पौष्टिक सर्दियों के फल के बारे में बताने जा रहें है, जिन्हें आप ब्लड शुगर नियंत्रण करने और वज़न घटाने में सहायता

करने के लिए अपने डायबिटिक डाइट में शामिल कर सकते हैं।

1. **संतरा-** संतरे जैसे खट्टे फलों में विटामिन सी पोषक तत्व की एक बड़ी मात्रा पायी जाती है, जो एक शक्तिशाली एंटीऑक्सिडेंट है। ऑरेंज फाइबर से भरपूर होता है, जो रक्तचाप व संबंधी समस्याओं के उनके अधिकतम स्तर तक पहुंचने से रोक सकता है।

2. **नाशपाती-** नाशपाती में एक प्रभावशाली कम ग्लाइसेमिक इंडेक्स होता है, जो इस बात का माप है कि शरीर के भोजन में कार्बोहाइड्रेट को ग्लूकोज में कैसे परिवर्तित करता है। यह कहा जाता है कि नाशपाती की त्वचा में बहुत ज्यादा पोषक तत्व होते हैं और विशेष रूप से उच्च ब्लड शुगर के स्तर को नियंत्रित करने में फ़ायदेमंद होते हैं। तो, बिना छीले ही इसका स्वाद लें।

3. **अमरूद-** इस फल में एक बढ़िया पोषण तत्व होता है। इसमें उच्च मात्रा में पोटेशियम और कम मात्रा में सोडियम होता है। यह फाइबर और विटामिन सी से भरा हुआ होता है और इसमें कम ग्लाइसेमिक इंडेक्स होता है। यह सर्दियों में मधुमेह आहार के लिए सबसे उपयुक्त फल है।

4. **कीवी-** यह हरा फ़ल आश्चर्य एंटीबायोटिक गुणों से भरपूर होता है और एंटी-इन्फ्लैमटॉरी गुणों से भरा हुआ होता है। यह डाइटरी फाइबर से भी भरपूर होता है, जिससे यह आपकी डाइट को परफेक्ट करता है।

5. **सेब-** इस फल में एक विशेष प्रकार का एंटीऑक्सिडेंट होता है, जिसे एंथोसायनिन कहा जाता है, जो ब्लड शुगर को नियमित करके और शरीर के मेटाबॉलिज़्म को संतुलित करके इसके स्तर को नियंत्रित करने में मदद करता है।

6. **अंगूर-** अंगूर सर्दियों का एक ऐसा फल है जो ब्लड शुगर को नियंत्रित करने में फायदेमंद साबित होता है। फल में रेसवेराट्रॉल नामक फाइटोकेमिकल होता है, जो इंसुलिन रिलीज करने की शरीर की क्षमता को बेहतर बनाने में मदद करता है। उपर्युक्त यह मौसमी फल आपके मधुमेह आहार के लिए एक बढ़िया इज़ाफ़ा हो सकते हैं, लेकिन आपको इनके अधिक सेवन से भी बचना होगा।

पश्चिम भारत की मशहूर डिशेस जो आपके मुँह में ला देंगी पानी

भारत को विविधताओं का देश कहा जाता है, यहां हर राज्य की अपनी एक अलग पहचान होती है, लोगों के रहन-सहन से लेकर खान-पान भी हर राज्य का दूसरे राज्य से अलग है। सभी राज्यों के खाने का अपना अलग स्वाद है, जिसे दूसरे राज्यों के लोग भी खूब पसंद करते हैं और बड़े चाव से खाते हैं। पश्चिम भारतीय भोजन को शाकाहारी के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है। समाज का एक छोटा वर्ग मांसाहारी भोजन का भी उपभोग करता है। देश के पश्चिमी भाग से संबंधित समुदाय मुख्य रूप से जैन धर्म का पालन करते हैं और धर्म उन्हें अहिंसा सिखाता है। भारतीय क्षेत्रीय भोजन प्रमुख रूप से धर्म और बाहरी आक्रमणों से प्रभावित है। इस क्षेत्र के प्रमुख राज्यों में गुजरात, महाराष्ट्, गोवा और राजस्थान शामिल हैं। पश्चिम भारतीय भोजन एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में भिन्न होता है। आइये जानते है पश्चिमी भारत के कुछ फेमस डिशेस -

गुजरती डिशेस

गुजरात का नाम आते ही कई डिश याद आ जाती है। जिसमें मुख्य रूप से ढोकला और थेपला है। यहां कोई भी मौक़ा हो थेपला खुशियां और स्वाद बढ़ने का काम बखूबी करता है। चने के आटे, गेहूं के आटे, ताजी मेथी और मसालों से थेपला बनता है। ताजे दही, अचार और छंदो के साथ थेपला खाया जाता है। कभी-कभी थेपले पालक, मूली के उपयोग से भी बना लिए जाते हैं। गुजराती भोजन हिंदू धर्म और जैन धर्म के प्रभाव पर निर्भर करता है। गुजराती भोजन मुख्य रूप से शाकाहारी होते हैं और भोजन मिठास के संकेत के साथ चीनी या भूरी चीनी जोड़कर तैयार किए जाते हैं। एक विशिष्ट गुजराती थाली में रोटी, दाल या कढ़ी, चावल और सब्जी या शेक शामिल होते हैं। अधिकांश गुजराती व्यंजन विशेष रूप से एक

साथ मीठे, नमकीन और मसालेदार होते हैं। प्रधान पकवान खिचड़ी, अचार, छाछ है। प्रसिद्ध खाने है-

राजस्थानी डिशेस

दाल बाटी चूरमा राजस्थान की मशहूर डिश है, इसमें घी का ज्यादा इस्तेमाल किया जाता है। राजस्थान का कल्चर जितना ही रिच होता है उतना ही स्वादिष्ट होता है। । बॉल जैसे आकार की गेहूं के आटे की गोलियां आंच पर पकाई जाती हैं। तड़का लगी दाल के साथ इन्हें खाया जाता है। दाल बाटी चूरमा, मोहन ताल , लाल मांस, मावा कचौरी, मिर्ची बड़ा , मोहन मास ।

घर में वास्तु के अनुसार करवाना चाहिए पेंट

रंगों का हमारे जीवन में बहुत महत्त्व है क्योंकि रंगों के कारण ही हमें अपनी दुनिया खूबसूरत दिखाई देती है। हर व्यक्ति के जीवन में अलग-अलग रंगों का अलग-अलग महत्त्व होता है। रंग बहुत हद तक हमारे मूड और सोच को प्रभावित करते हैं और इसीलिए घर में पेंट करवाते समय रंगों का ख़ास ख्याल रखना चाहिए। वास्तु और फेंगशुई में अलग-अलग रंगों को अलग-अलग तत्वों का प्रतीक माना गया है। वास्तुशास्त्र के मुताबिक घर की दीवारों के रंग का हमारे जीवन और सुख-समृद्धि पर बहुत असर होता है। आज के इस लेख में हम आपको फेंगशुई के अनुसार घर के विभिन्न हिस्सों के लिए बताए गए रंगों की जानकारी देंगे **नारंगी रंग**

यह रंग हमारे मन में भावनाओं और ऊर्जा का संचार करता है। नारंगी रंग से मूड अपलिफ्ट होता है इसलिए इस रंग को आप अपने किचन या डाइनिंग रूम में इस्तेमाल कर सकते हैं। नारंगी रंग आध्यात्म से जुड़ा हुआ रंग है इसलिए पूजा के कक्ष के लिए भी इस रंग का प्रयोग किया जा सकता है।

पीला रंग

पीला रंग गर्माहट का एहसास देता है। इसके साथ ही यह रंग सुकून और रौशनी देने वाला होता है। पीला रंग धन-समृद्धि और ताकत का प्रतीक है इसलिए ड्राइंग रूम, किचन या ऑफिस में इस रंग का प्रयोग किया जाए सकता है।

पर्पल

यह रंग धर्म और अधाय्त्म का प्रतीक है। इस रंग का हल्का शेड मन को सुकून और ताज़गी से भर देता है। पूजा के कक्ष के लिए इस रंग का प्रयोग किया जा सकता है।

हरा

हरा रंग हमारे मन को ताज़गी से भर देता है, इसके साथ ही यह रंग नई शुरुआत और आपसी मेल को भी दर्शाता है। हरे रंग के हलके शेड का प्रयोग बच्चों के कमरे, गेस्ट रूम, बेडरूम या ड्राइंग रूम के लिए किया जा सकता है।

ऐसे बचें मधुमेह से

आजकल के इस भागदौड़ भरे युग में अनियमित जीवनशैली के चलते जो

बीमारी सर्वाधिक लोगों को अपनी गिरफ्त में ले रही है वह है मधुमेह। मधुमेह को धीमी मौत भी कहा जाता है। यह ऐसी बीमारी है जो एक बार किसी के शरीर को पकड़ ले तो उसे फिर जीवन भर छोड़ती नहीं। इस बीमारी का जो सबसे बुरा पक्ष है वह यह है कि यह शरीर में अन्य कई बीमारियों को भी निमंत्रण देती है। मधुमेह रोगियों को आंखों में दिक्कत, किडनी और लीवर की बीमारी और पैरों में दिक्कत होना आम है। पहले यह बीमारी चालीस की उम्र के बाद ही होती थी लेकिन आजकल बच्चों में भी इसका मिलना चिंता का एक बड़ा कारण हो गया है। जब हमारे शरीर के पैंक्रियाज में इंसुलिन का पहुंचना कम हो जाता है तो खून में ग्लूकोज का स्तर बढ़ जाता है। इस स्थिति को डायबिटीज कहा जाता है। इंसुलिन एक हार्मोन है जोकि पाचक ग्रंथि द्वारा बनता है। इसका कार्य शरीर के अंदर भोजन को एनर्जी में बदलने का होता है। यही वह हार्मोन होता है जो हमारे शरीर में शुगर की मात्रा को कंट्रोल करता है। मधुमेह हो जाने पर शरीर को भोजन से एनर्जी बनाने में कठिनाई होती है। इस स्थिति में ग्लूकोज का बढ़ा हुआ स्तर शरीर के विभिन्न अंगों को नुकसान पहुंचाना शुरू कर देता है। यह रोग महिलाओं की अपेक्षा पुरुषों में अधिक होता है। मधुमेह ज्यादातर वंशानुगत और जीवनशैली बिगड़ी होने के कारण होता है। इसमें वंशानुगत को टाइप-1 और अनियमित जीवनशैली की वजह से होने वाले मधुमेह को टाइप-2 श्रेणी में रखा जाता है।

कम कीमत में पाए गज़ब का निखार

आज के समय हर कोई इतना बिजी रहने लगा है की उनके पास ज़रा भी टाइम नहीं रहता है, फिर चाहे वो महिलाएँ हो या

पुरुष, लगातार नज़रअंदाज़ होने के कारण महिलाओ की स्किन रूखी और बेजान हो जाती है, जिससे उनके चेहरे का रंग सांवला होने लगता है. कई महिलाएँ समय बचाने के लिए फेयरनेस क्रीम्स का इस्तेमाल करती है पर इससे भी कोई फायदा नहीं होता है,. इसलिए आज हम आपको एक ऐसा तरीका बताने जा रहे है जिसके इस्तेमाल से आपकी स्किन ग्लोइंग हो जाएगी और समय के साथ साथ आपके पैसे भी बच जायेगे.

अपने स्किन में निखार लाने के लिए सबसे पहले एक बाउल में थोड़ा सा बेसन ले ले, अब इसमें एक चुटकी हल्दी मिलाये और इसे कच्चे दूध की सहयता से गाढ़ा गोल कर पेस्ट बना ले, अब इस पेस्ट को अपने चेहरे और गर्दन पर अच्छे से लगाए. और जब ये सूख जाये तो इसे ठन्डे पानी से धो ले, अगर आप हफ्ते में 4 बार इस पैक का इस्तेमाल करती है तो इससे आपकी स्किन में गज़ब का ग्लो आ जायेगा, इसके अलावा आप दही में नींबू का रस मिलाकर भी चेहरे पर लगा सकते है. इससे भी आपका रंग गोरा हो जायेगा और स्किन के सभी दाग-धब्बे दूर हों जायेगे.

हर्बल फेशियल से बढाए अपनी खूबसूरती

अपने चेहरे की खूबसूरती को बढ़ाने के लिए लड़कियाँ अपने चेहरे पर कई तरह फेशियल करवाती है, पर इन फेशियल्स में केमिकल की भरपूर मात्रा मौजूद होती है. जिससे आपके चेहरे को काफी नुकसान भी हो सकता है. इसलिए आज हम आपको आपके चेहरे को सुंदर और ग्लोइंग बनाने के लिए आप घर पर हर्बल फेशियल करने के तरीके के बारे में बताने जा रहे है.

सामग्री

आलू- 1,पपीता- 1/4 कप ,ओट्स या राइस पाउडर- 2-3 टीस्पून,ग्रीन टी बैग- 3,आइस क्यूब,शहद- 2-3 टीस्पून कोकोनट मिल्क- 1/2 कप (ड्राई स्किन),संतरे का रस- 1/2 कप (ऑयली स्किन),केला- 1/2 कप ,जैतून का तेल- 2 टीस्पून,बादाम तेल- 2 टीस्पून,ठंडा पानी,स्ट्रॉबेरी- 4

फेशियल करने का तरीका

1- स्किन की गंदगी और टैनिंग निकालने के लिए सबसे पहले अपने चेहरे को साफ पानी से धो ले और फिर इसके बाद आलू के एक टुकड़े को काटकर अपने चेहरे पर 5 मिनट तक रगड़े. चेहरे पर आलू रगड़ने के बाद स्किन को टिशू पेपर को गीला करके साफ कर लें.

2- अब एक बाउल में पपीता और ओट्स या राइस पाउडर को मिलाकर पेस्ट बना ले और इसे अपने चेहरे पर लगाकर हल्के हाथों से 2 मिनट तक रब करें. और फिर इसे 5 मिनट तक ऐसे ही छोड़ दे और फिर रुई की मदद से चेहरा साफ कर लें.

3- स्किन के रोम छिद्रो को ओपन करने के लिए टी बैग को पानी में उबाले और फिर इससे अपने चेहरे पर भाप ले, और उसके बाद ब्लैकहेड रिमूवर से अपने चेहरे को साफ कर लें. अब इसके बाद अपने चेहरे पर 5 मिनट तक बर्फ के टुकड़े को रगड़े,

4- अब एक कटोरे में शहद, कोकोनट मिल्क या संतरे का रस और केला को लेकर अच्छे से मिला ले, अब इसे अपने चेहरे पर लगाकर मसाज करें. चेहरे की मसाज करते हुए बीच-बीच में बादाम और जैतून का तेल लगाते रहे, 10 मिनट तक मसाज करने के बाद ठंडे पानी से चेहरा धो लें.

हॉलीवुड चलीं आलिया भट्ट

बॉलीवुड अभिनेत्री आलिया भट्ट जल्द ही हॉलीवुड में डेब्यू करने जा रही है। आलिया भट्ट की फिल्म गंगूबाई काठियावाड़ी हाल ही में प्रदर्शित हुयी है, जिसमें उनके अभिनय को बेहद पसंद किया गया है। आलिया अब हॉलीवुड सिनेमा में डेब्यू करने जा रही है। आलिया अभिनेत्री गैल गैडोट और जेमी डोर्नन के साथ स्क्रीन स्पेस शेयर करने वाली हैं।नेटफ्लिक्स इंडिया ने सोशल मीडिया के जरिए इस बात की जानकारी दी है। नेटफ्लिक्स इंडिया ने ट्विटर अकाउंट पर आलिया भट्ट की तस्वीर शेयर कर अपने नए प्रोजेक्ट की घोषणा की है। नेटफ्लिक्स इंडिया के ट्वीट के अनुसार आलिया भट्ट गैल गैडोट और जेमी डोर्नन के साथ फिल्म हार्ट टू स्टोन में नजर आने वाली हैं।

दीपिका का हॉट फोटोशूट

अभिनेत्री दीपिका पादुकोण ने सोशल मीडिया पर अपने लेटेस्ट फोटोशूट की तस्वीरें शेयर की। अभिनेत्री ने यह फोटोशूट अमेरिकन ब्यूटी मैगज़ीन द्यद्यह्वद्द के अप्रैल कवर के लिए करवाया है। इस फोटोशूट में दीपिका अलग-अलग डिज़ाइनर कपड़े पहनें दिख रही हैं। उनकी यह सारी तस्वीरें और कपड़े काफी सुंदर लग रहे हैं। फिल्म ओम शांति ओम से बॉलीवुड में डेब्यू करने वाली अभिनेत्री दीपिका पादुकोण आज किसी पहचान की मोहताज नहीं हैं। दीपिका बॉलीवुड की टॉप की अभिनेत्री होने के साथ साथ एक फेमस फैशन दिवा भी हैं। अभिनेत्री अक्सर अपनी फैशन चॉइस से सबको हैरान कर देती हैं। कुछ दिनों पहले भी अभिनेत्री के आल रेड और आल ब्लू एयरपोर्ट लुक सोशल मीडिया पर काफी ट्रेंड कर रहे थे। अब एक बार फिर अभिनेत्री अपनी हॉट तस्वीरों की वजह से इंटरनेट पर चर्चा बटोरने में लगी हुई हैं। अभिनेत्री दीपिका पादुकोण ने सोशल मीडिया पर अपने लेटेस्ट फोटोशूट की तस्वीरें शेयर की। अभिनेत्री ने यह फोटोशूट अमेरिकन ब्यूटी मैगज़ीन द्यद्यह्वद्द के अप्रैल कवर के लिए करवाया है। इस फोटोशूट में दीपिका अलग-अलग डिज़ाइनर कपड़े पहनें दिख रही हैं।

सनी से तुलना नाराज हुईं पूनम पांडे

फिल्म नशा को लेकर उन्होंने कहा था कि फिल्म एक लव स्टोरी है, कुछ इंटिमेट सीन हैं लेकिन वो कहानी की मांग है। मैं कोई एडल्ट स्टार नहीं हूं, इसलिए प्लीज मेरी तुलना सनी के साथ मत करिए पूनम पांडे इन दिनों एकता कपूर के रियलिटी शो लॉक अप (स्र्र्श्च्य्र क्क्क) में बतौर कंटेस्टेंट नजर आ रही है। शो के दौरान पूनम आए दिन अपने पति को लेकर खुलासा कर रही हैं। उन्होंने खुलासा किया कि पति की पिटाई से उन्हें ब्रेन हेमरेज भी हो चुका है। आपको बता दें पूनम पहली बार किसी रियलिटी शो में हिस्सा नहीं ले रही रही हैं, इससे पहले फीयर फैक्टर- खतरों के खिलाड़ी का भी हिस्सा रह चुकी हैं। पूनम ने साल 2013 में नशा फिल्म से बॉलीवुड में कदम रखा था। पूनम पांडे एक ऐसी अदाकारा हैं जो अपने बोल्ड तस्वीरों और वीडियो के साथ साथ बेबाक बयानों की वजह से भी सुर्खियों में रहती हैं। पहली बार एक्ट्रेस ने जब सोशल मीडिया पर अपनी सेमी न्यूड तस्वीरें साझा की थी तो रातों-रात वह चर्चा में आ गई थी।

रंगों के त्यौहार होली की
हार्दिक शुभकामनाएं
Happy Holi
परम पूज्य उपाध्याय जी महाराज
कथा वाचक श्री धाम वृंदावन, रतनबसई वाले

रंगों के त्यौहार होली की
हार्दिक शुभकामनाएं
महेन्द्र सिंह यादव
पूर्व विधायक, कोलारस, प्रदेश कार्यकारिणि सदस्य
संजय सिंह रघुवंशी
प्रदेश कार्यकारिण सदस्य
शिवकुमार रघुवंशी
कट्टर सिंधिया समर्थक

रंगों के त्यौहार होली की
हार्दिक शुभकामनाएं
भुपेश कटरे
अध्यक्ष, युवा पवार समाज संगठन लांजी, बालाघाट

रंगों के त्यौहार होली की
हार्दिक शुभकामनाएं
Happy Holi
किरन राठौर
ब्यूरो चीफ, औरैया, उत्तर प्रदेश, 7007682405
रूप सिंह
ब्यूरो चीफ, इटावा उत्तर प्रदेश, 6394878992

रंगों के त्यौहार होली की
हार्दिक शुभकामनाएं
Holi
रणवीर सिंह यादव
यातायात थाना प्रभारी, शिवपुरी

ग्राम पंचायत सिरसौदा जनपद गोहद की ओर
से ग्रामवासियों को होली के पर्व की
हार्दिक शुभकामनाएं
Happy Holi
Happy Holi
लोकेन्द्र धाकड़
सरपंच
सुनील शर्मा
सचिव

SKY LINE
Resort &
Resturant
Happy Holi
WEDDINGS
ANNIVERSARY
BIRTHDAY
POOL PARTY
ENGAGEMENT
CORPORATE EVENTS
A/C ROOM
मनोज शिवहरे
संचालक
एड. आर के जोशी
संचालक
ईश्वरी चौकी, बदरवास जिला शिवपुरी, संपर्कः 7999775038, ई-मेल skylineresort.badarwas@gmail.com

सौम्या प्रोपर्टीज

होली के पावन पर्व पर आज ही अपने सपनों का घर बनाने के लिये प्लॉट बुक करें।

- शासकीय कर्मचारीयों के लिये विशेष छूट 50 प्रतिशत राशी देकर रजिस्ट्री
- बेटी के नाम पर बुकिंग करने पर आकर्षण पहार व 10 प्रतिशत की छूट
- छोटे व्यपारी एवं प्राईवेट कम्पनी में जोब करने वाली के लिये बिना ब्याज के फाइनेंस सुविधा

प्लॉट उपलब्ध है

ग्वालियर-मुरैना रोड
ग्वालियर- भिण्ड रोड
मुरैना- झाँसी हाईवे

हमारे यहाँ निर्माण कार्य, नक्शे, फाईनेंस, रजिस्ट्री व नामांत्रण कि सेवा भी प्रदान की जाती है

मो. 9713253992, 6269453268

कार्यालय- 101 जे.एस. प्लाजा, रिजनल पब्लिक स्कूल के पास, सुर्य मदिंर रोड, गोले का मंदिर ग्वालियर **0751-4029189**

सौम्या प्रोपर्टीज

नवरात्री के पावन पर्व पर आज ही अपने सपनों का घर बनाने के लिये प्लॉट बुक करें।

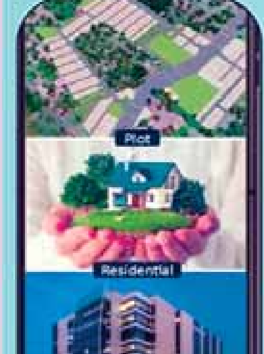

- शासकीय कर्मचारीयों के लिये विशेष छूट 50 प्रतिशत राशी देकर रजिस्ट्री
- बेटी के नाम पर बुकिंग करने पर आकर्षण पहार व 10 प्रतिशत की छूट
- छोटे व्यपारी एवं प्राईवेट कम्पनी में जोब करने वाली के लिये बिना ब्याज के फाइनेंस सुविधा

प्लॉट उपलब्ध है

ग्वालियर-मुरैना रोड
ग्वालियर- भिण्ड रोड
मुरैना- झाँसी हाईवे

हमारे यहाँ निर्माण कार्य, नक्शे, फाईनेंस, रजिस्ट्री व नामांत्रण कि सेवा भी प्रदान की जाती है

मो. 9713253992, 6269453268

कार्यालय- 101 जे.एस. प्लाजा, रिजनल पब्लिक स्कूल के पास, सुर्य मदिंर रोड, गोले का मंदिर ग्वालियर **0751-4029189**